अर्हत् चरण सपर्या

(जिन-देवार्चना)

दिगम्बर जैनाचार्य श्री 108 सौरभसागर जी

मंगलं भगवान् वीरो, मंगलं गौतमोगणी।
मंगलं पुष्पदन्ताद्यो, जैन धर्मोस्तु मंगलम्।।
श्री धरसेनाचार्य देव पुष्पदन्त एवं भूतबलि मुनिवरों को षट्खण्डागम का उपदेश देते हुए।

"अर्हत् चरण सपर्या"

(जिन-देवार्चना)

रचयिता

दिगम्बर जैनाचार्य श्री 108 सौरभसागर जी

कृति : **"अर्हत् चरण सपर्या"**
(जिन-देवार्चना)

शुभाशीष : **पुष्पगिरि प्रणेता परम पूज्य**
गणाचार्य श्री 108 पुष्पदंतसागर जी महाराज

कृतिकार : **परम पूज्य आचार्य श्री 108 सौरभसागर जी महाराज**

संस्करण : द्वितीय, जनवरी 2025 (1000 प्रतियां)

प्रकाशक : सौरभांचल प्रकाशन

सौरभांचल महोत्सव

22 से 28 जनवरी 2025

गन्नौर (हरियाणा) में नील गगन के चंदौवा तले विराजमान सफेद संगमरमर से निर्मित सवा तेरह फुट ऊंची पद्मासन प्रतिमा देवाधिदेव श्री 1008 आदिनाथ भगवान का

भव्य त्रयामृत मस्तकाभिषेक

(मंगलवार, 28 जनवरी 2025)
के शुभ अवसर पर

प्राप्ति स्थल :
1. **श्री दिगम्बर जैन अतिशय क्षेत्र,**
पुष्पगिरि, सोनकच्छ, जिला देवास (म.प्र.)
फोन : 07270-22870
2. **श्री दिगम्बर जैन तीर्थ सौरभाँचल,**
श्री श्रुत स्कन्ध मन्दिर
जी.टी. करनाल रोड, गन्नौर (हरियाणा)
3. **श्री दिगम्बर जैन मंशापूर्ण महावीर क्षेत्र**
जीवन आशा हॉस्पिटल
कावड़ मार्ग, गंगनहर, मुरादनगर (गाजियाबाद)

मूल्य : रु. 70/- (पुनः प्रकाशन हेतु)

मुद्रक : पारस प्रकाशन, दिल्ली
मो.: 9811374961, 9811363613
pkjainparas@gmail.com, kavijain1982@gmail.com

अनुक्रमणिका

"मंगलं पुष्पदन्ताद्यो" एक ऐतिहासिक सत्य	4
मंगलाष्टक	5
लघु अभिषेक पाठ	6
परमेष्ठी वंदन	9
वृहत् शांतिधारा पाठ	10
विनय पाठ	12
मंगल कलश स्थापना	14
पूजा प्रारम्भ	17
समुच्चय पूजन	21
श्री आदिनाथ पूजन	26
शान्तिनाथ, कुन्थुनाथ, अरहनाथ जिन पूजन	31
श्री पार्श्वनाथ पूजन	35
श्री मंशापूर्ण महावीर पूजन	40
श्री नवग्रह जिनदेव पूजन	46
श्री लघु चौबीसी पूजन	54
त्रिकाल चौबीसी प्रत्येक अर्घ	64
श्री सम्मेद शिखर पूजन	72
माँ जिनवाणी पूजन	77
तीन कम नौ करोड़ महामुनिराज पूजन	82
श्री सिद्ध परमेष्ठी पूजन	86
पुष्पगिरी तीर्थ पूजन	90
गणाचार्य पुष्पदंतसागर जी पूजन	95
आचार्य श्री 108 सौरभ सागरजी पूजन	102
अर्घ्यावली	110
समुच्चय महार्घ्य	112
श्री ऋषिमण्डल स्तोत्र	115
श्री मंशापूर्ण महावीर स्तुति	118
श्री भक्तामर स्तोत्र (हिन्दी)	120
श्री कल्याण मन्दिर स्तोत्र (हिन्दी)	126
कुछ विशेष जाप	132
जीवन परिचय	133

"मंगलं पुष्पदन्ताद्यो" एक ऐतिहासिक सत्य

मंगलं भगवान् वीरो, मंगलं गौतमो गणी।
मंगलं पुष्पदन्ताद्यो, जैनधर्मोस्तु मंगलम्॥

जैन धर्म में देव शास्त्र गुरु के प्रति श्रद्धा ही सम्यग्दर्शन में कारण है। चौबीस तीर्थंकर एवं 1452 गणधर तथा द्वादशांगमय श्रुतज्ञान होने के उपरांत भी वर्तमान काल में तीर्थंकर महावीर स्वामी का शासन काल होने के कारण मंगल स्वरूप वे ही हैं इसलिए **"मंगलं भगवान् वीरो"** कहकर **"दीपावली पर्व"** को महत्व दिया जाता है तथा उनके प्रथम गणधर गौतम स्वामी की दीक्षा की स्मृति को **"मंगलं गौतमो गणी"** कहकर **"गुरु पूर्णिमा"** के रूप में महत्व दिया जाता है तथा 633 वर्ष बीतने के उपरांत श्रुत विच्छेद न हो जाये इसलिए मंत्र ज्ञाता धरसेनाचार्य ने अपना अंग श्रुतज्ञान आचार्य पुष्पदंत स्वामी को समर्पित किया और कहा भी है–

जयउ धरसेण णाहो जेण महाकम्म पयडि पाहुड सेलो।
बुद्धि सिरेणुद्धरियो समप्पियो पुप्फदंतस्स॥

(ध.पु.भा.-2)

अर्थात् वे धरसेन स्वामी जयवंत हों, जिन्होंने **महाकर्मप्रकृति** प्राभृत रूपी पर्वत को अपनी बुद्धिरूपी मस्तक पर धारण करके **आचार्य पुष्पदंत** को समर्पित किया।

उनसे शिक्षित शिष्य **आचार्य पुष्पदंत** ने **सर्वप्रथम णमोकार मंत्र** को निवद्ध मंगल कर षट्खण्डागम ग्रन्थ लिखना प्रारंभ किया एवं गणधर वलय मंत्र के साथ स्वामी भूतबलि आचार्य ने ग्रन्थ पूर्ण किया। इस उपलक्ष्य में **"श्रुतपंचमी"** पर्व मनाया जाता है यही ऐतिहासिक सत्य है इसलिए शुद्ध ग्रन्थ के प्रथम लेखक के रूप में **ऋषि सभा के अधिपति आचार्य पुष्पदंत स्वामी** का स्मरण करते हुए **"मंगलं पुष्पदन्ताद्यो"** कहा जाता है।

ये तीनों ही जैनधर्म के उत्कृष्ट मंगल स्वरूप हैं। इसलिए धवलाकार वीरसेन स्वामी ने कहा–

"तदो मूलतंत कत्ता वद्ढ़माण भडारयो, अणुतंत कत्ता गौदम स्वामी उवतंत कत्तारा भूदबली पुप्फदंतादयो वीयराय दोष मोहा मुणिवरा"

(ध.पु.भा.-1, पृ:73)

अर्थात् मूलग्रंथ कर्ता वर्द्धमान भट्टारक अणुतंत कर्ता गौतम स्वामी, उपतंत ग्रंथ कर्ता भूतबलि पुष्पदंतादि, वीतराग दोष मोह रहित मुनिवर हैं।

इसे ही शुद्ध दिगम्बर आगम प्रमाणानुसार निम्न श्लोक के रूप में कहा जाता है–

मंगलं भगवान् वीरो, मंगलं गौतमो गणी।
मंगलं पुष्पदन्ताद्यो, जैनधर्मोस्तु मंगलम्॥

मंगलाष्टक

(शार्दूलविक्रीडितम् छन्द)

मंगलं भगवान् वीरो, मंगलं गौतमो गणी।
मंगलं पुष्पदन्ताद्यो, जैन धर्मोस्तु मंगलम्॥

अर्हन्तो भगवन्त इन्द्रमहिताः, सिद्धाश्च सिद्धीश्वराः,
आचार्याः जिनशासनोन्नतिकराः, पूज्या उपाध्यायकाः।
श्रीसिद्धान्त सुपाठकाः मुनिवराः, रत्नत्रयाराधकाः,
पञ्चैते परमेष्ठिनः प्रतिदिनं, कुर्वन्तु ते मंगलम् ॥

श्रीमन्नम्र सुरासुरेन्द्र मुकुट, प्रद्योत रत्नप्रभा,
भास्वत्पाद नखेन्दवः प्रवचनाम्भोधीन्दवः स्थायिनः।
ये सर्वे जिन सिद्ध सूर्यनुगतास्ते पाठकाः साधवः,
स्तुत्या योगीजनैश्च पञ्चगुरवः कुर्वन्तु ते मंगलम् ॥1॥

सम्यग्दर्शन-बोध-वृत्तममलं, रत्नत्रयं पावनं,
मुक्तिश्रीनगराधिनाथ जिनपत्युक्तोऽपवर्गप्रदः।
धर्म सूक्तिसुधा च चैत्यमखिलं, चैत्यालयं श्र्यालयं,
प्रोक्तं च त्रिविधं चतुर्विधममी, कुर्वन्तु ते मंगलम्॥2॥

नाभेयादि जिनाधिपास्त्रिभुवन ख्याताश्चतुर्विंशतिः,
श्रीमन्तो भरतेश्वर प्रभृतयो ये चक्रिणो द्वादश।
ये विष्णु प्रतिविष्णु लांगलधराः सप्तोत्तरा विंशतिः,
त्रैकाल्ये प्रतितास्त्रिषष्टिपुरुषाः कुर्वन्तु ते मंगलम्॥3॥

ये सर्वौषधिऋद्धयः सुतपसां, वृद्धिंगताः पञ्च ये,
ये चाष्टांग महानिमित्त कुशला, येऽष्टौ विधाश्चारणाः।
पञ्चज्ञानधरास्त्रयोऽपि बलिनो, ये बुद्धि ऋद्धीश्वराः,
सप्तैते सकलार्चिता गणभृतः, कुर्वन्तु ते मंगलम् ॥4॥

ज्योतिर्व्यन्तर-भावनामरगृहे, मेरौ कुलाद्रौ स्थिताः,
जम्बू-शाल्मलि-चैत्य-शाखिषु, तथा वक्षार रूप्याद्रिषु।
इष्वाकारगिरौ च कुण्डलनगे, द्वीपे च नन्दीश्वरे,
शैले ये मनुजोत्तरे जिनगृहाः, कुर्वन्तु ते मंगलम्॥5॥

कैलाशे वृषभस्य निर्वृतिमही, वीरस्य पावापुरे,
चम्पायां वसुपूज्य सज्जिजिनपतेः, सम्मेदशैलेऽर्हताम्।
शेषाणामपि चोर्जयन्तशिखरे, नेमीश्वरस्यार्हतो,
निर्वाणावनयः प्रसिद्धविभवाः, कुर्वन्तु ते मंगलम् ॥6॥

यो गर्भावतरोत्सवो भगवतां, जन्माभिषेकोत्सवो,
यो जातः परिनिष्क्रमेण विभवो, यः केवलज्ञानभाक्।
यः कैवल्यपुरप्रवेशमहिमा, संपादितः स्वर्गिभिः,
कल्याणानि च तानि पञ्च सततं, कुर्वन्तु ते मंगलम् ॥7॥

जायन्ते जिन चक्रवर्ति बलभद्र, भोगीन्द्र कृष्णादयो,
धर्मा देव दिंग नांगविल सच्छश्वद्यशचन्दनाः।
तद्धीना नरकादि योनिषु नरा, दुःखं सहन्ते ध्रुवम्,
स स्वर्गात् सुख रामणीयकपदं कुर्वन्तु ते मंगलम् ॥8॥

सर्पो हारलता भवत्यसिलता, सत्पुष्पदामायते,
सम्पद्येत रसायनं विषमपि, प्रीतिं विधत्ते रिपुः।
देवाः यान्ति वशं प्रसन्नमनसः किं वा बहु ब्रूमहे,
धर्मादेव नभोऽपि वर्षति नगैः, कुर्वन्तु ते मंगलम्॥9॥

(माहात्म्यः उपसंहार)

इत्थं श्रीजिन-मंगलाष्टकमिदं, सौभाग्य सम्पत्प्रदं,
कल्याणेषु महोत्सवेषु सुधियस्तीर्थंकराणामुषः।
ये शृण्वन्ति पठन्ति तैश्च सुजनैर्, धर्मार्थ-कामान्विता,
लक्ष्मीराश्रयते व्यपाय रहिता, निर्वाण-लक्ष्मीरपि ॥10॥

लघु अभिषेक पाठ

श्रीमज्जिनेन्द्रमभिवन्द्य जगत्त्रयेशं
स्याद्वादनायकमनन्तचतुष्टयार्हम्।
श्रीमूलसंघसुदृशां सुकृतैकहेतुर्-
जैनेन्द्रयज्ञविधिरेष मयाऽभ्यधायि॥1॥

ॐ ह्रीं श्रीं भूः स्वाहा स्नपनप्रस्तावनाय पुष्पांजलिः क्षिपेत्

तिलक लगाने का श्लोक

सौगन्ध्यसङ्गत-मधुव्रतझङ्कृतेन?
संवर्ण्यमानमिव गन्धमनिन्द्यमादौ।
आरोपयामि विबुधेश्वरवृन्दवन्द्यं-
पादारविन्दमभिवन्द्य जिनोत्तमानाम् ॥2॥

ॐ ह्रीं परम-पवित्राय नमः चन्दनानुलेपनं करोमि स्वाहा।

(नव स्थानों पर चन्दन लगाएं : ललाट, कंठ, दो कान, दो भुजा, दो कलाई एवं हृदय)

पीठ पर श्रीकार वर्ण लेखन/थाली पर श्रीकार लेखन करें

श्रीशारदासुमुखनिर्गतबीजवर्णम्,
श्री मङ्गलीकवरसर्वजनस्य नित्यम्।
श्रीमत्स्वयं क्षयति तस्य विनाशविघ्नं,
श्रीकारवर्णलिखितं जिनभद्रपीठे ॥3॥

ॐ ह्रीं श्रीं अर्हं श्रीकारलेखन करोमि स्वाहा।

कलश स्थापन और कलशों में जलधारा देना

सत्पल्लवार्चितमुखान् कलधौतरूप्य,
ताम्रारकूटघटितान् पयसा सुपूर्णान्।
संवाह्यतामिव गतांश्चतुरः समुद्रान्,
संस्थापयमि कलशान् जिनवेदिकान्ते ॥4॥

ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूँ ह्रौं ह्रः नमोऽर्हते भगवते श्रीमत्पद्म-महापद्म-तिगिञ्छ-केसरि-पुण्डरीक-महापुण्डरीक-गंगा-सिन्धु-रोहिद्रोहितास्या हरिद्धरिकान्ता सीतासीतोदा-नारीनकान्ता सुवर्णरूप्यकूला-रक्तारक्तोदाः क्षीराम्भोनिधि-जलं-सुवर्णघट-प्रक्षिप्तं नवरत्नगन्धाक्षत-पुष्पार्चिता-मोदकं पवित्रं कुरु कुरु झं झं झौं झौं वं वं मं मं हं हं सं सं तं तं पं पं द्रां द्रां द्रीं द्रीं हं सः स्वाहा इति मन्त्रेण प्रसिञ्च्य जलपवित्रीकरणम् करोमि।

बिम्ब स्थापना करें

यः पांडुकामलशिलागतमादिदेव-
भस्नापयन् सुरवरा सुरशैलमूर्ध्नि।
कल्याणमीप्सुरहमक्षतमोय पुष्पैः,
सम्भावयामि पुर एव तदीयबिम्बम ॥5॥

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं अर्हं श्री वर्णे प्रतिमा स्थापनं करोमि स्वाहा।

अभिषेक के लिए प्रतिमा जी को अर्घ चढ़ाना

उदकचन्दनतंदुलपुष्पकैश्चरुसुदीप सुधूप फलार्ध कैः।
धवलमंगलगानरवाकुले, जिनगृहे जिननाथमहं यजे ॥6॥

ॐ ह्रीं परमब्रह्मणेऽनन्तानन्तज्ञानशक्तये अष्टादशदोषरहिताय षट्चत्वारिंशद् सहिताय अर्हत्परमेष्ठिने अनर्घ्यपद प्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

त्रयामृत अभिषेक

''जलाभिषेक''

दूरावनम्र सुरनाथ किरीट कोटी,
संलग्नरत्न किरणच्छविधूसराङ्घ्रिम्।
प्रस्वेदतापमलमुम्तमपि प्रकृष्टैर्-
भक्त्या जलैर्जिनपतिं बहुधाभिसिञ्चे॥

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं अर्हं वं मं हं सं तं पं वं वं मं मं हं हं सं सं तं तं पं पं झं झं क्षीं क्षीं क्ष्वीं क्ष्वीं द्रां द्रां द्रीं द्रीं द्रावय द्रावय नमोऽर्हते भगवते श्री-मते पवित्रतर जलेन जिन अभिषेचयामि स्वाहा।

''दुग्धाभिषेक''

सम्पूर्ण शारद-शशांकमरीचिजाल-
स्यन्दैरिवात्मयशसामिव सुप्रताहैः॥
क्षीरैर्जिनाः शुचितरैरभिषिच्यमानाः।
सम्पादयन्तु मम चित्तसमीहितानि॥

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं अर्हं वं मं हं सं तं पं वं वं मं मं हं हं सं सं तं तं पं पं झं झं क्षीं क्षीं क्ष्वीं क्ष्वीं द्रां द्रां द्रीं द्रीं द्रावय द्रावय ॐ नमोऽर्हते भगवते श्रीमते दुग्धाभिषेचयामि स्वाहा।।

''केसराभिषेक''

द्रव्यैरनल्पधनसार चतुः समाढयै,
रामोदवासितसमस्तदिगंतरालैः।
मिश्रीकृतेन पयसा जिनपुंगवानां
त्रिलोक्यपावनमहं स्नपनं करोमि॥

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं अर्हं वं मं हं सं तं पं वं वं मं मं हं हं सं सं तं तं पं पं झं झं क्षीं क्षीं क्ष्वीं क्ष्वीं द्रां द्रां द्रीं द्रीं द्रावय द्रावय ॐ नमोऽर्हते भगवते श्रीमते केसराभिषेचयामि स्वाहा।।

(चार कलशों से अभिषेक)

इष्टैर्मनोरथ शतैरिव भव्य पुंसां,
पूर्णै सुवर्ण कलशै निखिलै, र्वसानैः।
संसार-सागर-विलंघनहेतु सेतुः,
माप्लावये त्रिभुवनैक पति जिनेन्द्रम्॥

ॐ ह्रीं श्रीमन्तं भगवन्तं कृपालवन्तं वृषभादि-महावीर-पर्यन्त-चतुर्विंशति तीर्थंकर-परमदेवं आद्यानां आद्ये जम्बूद्वीपे भरतक्षेत्रे आर्यखण्डे भारतदेशे... प्रान्त.....नगरे-मासानामुत्तमे.....मासे.....पक्षे-शुभ दिने आर्यिका श्रावक श्राविकानां सकल-कर्म-क्षयार्थ पवित्रतर जलेन जिनं अभिषेचयामि नमः।

अर्घ

उदक चंदन तंदुल पुष्पकैश्चरु सुदीप सुधूप फलार्घ्यकैः।
धवल मंगल गान रवाकुले जिनगृहे अभिषेकमहं यजे॥

ॐ ह्रीं श्री वृषभादि वर्धमानपर्यंत चतुर्विंशति तीर्थंकरेभ्यो अभिषेकाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा॥

परमेष्ठी वंदन

ओम णमो अरिहताणं जाप करो भव दुःखहरणं मंत्र महा सुख दाता है जो जपता सुख पाता है। जाप करो नित अघ हरणं णमो-णमो अरिहंताणं।। है अनादि यह मंत्रेश्वर अरुँ द्वादशांग का ईश्वर है। इससे निकसी है जिनवाणी दिव्य दिवाकर सा दानी प्राणेश्वर यह भव भय भंजन नमन करो अरिहंताणं॥1॥ओम्.....। अलख ईश्वर नित्य निरंजन निराकार सर्वेश्वर है। आठ गुणों को प्राप्त किये देवाधिदेव परमेश्वर है।। मृत्युञ्जयी हो सुन लो गुंजन णमो-णमो श्री सिद्धाणं॥2॥ ओम्.....। शान्त सरल मुद्रा के धारी निर्विकार शिशुवत् अविकारी। गुरु ज्ञानी आचार्य हैं प्यारे दीक्षा देकर सब तारे।। वीतराग मुद्रा अघ हरणं नमन करो आइरियाणं॥3॥ ओम्.....। ज्ञान विकास अज्ञान ह्रास ज्ञान दाता ज्ञानेश्वर है। परम पवित्र पावन मन जिनका वे ही प्रिय परमेश्वर हैं।। द्वादशांग जिनका मन रंजन णमो-णमो उवज्झायाणं॥4॥ ओम्.....। संत सनातन मन मन्दिर में सदा काल को ध्यान करे। काम क्रोध को जीत रहे जो उनका मंगल गान करे। परम प्रकाशी मम तम हरण नमन करो सव्वसाहूणं॥5॥ ओम्.....।

वृहत् शान्तिधारा पाठ

ॐ नमोऽर्हते भगवते श्रीमते श्रीमत्पार्श्वतीर्थंकराय श्रीमद्-रत्नत्रयरूपाय दिव्यतेजोमूर्त्तये प्रभामण्डलमण्डिताय द्वादशगणसहिताय, अनन्तचतुष्टयसहिताय, समवसरण-केवलज्ञान-लक्ष्मीशोभिताय, अष्टादश-दोषरहिताय, षट्-चत्वारिंशद्-गुणसंयुक्ताय, परमेष्ठि-पवित्राय, सम्यग्ज्ञानाय स्वयम्भुवे सिद्धाय बुद्धाय परमात्मने परमसुखाय त्रैलोक्यमहिताय, अनंत-संसार- चक्रप्रमर्दनाय अनन्तज्ञान-दर्शन-वीर्य-सुखास्पदाय त्रैलोक्यवशंकराय, सत्यज्ञानाय सत्यब्रह्मणे उपसर्गविनाशनाय घातिकर्मक्षयंकराय अजराय अभवाय अस्माकं (अमुक राशिनामधेयानां) व्याधिं घ्नन्तु। श्री जिनाभिषेकपूजन प्रसादात् अस्माकं सेवकानां सर्वदोष, रोग, शोक, भय, पीड़ा, विनाशनं भवतु।

ॐ नमोऽर्हते भगवते प्रक्षीणाशेष, दोष, कल्मषाय, दिव्य-तेजोमूर्तये श्रीशान्तिनाथाय शान्तिकराय सर्वविघ्न, प्रणाशनाय सर्वरोगापमृत्यु-विनाशनाय सर्वपरकृत-क्षुद्रोपद्रव-विनाशनाय सर्वारिष्ट, शान्ति, कराय ऊँ ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रौं ह्रः अ सि आ उ सा नमः मम सर्वविघ्न-शान्तिं कुरु कुरु तुष्टिं पुष्टिं कुरु-कुरु स्वाहा ।

मम कामं शान्तिं-शान्तिं । रतिकामं शान्तिं-शान्तिं ।
बलिकामं शान्तिं-शान्तिं । क्रोधं-पापं-वैरं च शान्तिं-शान्तिं ।
अग्निवायुभ्यं शान्तिं-शान्तिं । सर्वशत्रु-विघ्नं शान्तिं-शान्तिं ।
सर्वोपसर्गं शान्तिं-शान्तिं । सर्वविघ्नं शान्तिं-शान्तिं ।
सर्वराज्य दुष्टभयं शान्तिं-शान्तिं । सर्वचौर दुष्टभयं शान्तिं-शान्तिं ।
सर्व-सर्प-वृश्चिक-सिंहादिभयं शान्तिं-शान्तिं ।
सर्वग्रहभयं शान्तिं-शान्तिं । सर्वदोषं व्याधिं डामरं च शान्तिं-शान्तिं ।
सर्वपरमंत्रं शान्तिं-शान्तिं । सर्वात्मघातं परघातं च शान्तिं-शान्तिं ।
सर्वशूल कुक्षि अक्षि शिरो ज्वररोगं शान्तिं-शान्तिं । सर्वमारिं शान्तिं-शान्तिं ।
सर्वगजाश्व गौ-महिष-अजमारिं शान्तिं-शान्तिं ।
सर्वसस्य-धान्य-वृक्ष-लता-गुल्म-पत्र-पुष्प-फलमारिं शान्तिं-शान्तिं ।
सर्वराष्ट्रमारिं शान्तिं-शान्तिं । सर्वक्रूर-वेताल डाकिनी-भयानि शान्तिं-शान्तिं ।
सर्वापस्मारिं शान्तिं-शान्तिं । अस्माकं सर्व अशुभकर्म-जनित-दुःखानि शान्तिं-शान्तिं।
दुष्टजनकृतान्-मंत्र-तंत्र-दृष्टि-मुष्टि-छल-छिद्रदोषान् शान्तिं-शान्तिं ।
सर्वदुष्ट-देव-दानव-वीर-नर-नाहर-सिंह-योगिनी-कृत-दोषान् शान्तिं-शान्तिं ।
सर्व-अष्टकुली-नागजनित-विषभयानि शान्तिं-शान्तिं ।
सर्वस्थावर जंगम वृश्चिक सर्पादिकृत-दोषान् शान्तिं-शान्तिं।
सर्वसिंहाष्टा-पदादि कृतदोषान शान्तिं-शान्तिं ।

परशत्रुकृत-मारणोच्चाटन-विद्वेषण-मोहन-वशीकरणादि कृतदोषान् शान्तिं-शान्तिं। सर्व कर्माष्टकं शान्तिं-शान्तिं। ॐ ह्रीं अस्मभ्यं चक्र-विक्रम-सत्त्व-तेजो-बल-शौर्य-वीर्य-शान्तीः पूरय पूरय। सर्वजीवानंदनं कुरु कुरु जनानंदनं कुरु कुरु भव्यानंदनं कुरु कुरु सर्व गोकुलानंदनं कुरु कुरु। सर्वराजानंदनं कुरु कुरु । सर्वग्राम-नगर-खेट-कर्वट-मटंब-पतन-द्रोणमुख-संवाहनानंदनं कुरु कुरु । सर्वानंदनं कुरु कुरु स्वाहा ।

यत्सुखं त्रिषु लोकेषु, व्याधि-व्यसन-वर्जितम्।
अभयं क्षेममारोग्यं, स्वस्तिरस्तु विधीयते।।

श्रीशान्तिरस्तु । शिवमस्तु । जयोस्तु । नित्यमारोग्यमस्तु । सर्व जीव कल्याण मस्तु। दीर्घायु रस्तु। शुभ अस्तु। सुकीर्ति रस्तु। धन धान्य समृद्धि रस्तु। सर्व रोग शोक पीड़ा विनाशन भवतु। सम्यक दर्शन ज्ञान चारित्र वृद्धि रस्तु। अस्माकं तुष्टिरस्तु । पुष्टिरस्तु । समृद्धिरस्तु । कल्याणमस्तु । सुखमस्तु । अभिवृद्धिरस्तु । दीर्घायुरस्तु। कुलगोत्र धनानि सदा सन्तु । सद्धर्म श्रीबलायुरारोग्यै- श्वर्याभिवृद्धिरस्तु।

वृषभ अजित संभव अभिनन्दन, सुमति पद्म सुपार्श्व जिनराय।
चन्द्र पुहुप शीतल श्रेयांस जिन, वासुपूज पूजित सुरराय।।
विमल अनंत धरम जस उज्ज्वल, शांति कुंथु अर मल्लि मनाय।
मुनिसुब्रत नमि नेमि पार्श्व प्रभु, वर्द्धमान पद शीश झुकायें।।

ॐ ह्रीं श्रीं *वृषभादि वीरान्तरेभ्यः शान्तये शान्तिधारा स्वाहा।*

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं अर्हं अ सि आ उ सा अनाहतविद्यायै णमो अरहंताणं *इति* ह्रौं सर्व शान्तिं कुरु कुरु स्वाहा।

ॐ ह्रीं श्रीं मंशापूर्ण महावीर जिनेंद्राय नमः रक्ष-रक्ष ह्रूं फट् स्वाहा।

ॐ ह्रीं णमो भगवदो वड्ढमाणस्स रिसहस्स जस्स चक्कं जलंतं गच्छइ आयासं पायालं लोयाणं भूयाणं जूए वा विवादे वा रणंगणे वा थंभणे वा मोहणे वा सव्वजीवसत्ताणं अपराजिदो भवदु मे रक्ख रक्ख स्वाहा वर्धमान-मन्त्रेण सर्वरक्षा भवतु स्वाहा।

सम्पूजकानां प्रतिपालकानां, यतीन्द्र सामान्य तपोधनानाम्।
देशस्य राष्ट्रस्य पुरस्य राज्ञः, करोतु शान्तिं भगवान् जिनेन्द्रः।।

अर्घ

उदक चंदन तंदुल पुष्पकैश्चरु सुदीप सुधूप फलार्घ्यकैः।
धवल मंगल गान रवाकुले जिनगृहे अभिषेकमहं यजे।।

ॐ ह्रीं श्री वृषभादि वर्धमानपर्यंत चतुर्विंशति तीर्थंकरेभ्यो महाशांतिधाराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

विनय पाठ

इह विधि ठाडो होयके, प्रथम पढै जो पाठ।
धन्य जिनेश्वर देव तुम, नाशे कर्म जु आठ॥1॥
अनंत चतुष्टय के धनी, तुमही हो सिरताज।
मुक्ति-वधू के कंत तुम, तीन भुवन के राज॥2॥
तिहुँ जग की पीड़ा-हरन, भवदधि शोषणहार।
ज्ञायक हो तुम विश्व के, शिवसुख के करतार॥3॥
हरता अघ अंधियार के, करता धर्म प्रकाश।
थिरता पद दातार हो, धरता निजगुण रास॥4॥
धर्मामृत उर जलधि सों, ज्ञानभानु तुम रूप।
तुमरे चरण-सरोज को, नावत तिहुँ जग भूप॥5॥
मैं वंदौ जिनदेव को, कर अति निर्मल भाव।
कर्मबंध के छेदने, और न कछू उपाय॥6॥
भविजन को भवकूप तैं, तुम ही काढ़नहार।
दीनदयाल अनाथपति, आतम गुण भंडार॥7॥
चिदानंद निर्मल कियो, धोय कर्मरज मैल।
सरल करी या जगत में, भविजन को शिवगैल॥8॥
तुम पदपंकज पूजतैं, विघ्न रोग टर जाय।
शत्रु मित्रता को धरै, विष निरविषता थाय॥9॥
चक्री खगधर इंद्रपद, मिलै आपतैं आप।
अनुक्रम ते शिवपद लहैं, नेम सकल हनि आप॥10॥
तुम बिन मैं व्याकुल भयो, जैसे जल बिन मीन।
जन्म जरा मेरी हरो, करो मोहि स्वाधीन॥11॥
पतित बहुत पावन किये, गिनती कौन करेव।
अंजन से तारे प्रभु, जय जय जय जिनदेव॥12॥
थकी नाव भवदधिविषै, तुम प्रभु पार करेय।
खेवटिया तुम हो प्रभु, जय जय जय जिनदेव॥13॥
रागसहित जग में रुल्यो, मिले सरागी देव।
वीतराग भेट्यो अबै, मेटो राग कुटेव॥14॥

कित निगोद कित नारकी, कित तिर्यञ्च अज्ञान।
आज धन्य मानुष भयो, पायो जिनवर थान॥15॥
तुमको पूजैं सुरपती, अहिपति नरपति देव।
धन्य भाग्य मेरो भयो, करन लग्यो तुम सेव॥16॥
अशरण के तुम शरण हो, निराधार आधार।
मैं डूबत भवसिन्धु में, खेव लगाओ पार॥17॥
इन्द्रादिक गणपति थके, कर विनती भगवान।
अपनो विरद निहारिकैं, कीजे आप समान॥18॥
तुमरी नेक सुदृष्टि तैं, जग उतरत है पार।
हा हा डूबो जात हो, नेक निहार निकार॥19॥
जो मैं कहहूँ औरसों, तो न मिटै उर भार।
मेरी तो तोसों बनी, तातैं करौं पुकार॥20॥
वन्दों पाँचों परम गुरु, सुरगुरु वन्दत जास।
विघनहरन मंगलकरन, पूरन परम प्रकाश॥21॥
चौबीसों जिनपद नमों, नमों शारदा माय।
शिवमगसाधक साधु नमि, रच्यो पाठसुखदाय॥22॥
मंगल मूर्ति परमपद, पंचधरो नित ध्यान।
हरो अमंगल विश्व का, मंगलमय भगवान्॥23।

मंगल जिनवर पद नमों, मंगल अर्हंतदेव।
मंगलकारी सिद्ध पद, सो वन्दौं स्वयमेव॥24।

मंगल आचारज मुनि मंगल गुरु उवझाय।
सर्व साधु मंगल करो, वन्दौं मन वच काय॥25॥

मंगल सरस्वती मात का, मंगल जिनवर धर्म।
मंगल मय मंगल करो, हरो असाता कर्म॥26॥

या विधि मंगल से सदा, जग में मंगल होत।
मंगल 'नाथूराम' यह भवसागर दृढ़ पोत॥27॥

पुष्पांजलिं क्षिपेत् (नौ बार णमोकार मंत्र पढ़ें)

मंगल कलश स्थापना

मंगलं भगवान् वीरो, मंगलं गौतमो गणी।
मंगलं पुष्पदंताद्यो, जैनधर्मोस्तु मंगलम्।।
ॐ जय! जय!! जय!!! नमोऽस्तु! नमोऽस्तु!! नमोऽस्तु!!!
णमो अरिहंताणं, णमो सिद्धाणं, णमो आइरियाणं,
णमो उवज्झायाणं, णमो लोए सव्वसाहूणं।
ॐ ह्रीं अनादिमूलमंत्रेभ्यो नमः।
(पुष्पांजलिं क्षेपण करें)

1. **सर्वप्रथम शुद्ध जल से स्वयं को एवं हाथों को शुद्ध करें–**
   ॐ ह्रीं असुजर सुजर भव स्वाहा।
2. **तत्पश्चात् जल से भूमि शुद्धि करें–**
   ॐ ह्रीं भूः शुद्धयतु स्वाहा।
3. **सकलीकरण करें–**
   ॐ ह्रां णमों अरिहंताणं मम शीर्ष रक्ष-रक्ष ह्रूँ फट् स्वाहा।
   ॐ ह्रीं णमों सिद्धाणं मम मस्तक रक्ष-रक्ष ह्रूँ फट् स्वाहा।
   ॐ ह्रूं णमों आयरियाणं मम हृदय रक्ष-रक्ष ह्रूँ फट् स्वाहा।
   ॐ ह्रौं णमों उवज्झायाणं मम नाभि रक्ष-रक्ष ह्रूँ फट् स्वाहा।
   ॐ ह्रः णमों लोए सव्वसाहूणं मम पादौ रक्ष-रक्ष ह्रूँ फट् स्वाहा।
   ॐ नमोऽर्हते सर्व रक्ष-रक्ष ह्रूँ फट् स्वाहा।
4. **अक्षत् चावल लेकर जमीन पर (जहाँ पर कलश स्थापित करना हो वहाँ) स्वास्तिक बनावें।**
   ॐ ह्रीं परम ब्रह्मणे नमो नमः स्वास्ति-2 जीव-2 नन्द-2 वर्द्धस्य-2 विजयस्व-2 अनुशाधि-2, पुनीहि-2 पुण्याहं-2 मांगल्यं मांगल्यं पुष्पाञ्जलि। **(पुष्प क्षेपण करें)**
5. ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूँ ह्रौं ह्रः नमो अर्हते श्रीमते पवित्रतर जलेन मंगल कलशं स्थापितं करोमि स्वाहा। **(यह मंत्र पढ़कर कलश स्थापित करें।)** अपनी जाति, गौत्र, दादा, पिताजी, माताजी, स्वयं, पत्नी, बच्चों का नाम तथा सम्वत्, माह, पक्ष, तिथि, वार, बोलकर कलश स्थापित करें कलश में 5 हल्दी, 5 सुपाड़ी, पीली सरसों, सबा रुपया, धनिया आदि मांगलिक वस्तुएं डाले।
6. ॐ ह्रीं आँ क्रौं अत्र स्थाने विराजित क्षेत्रपाल देवाय आगच्छ-2 तिष्ठ-2 ठः ठः ठः स्थापना इदं अर्घं समर्पयामि। **(नैवेद्य पुष्प आदि अर्घ चढ़ायें)**

7. ॐ ह्रीं आँ क्रौं अत्र स्थाने विराजित सर्व वास्तु देवा आगच्छ-2 तिष्ठ-2 ठः ठः ठः स्थापना इदं अर्घं समर्पयामि। **(अर्घं समर्पण करें)**
8. ॐ ह्रीं आँ क्रौं वायु कुमार देवाय अत्र स्थाने वायु शुद्धि कुरू-कुरू ह्रूँ फट् स्वाहा। **(हाथों से हवा करें अर्घ समर्पयामि)**
9. ॐ ह्रीं आँ क्रौं मेघ कुमार देवाय अत्र स्थाने भूमिं शुद्धि कुरू-कुरू अँ हँ सँ वँ क्षँ ठँ क्षः फट् स्वाहा **(अर्घं समर्पयामि)**
10. ॐ ह्रीं आँ क्रौं अग्नि कुमार देवाय भूमि ज्वलय-2 फट् स्वाहा। **(कपूर जलावें) (अर्घं समर्पयामि)**
11. ॐ ह्रीं आँ क्रौं षष्टिसहस्त्र संख्येभ्यो नागकुमार देवाय जलाञजलि स्वाहा। **(जलं अर्घं समर्पयामि)**
12. ॐ ह्रीं आँ क्रौं इन्द्र, आग्ने, यम, नैऋत्य, वरूण, पवन, कुबेर, ईशान, सोम, घरणेन्द्र दिग्पाल देवाय आगच्छ-2 तिष्ठ-2 ठः ठः स्वाहा। **(अर्घं समर्पयामि)**
13. ॐ ह्रीं आँ क्रौं पंचदश तिथि देवता आगच्छ-2 तिष्ठ-2 ठः ठः स्वाहा। **(अर्घं समर्पयामि)**
14. ॐ ह्रीं आँ क्रौं आदित्य चन्द्र-मंगल बुध-गुरू शुक्र-शनि राहु-केतु नवग्रह देवाय आगच्छ-2 तिष्ठ-2 ठः ठः स्वाहा। **(अर्घं समर्पयामि)**
15. ॐ ह्रीं नमोऽर्हदभ्यो पंच परमेष्ठिभ्यो: नमः। **(अर्घं)**
16. ॐ ह्रीं श्री वृषभादि वीरान्त चतुर्वीस तीर्थंकरेभ्यो: नमः। **(अर्घं)**
17. ॐ ह्रीं वृषभसेनादि गौतमान्त गणधरेभ्यो: नमः। **(अर्घं)**
18. ॐ ह्रीं मम कुल गुरूवे नमः। **(अर्घं समर्पयामि)**
19. ॐ ह्रीं आँ क्रौं गौमुखादि चतुर्विंशति यक्षादि देवाय अर्घं समर्पयामि।
20. ॐ ह्रीं आँ क्रौं चक्रेश्वरी ज्वालामालिनी पद्मावति आदि चतुर्विंशति यक्षी देवाय नमः। **(अर्घं समर्पयामि)**
21. ॐ ह्रीं श्रीं ह्रीं धृति कीर्ति बुद्धि शान्ति पुष्टि लक्ष्मी देवीभ्यो नमः। **(अर्घं समर्पयामि)**
22. मम कुल गृह देवो जिनेश्वरो तीर्थंकरो गधधर गुरूओं, मम गुरू भक्ति प्रसादात् प्रसन्नो भवतु मम कुल (जाति) गोत्र का नाम स्मरण करें। मम् धन धान्य पुत्र पौत्रादिक सौख्यं शांतिं पुष्टिं आरोग्यं अक्षीणं भवत् स्वाहा।
23. कलश के सामने दीप धूप कर इष्ट देव की स्तुति करें। अर्घ चढ़ाकर पुनः क्षमा याचना कर विसर्जन करें।।

अर्घ-मंशापूर्ण महावीर स्वामी

श्रद्धा का जल कर में लेकर भक्ति का चन्दन लाया
अक्षत कुसुम चरूवर पावन दीप धूप वन्दन भाया
सिद्ध शिला फल चाह लिये मैं अष्ट द्रव्य चढ़ाऊँगा
श्री मंशापूरण महावीर की पूजा कर सुख पाऊँगा

ॐ ह्रीं श्रीमंशापूर्णमहावीरजिनेन्द्राय अनर्घ्य-पद-प्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

गणाचार्य श्री पुष्पदंत सागर जी का अर्घ्य

अरमानों की थाली जोयी, नयनों में जल भर लाया।
सुनहिल भावों की केशर ले, शब्द पुष्प तन्दुल लाया॥
तन नैवेद्य बना मन दीपक, मद यौवन की धूप बना।
तव पद में अर्पित सिर फल, पूजन का यह अर्घ बना।

दोहा

तन मन धन अर्पण किया, रहा न कुछ भी शेष।
अष्ट द्रव्य से पूज कर, पाऊँ जिनका भेष॥

ॐ ह्रूं श्री 108 गणाचार्य-पुष्पदंत-सागर-जी-महाराज-अनर्घ-पद-प्राप्ताय अर्घ्यं निर्वपमीति स्वाहा।

आचार्य श्री सौरभ सागरजी का अर्घ

पिच्छी लेकर नग्न रहे, और केश लोंच जो करते हैं।
तन शृंगार रहित वह होकर, बाईस परिषह सहते हैं॥
स्व आत्म कल्याण करे, और पर को मार्ग बताते हैं।
सुलझाते हैं जो मन की ग्रंथियाँ सौरभ सागर जी कहलाते हैं॥

ॐ ह्रूं संस्कार-प्रणेता-आचार्यश्री 108 सौरभ-सागर-जी गुरुदेव-चरण कमलेभ्यो अनर्घ-पद-प्राप्ताय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पूजा प्रारम्भ

ॐ जय! जय!! जय!!! नमोऽस्तु! नमोऽस्तु!! नमोऽस्तु!!!
णमो अरिहंताणं, णमो सिद्धाणं, णमो आइरियाणं,
णमो उवज्झायाणं, णमो लोए सव्वसाहूणं।
ॐ ह्रीं अनादिमूलमंत्रेभ्यो नमः।
(पुष्पांजलिं क्षेपण करें)

चत्तारि मंगलं, अरिहंता मंगलं, सिद्धा मंगलं,
साहू मंगलं, केवलिपण्णत्तो धम्मो मंगलं।
चत्तारि लोगुत्तमा, अरिहंता लोगुत्तमा, सिद्धा लोगुत्तमा,
साहू लोगुत्तमा, केवलिपण्णत्तो धम्मो लोगुत्तमो।
चत्तारि सरणं पव्वज्जामि, अरिहंते सरणं पव्वज्जामि,
सिद्धे सरणं पव्वज्जामि, साहू सरणं पव्वज्जामि,
केवलिपण्णत्तं धम्मं सरणं पव्वज्जामि।
ॐ नमोऽर्हते स्वाहा। (पुष्पांजलिं क्षेपण करें)

अपवित्रः पवित्रो वा, सुस्थितो दुःस्थितोऽपि वा।
ध्यायेत्पंच नमस्कारं, सर्वपापैः प्रमुच्यते।।1।।

अपवित्रः पवित्रो वा, सर्वावस्थां गतोऽपि वा।
यः स्मरेत्परमात्मानं, स बाह्याभ्यंतरे शुचिः।।2।।

अपराजित मंत्राऽयं, सर्व विघ्न विनाशनः।
मंगलेषु च सर्वेषु, प्रथमं मंगलं मतः।।3।।

एसो पंच णमोयारो, सव्व पावप्पणासणो।
मंगलाणं च सव्वेसिं, पढमं होई मंगलं।।4।।

अर्हमित्यक्षरं ब्रह्म, वाचकं परमेष्ठिनः।
सिद्धचक्रस्य सद्बीजं, सर्वतः प्रणमाम्यहम्।।5।।

कर्माष्टक विनिर्मुक्तं, मोक्ष लक्ष्मी निकेतनम्।
सम्यक्त्वादि गुणोपेतं, सिद्धचक्रं नमाम्यहम्।।6।।

विघ्नौघाः प्रलयं यान्ति, शाकिनी भूत पन्नगाः।
विषं निर्विषतां याति, स्तूयमाने जिनेश्वरे।।7।।
(पुष्पांजलिं क्षेपण करें)

पंचकल्याणक का अर्घ्य

उदक-चंदन-तंदुल-पुष्पकैश्चरु-सुदीप-सुधूप-फलार्घ्यकैः।
धवल-मंगल-गान-रवाकुले, जिनगृहे कल्याणमहं यजे॥

ॐ ह्रीं श्री भगवतो गर्भ-जन्म-तप-ज्ञान-निर्वाण-पंचकल्याणकेभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पंचपरमेष्ठी का अर्घ्य

उदक-चंदन-तंदुल-पुष्पकैश्चरु-सुदीप-सुधूप-फलार्घ्यकैः।
धवल-मंगल-गान-रवाकुले, जिनगृहे जिननाथमहं यजे॥

ॐ ह्रीं श्री अर्हंत सिद्धाचार्योपाध्याय, सर्वसाधुभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

श्री जिनसहस्रनाम का अर्घ्य

उदक-चंदन-तंदुल-पुष्पकैश्चरु-सुदीप-सुधूप-फलार्घ्यकैः।
धवल-मंगल-गान-रवाकुले-जिनगृहे-जिननाममहं यजे॥

ॐ ह्रीं श्रीभगवज्जिन-अष्टाधिक-सहस्रनामेभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जिनवाणी का अर्घ्य

उदक-चंदन-तंदुल-पुष्पकैश्चरु-सुदीप-सुधूप-फलार्घ्यकैः।
धवल-मंगल-गान-रवाकुले-जिनगृहे-जिननाममहं यजे॥

ॐ ह्रीं जिनमुखोद्भवसरस्वतीदेव्यै अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

स्वस्ति मंगल विधान

श्रीमज्जिनेन्द्रमभिवंद्य जगत्त्रयेशं,
स्याद्वाद-नायकमनन्त-चतुष्टयार्हम्।
श्रीमूलसंघसुदृशां सुकृतैकहेतुर्,
जैनेन्द्र-यज्ञ-विधिरेष-मयाऽभ्यधायि॥1॥
स्वस्ति त्रिलोक-गुरवे जिन-पुंगवाय,
स्वस्ति स्वभाव-महिमोदय-सुस्थिताय।
स्वस्ति प्रकाश-सहजोर्जित-दृङ्मयाय,

स्वस्ति प्रसन्न-ललिताद्भुत-वैभवाय॥2॥
स्वस्त्युच्छलद्विमल-बोध-सुधा-प्लवाय।
स्वस्ति स्वभाव-परभाव-विभासकाय।
स्वस्ति त्रिलोक वितताैक चिदुद्गमाय,
स्वस्ति त्रिकाल सकलायत विस्तृताय॥3॥
द्रव्यस्य शुद्धिमधिगम्य यथानुरुपं,
भावस्य शुद्धिमधिकामधिगंतुकामः।
आलम्बनानि विविधान्यवलम्ब्य वल्गन्,
भूतार्थ-यज्ञ-पुरुषस्य करोमि यज्ञम्॥4॥
अर्हन्पुराण-पुरुषोत्तम-पावनानि,
वस्तून्यनूनमखिलान्ययमेक एव।
अस्मिन् ज्वलद्विमल-केवल-बोधवह्नौ,
पुण्यं समग्रमहमेकमना जुहोमि॥5॥

ॐ ह्रीं विधियज्ञ प्रतिज्ञायै जिनप्रतिमाग्रे पुष्पांजलिं क्षिपामि।

चतुर्विंशति तीर्थंकर स्वस्ति विधान

श्री वृषभो नः स्वस्ति, स्वस्ति श्री अजितः।
श्री संभवः स्वस्ति, स्वस्ति श्री अभिनन्दनः।
श्री सुमतिः स्वस्ति, स्वस्ति श्री पद्मप्रभः।
श्री सुपार्श्वः स्वस्ति, स्वस्ति श्री चन्द्रप्रभः।
श्री पुष्पदन्तः स्वस्ति, स्वस्ति श्री शीतलः।
श्री श्रेयान् स्वस्ति, स्वस्ति श्री वासुपूज्यः।
श्री विमलः स्वस्ति, स्वस्ति श्री अनन्तः।
श्री धर्मः स्वस्ति, स्वस्ति श्री शान्तिः।
श्री कुन्थुः स्वस्ति, स्वस्ति श्री अरनाथः।
श्री मल्लिः स्वस्ति, स्वस्ति श्री मुनिसुव्रतः।
श्री नमिः स्वस्ति, स्वस्ति श्री नेमिनाथः।
श्री पार्श्वः स्वस्ति, स्वस्ति श्री वर्द्धमानः।

॥इति श्रीचतुर्विंशति-तीर्थंकर-स्वस्ति-मंगलविधानं पुष्पांजलिं क्षिपामि॥

परमर्षि स्वस्ति मंगल विधान

नित्याप्रकम्पाद्भुत-केवलौघाः, स्फुरन्मनःपर्यय शुद्धबोधाः।
दिव्यावधिज्ञान-बलप्रबोधाः, स्वस्ति क्रियासुः परमर्षयो नः॥1॥

कोष्ठस्थ-धान्योपममेकबीजं, संभिन्न संश्रोतृ पदानुसारि।
चतुर्विधं बुद्धिबलं दधानाः, स्वस्ति क्रियासुः परमर्षयो नः॥2॥

संस्पर्शनं संश्रवणं च दूरादास्वादन-घ्राण-विलोकनानि।
दिव्यान् मतिज्ञान बलाद्वहन्तः, स्वस्ति क्रियासुः परमर्षयो नः॥3॥

प्रज्ञा प्रधानाः श्रमणाः समृद्धाः, प्रत्येकबुद्धाः दशसर्वपूर्वैः।
प्रवादिनोऽष्टांग-निमित्त-विज्ञाः, स्वस्ति क्रियासुः परमर्षयो नः॥4॥

जंघा-नल-श्रेणि-फलाम्बु-तंतु, प्रसून-बीजांकुर-चारणाह्वाः।
नभोऽङ्गण स्वैरविहारिणश्च, स्वस्ति क्रियासुः परमर्षयो नः॥5॥

अणिम्नि दक्षाः कुशलाः महिम्नि, लघिम्नि शक्ताः कृतिनो गरिम्णि।
मनो-वपूर्वाग्बलिनश्च नित्यं, स्वस्ति क्रियासुः परमर्षयो नः॥6॥

सकामरूपित्व-वशित्वमैश्यं, प्राकाम्यमन्तर्द्धिमथाप्तिमाप्ताः।
तथाऽप्रतीघातगुणप्रधानाः, स्वस्ति क्रियासुः परमर्षयो नः॥7॥

दीप्तं च तप्तं च तथा महोग्रं, घोरं तपो घोरपराक्रमस्थाः।
ब्रह्मापरं घोरगुणंचरन्तः, स्वस्ति क्रियासुः परमर्षयो नः॥8॥

आमर्ष-सर्वौषधयस्तथाशी र्विषाविषा दृष्टि-विषा विषाश्च।
सखिल्ल-विड्जल्ल-मलौषधीशाः, स्वस्ति क्रियासुःपरमर्षयो नः॥9॥

क्षीरं स्रवंतोऽत्र घृतं स्रवंतो मधु-स्रवंतोऽप्यमृतं स्रवंतः।
अक्षीणसंवास महानसाश्च, स्वस्ति क्रियासुः परमर्शयो नः॥10॥

॥इति परमर्षि-स्वस्ति-मंगल-विधानं पुष्पांजलिं क्षिपामि॥

समुच्चय पूजन *

(देव-शास्त्र-गुरु-जिनतीर्थ-अकृत्रिम तीर्थ तीस चौबीसी विद्यमान 20 तीर्थंकर-निर्वाण भूमि की समुच्चय पूजन)

(जैनाचार्य श्री सौरभ सागर जी महाराज द्वारा रचित)

परम् देव अरिहंत सिद्ध गुरु, आचारज साधु उवज्झाय।
माँ जिनवाणी बीस जिनेश्वर, विद्यमान तीर्थंकर ध्याय।।
तीर्थंकर मुनि मोक्ष भूमि अरुँ, अकृत्रिम जिन वंदन है।
तीस चौबीसी तीर्थंकर का, आह्वाहन स्थापन है।।

ॐ ह्रीं अरिहंत सिद्ध आचार्य उपाध्याय साधु पंचपरमेष्ठी समूह-द्वादशांगमय जिनवाणी समूह-विद्यमान बीस तीर्थंकर समूह-तीर्थंकर मुनिराज की अढ़ाई द्वीप सम्बन्धी मोक्ष भूमि समूह-अकृत्रिम जिन बिम्ब समूह-तीस चौबीसी तीर्थंकर समूह-अत्र अवतर अवतर-अत्र तिष्ठ-तिष्ठ अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधीकरणं।

जल

जल जीवन रक्षित करता है, शांत स्वभावी सरल तरल।
चरणों में जल अर्पित करता, पाने को शुभ मोक्ष महल।।
परमेष्ठी अरुँ माँ जिनवाणी, विद्यमान बीसों मुनिराज।
तीस चौबीसी सिद्ध भूमि नम, पूजूँ अकृत्रिम जिनराज।।

ॐ ह्रीं श्री पंचपरमेष्ठी समूह-द्वादशांगमय जिनवाणी समूह-विद्यमान बीस तीर्थंकर समूह-तीर्थंकर मुनिराज की अढ़ाई द्वीप सम्बन्धी मोक्ष भूमि समूह-अकृत्रिम जिनबिम्ब समूह तीस चौबीसी तीर्थंकर समूह जन्म जरा मृत्यु विनाशनाय **जलं** निर्वपामीति स्वाहा।

---

*कभी-कभी समय की अल्पता के कारण आराधना के तीव्र भाव उत्पन्न होते हैं उन सभी आराधना चाहने वालों के लिए आचार्यश्री ने महाउपकार करके एक साथ "पंच परमेष्ठी, माँ जिनवाणी, विद्यमान बीस तीर्थंकर, अढाई द्वीप, सम्पूर्ण निर्माण भूमि, अकृत्रिम जिनबिम्ब (प्रतिमा) एवं तीस चौबीसी" की समुच्चय पूजा की रचना की है।

चंदन

ताप विनाशक तन का चंदन, पूज्य चरण में लें आया।
क्रोध द्वेष प्रतिशोध त्यागकर, शीतल सुरभित गुण गाया।।
परमेष्ठी अरुँ माँ जिनवाणी, विद्यमान बीसों मुनिराज।
तीस चौबीसी सिद्ध भूमि नम, पूजूँ अकृत्रिम जिनराज।।

ॐ ह्रीं श्री पंचपरमेष्ठी समूह द्वादशांगमय जिनवाणी समूह-विद्यमान बीस तीर्थंकर अकृत्रिम जिनबिम्ब समूह-तीर्थंकर मुनिराज की अढ़ाई द्वीप सम्बन्धी मोक्ष भूमि समूह तीस चौबीसी तीर्थंकर समूह संसार ताप विनाशनाय **चंदनं** निर्वपामीति स्वाहा।

अक्षत

सिद्ध शिला का वासी आतम, पापी बन भव घूम रहा।
त्रय योगों को स्थिर करके, द्रव्य चढ़ा मन झूम रहा।।
परमेष्ठी अरुँ माँ जिनवाणी, विद्यमान बीसों मुनिराज।
तीस चौबीसी सिद्ध भूमि नम, पूजूँ अकृत्रिम जिनराज।।

ॐ ह्रीं श्री पंचपरमेष्ठी समूह द्वादशांगमय जिनवाणी समूह-विद्यमान बीस तीर्थंकर समूह-तीर्थंकर मुनिराज की अढ़ाई द्वीप सम्बन्धी मोक्ष भूमि समूह तीस चौबीसी तीर्थंकर अकृत्रिम जिनबिम्ब समूह अक्षय पद प्राप्ताय **अक्षतं** निर्वपामीति स्वाहा।

पुष्प

काम भोग का रोग भयंकर, मन बगियाँ में खिलता हैं।
वैरागी प्रभु के सम्मुख आ, काम भाव सब मिटता हैं।।
परमेष्ठी अरुँ माँ जिनवाणी, विद्यमान बीसों मुनिराज।
तीस चौबीसी सिद्ध भूमि नम, पूजूँ अकृत्रिम जिनराज।।

ॐ ह्रीं श्री पंचपरमेष्ठी समूह द्वादशांगमय जिनवाणी समूह-विद्यमान बीस तीर्थंकर समूह-तीर्थंकर मुनिराज की अढ़ाई द्वीप सम्बन्धी मोक्ष भूमि समूह तीस चौबीसी तीर्थंकर अकृत्रिम जिनबिम्ब समूह कामबाण विनाशनाय **पुष्पं** निर्वपामीति स्वाहा।

नैवेद्य

पतितोद्धारक आप निराकुल, क्षुधारोग से पीड़ित हूँ।
धर्म ध्यान की औषध पाकर, भक्ति भाव से जीवित हूँ।।
परमेष्ठी अरुँ माँ जिनवाणी, विद्यमान बीसों मुनिराज।
तीस चौबीसी सिद्ध भूमि नम, पूजूँ अकृत्रिम जिनराज।।

ॐ ह्रीं श्री पंचपरमेष्ठी समूह द्वादशांगमय जिनवाणी समूह-विद्यमान बीस तीर्थंकर अकृत्रिम जिनबिम्ब समूह-तीर्थंकर मुनिराज की अढ़ाई द्वीप सम्बन्धी मोक्ष भूमि समूह तीस चौबीसी तीर्थंकर समूह क्षुधा रोग विनाशनाय **नैवेद्यं** निर्वपामीति स्वाहा।

दीप

मिथ्या भाव का महा तिमिर प्रभु, काल अनादि से भीतर।
तव दर्शन की शुभ्र दीप से, ज्योतिर्मय आतम अंदर।।
परमेष्ठी अरुँ माँ जिनवाणी, विद्यमान बीसों मुनिराज।
तीस चौबीसी सिद्ध भूमि नम, पूजूँ अकृत्रिम जिनराज।।

ॐ ह्रीं श्री पंचपरमेष्ठी समूह द्वादशांगमय जिनवाणी समूह-विद्यमान बीस तीर्थंकर समूह-तीर्थंकर मुनिराज की अढ़ाई द्वीप सम्बन्धी मोक्ष भूमि समूह तीस चौबीसी तीर्थंकर अकृत्रिम जिनबिम्ब समूह मोहांधकार विनाशनाय **दीपं** निर्वपामीति स्वाहा।

धूप

तव चरणों की धूपायन में, कर्म धूप खेनें आया।
धर्म गंध चारों दिश फैले, मन पूजा कर हर्षाया।।
परमेष्ठी अरुँ माँ जिनवाणी, विद्यमान बीसों मुनिराज।
तीस चौबीसी सिद्ध भूमि नम, पूजूँ अकृत्रिम जिनराज।।

ॐ ह्रीं श्री पंचपरमेष्ठी समूह द्वादशांगमय जिनवाणी समूह-विद्यमान बीस तीर्थंकर समूह-तीर्थंकर मुनिराज की अढ़ाई द्वीप सम्बन्धी मोक्ष भूमि समूह तीस चौबीसी तीर्थंकर अकृत्रिम जिनबिम्ब समूह अष्ट कर्म विनाशनाय **धूपं** निर्वपामीति स्वाहा।

फल

भक्ति भाव की दिव्य तरु में, चढ़कर रत्नत्रय पाऊँ।
जिन गुण फल आतम में प्रगटे, सिद्धालय में रम जाऊँ।।
परमेष्ठी अरुँ माँ जिनवाणी, विद्यमान बीसों मुनिराज।
तीस चौबीसी सिद्ध भूमि नम, पूजूँ अकृत्रिम जिनराज।।

ॐ ह्रीं श्री पंचपरमेष्ठी समूह द्वादशांगमय जिनवाणी समूह-विद्यमान बीस तीर्थंकर समूह-तीर्थंकर मुनिराज की अढ़ाई द्वीप सम्बन्धी मोक्ष भूमि समूह तीस चौबीसी तीर्थंकर अकृत्रिम जिनबिम्ब समूह मोक्षफल प्राप्ताय **फलं** निर्वपामीति स्वाहा।

अर्घ्य

अष्ट द्रव्य का अर्घ थाल लें, श्रद्धा से अर्पित करता।
है अनर्घ पद पावन तेरा, पाने मन उलसित होता।।
परमेष्ठी अरुँ माँ जिनवाणी, विद्यमान बीसों मुनिराज।
तीस चौबीसी सिद्ध भूमि नम, पूजूँ अकृत्रिम जिनराज।।

ॐ ह्रीं श्री पंचपरमेष्ठी समूह द्वादशांगमय जिनवाणी समूह-विद्यमान बीस तीर्थंकर समूह-तीर्थंकर मुनिराज की अढ़ाई द्वीप सम्बन्धी मोक्ष भूमि समूह तीस चौबीसी तीर्थंकर अकृत्रिम जिनबिम्ब समूह अनर्घ्य पद प्राप्ताय **अर्घम्** निर्वपामीति स्वाहा।

जयमाला

पंचपरम गुरु परमेष्ठी हैं, पूज्य पुरुष अरिहंत मुनि।
सिद्ध निरामय निराकार हैं, अष्ट कर्म के कष्ट हनि।।1।।
आचारज उवज्झाय साधुगण, ज्ञानध्यान तप लीनयति।
णमोकार नित जपकर करता, चरण वंदना जैनमति।।2।।
ऋषभ अजित संभव अभिनन्दन, सुमति पद्म सुपार्श्व प्रभो
चन्द्र पुष्प शीतल श्रेयांश पद, वासु विमलानन्त नमो।।3।।
धर्म शान्ति कुन्थु अरनाथा, मल्लि मुनिसुव्रत नमि जपूं।
नेमी पारस महावीर जी, वर्तमान चौबीसी भंजू।।4।।

तीर्थराज सम्मेद शिखर जी, अष्टापद पावा गिरनार।
चम्पापुर सह ढाई द्वीप की, मोक्ष भूमि बन्दूँ शतवार।।5।।
सीमंधर से अजितवीर्य तक, विद्यमान श्री बीस जिनेश।
क्षेत्र विदेह में देह रहित हो, हरते सारे कर्म क्लेश।।6।।
आठ कोटि अरुँ छप्पन लक्षा, सत्तावन हज्जार कहें।
चार शतक इक्यासी प्रतिमा, नमन उन्हें शतवार करें।।7।।
जिनप्रतिमा अकृत्रिम जग में, दिव्य रूप है वृहद विशाल।
ऊर्ध्व अधो अरुँ मध्य लोक के, जिन प्रतिमा बन्दूँ त्रयकाल।।8।।
ऐरावत और भरत क्षेत्र के, तीर्थंकर गुणगान करूँ।
भूत भविष्यत वर्तमान के, तीस चौबीसी ध्यान धरूँ।।9।।
प्रभु पूजन दर्शन वंदन से, निद्धत निकाचित कर्म कटें।
अनुपम आत्मिक अव्यय सुख का, सूरज निज आतम प्रगटे।।10।।
दिव्य ध्वनि की निर्मल वाणी, माँ जिनवाणी कहलाती।
दिव्य ज्ञान दे अन्तर्मन की, कल्मषता सब धो जाती।।11।।
परमेष्ठी जिनवाणी माता, क्षेत्र विदेह के बीस जिनेश।
सिद्ध भूमि अकृत्रिम प्रतिमा, तीस चौबीसी के तीर्थेश।।12।।
देव शास्त्र गुरु तीरथ भूमि, तीर्थंकर को सदा नमूँ।
अर्घावली चरणों में देकर, शुद्धातम को सदा भजूँ।।13।।

दोहा- **कर्म रहित जिनदेव की, भक्ति करे कल्याण।**
"सौरभसागर" नित नमें, पाने शाश्वत धाम।।

ॐ ह्रीं श्री पंचपरमेष्ठी समूह द्वादशांगमय जिनवाणी समूह-विद्यमान बीस तीर्थंकर समूह-तीर्थंकर मुनिराज की अढ़ाई द्वीप सम्बन्धी मोक्ष भूमि समूह तीस चौबीसी तीर्थंकर समूह जयमालाय पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा- **परमेष्ठी श्रुत बीस जिन, तीस चौबीसी ध्याय।**
अकृत्रिम जिनराज भज, सिद्ध भूमि सिर नाय।।

(पुष्पांजलिं क्षिपेत्)

श्री आदिनाथ पूजन

स्थापना

हे दिव्य विभूति आदि जिनेश्वर, मोक्ष सुखों के कर्ता हो।
भव अर्णव के तारण हारे, लोकालोक के दृष्टा हो।।
आह्वानन संस्थापन कर मन, गद्‌गद हो पुलकित होता।
जगत्पूज्य हे सिद्ध स्वरूपी, दर्शन कर प्रमुदित होता।।
हृदय विराजो संकटहर्ता, जगति का उद्धार करो।
पाद पद्‌म की पूजा करता, मम भक्ति स्वीकार करो।।

ॐ ह्रीं श्रीआदिनाथ-जिनेन्द्र अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्वाननम्।
ॐ ह्रीं श्रीआदिनाथ-जिनेन्द्र अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनम्।
ॐ ह्रीं श्रीआदिनाथ-जिनेन्द्र अत्र मम् सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधिकरणम्।

जल

दिव्य ध्वनि की पावन गंगा, निर्मल वचनों से बहती।
भव्य जीव के हृदय कमल को, सिंचित कर पावन करती।।
जल से भिन्न कमल वत् जीकर, निज दर्शन कर पाऊँगा।
चरणों में जल की धारा दें, जन्म जरा विनशाऊँगा।।

ॐ ह्रीं श्रीआदिनाथ-जिनेन्द्राय नमः जन्म-जरा- मृत्यु-विनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

चन्दन

समवशरण में चारों दिश में, मुख अम्बुज दर्शन होता।
क्रोध बैर क्षण में नश जाता, मन पावन पुलकित होता।।
पाप ताप संताप हरण को, चंदन चरण चढ़ाऊँगा।
आदिनाथ की पूजा करके, शीघ्र अमरता पाऊँगा।।

ॐ ह्रीं श्रीआदिनाथ-जिनेन्द्राय नमः संसार-ताप- विनाशनाय चन्दनं निर्वपामीति स्वाहा।

अक्षत

शुभ्र अभ्र-सा शाली तन्दुल, ऋजु भावों से मैं लाऊँ।
कर्म कलंक मिटाओ स्वामी, सुख सिन्धु में रम जाऊँ।।
आदिनाथ कैलाश गिरी से, अक्षय निधि को पाया है।
चरण कमल में अक्षत अर्पित, मन मेरा हर्षाया है।।

ॐ ह्रीं श्रीआदिनाथ-जिनेन्द्राय नमः अक्षयपद- प्राप्ताय अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा।

पुष्प

सूर्योदय में खिला खिला, संध्या में ये मुरझाता है।
क्षण भंगुर जीवन की कलियाँ, पुष्प पाठ सिखलाता है।।
चंचल मन स्थिर हो जायें, कामबाण मेटो स्वामी।
सुमन चढ़ाकर सुमन खिलाऊँ, शक्ति दो अन्तर्यामी।।

ॐ ह्रीं श्रीआदिनाथ-जिनेन्द्राय नमः कामबाण- विध्वंसनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

नैवेद्य

जिसके खातिर प्रतिदिन प्रभुवर, पाप ही पाप कमाता हूँ।
क्षुधावेदनी नाश करन को, चरुवर चरण चढ़ाता हूँ।।
तीर्थंकर हे आदि प्रभुजी, वर्षों तक उपवास किये।
महातपस्वी ज्ञानी ध्यानी, कर्म कालिमा नाश किये।।

ॐ ह्रीं श्रीआदिनाथ-जिनेन्द्राय नमः क्षुधारोग- विनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दीप

घृत का दीपक मृणमय मनहर, जगमग जगमग करता है।
बाहर का तम पीकर वह तो, अंधकार सब हरता है।।
चरण कमल में दीप समर्पित, केवल दीप जलाऊँगा।
तेरे सम निश्चल ज्योति पा, अजर अमर हो जाऊँगा।।

ॐ ह्रीं श्रीआदिनाथ-जिनेन्द्राय नमः मोह-अंधकार- विनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

धूप

चिन्मय ज्ञायक की शुचि सरिता, ध्यान अवस्था में बहती।
तप की अग्नि प्रज्वल्लित हो, अष्ट कर्म क्षण में दहती।।
आदिनाथ के चरण कमल में, भक्ति धूप मैं खेऊँगा।
निज पद पाने जिन पद पूजा, का आनन्द मैं लेऊँगा।।

ॐ ह्रीं श्रीआदिनाथ-जिनेन्द्राय नमः अष्टकर्म- दहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

फल

रंग बिरंगे सुन्दर फल ये, मन को आकर्षित करते।
पूजा में चढ़ करके ये फल, तन मन को हर्षित करते।।
ऋषभनाथ हे आदि जिनन्दा, तरुवर फल स्वीकार करों।
पूजा का फल मोक्ष महाफल, देकर मम उद्धार करों।।

ॐ ह्रीं श्रीआदिनाथ-जिनेन्द्राय नमः मोक्षफल- प्राप्ताय फलं निर्वपामीति स्वाहा।

अर्घ्य

निर्मल नीर सुगन्धित चन्दन, सुन्दर तन्दुल ले आया।
पुष्प दीप नैवेद्य धूप ले, शुभ फल पूजन में लाया।।
हे अनर्घ पद मुक्ति का प्रभु, पाने अर्घ चढ़ाऊँगा।
आदिनाथ की पूजा करके, सारे विघ्न नशाऊँगा।।

ॐ ह्रीं श्रीआदिनाथ-जिनेन्द्राय नमः अनर्घपद- प्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पंच कल्याणक अर्घ्य

तैंतीस सागर तक स्वर्गों में, चर्चा में ही लीन रहें।
सिद्ध शिला से थोड़े नीचे, भक्ति में तल्लीन रहें।।
माता मरुदेवी कुक्षी में, दूज बदी आषाढ़ आयें।
नाभिराय के घर आँगन में, रतन बरसते सुख पायें।।

ॐ ह्रीं आषाढ-कृष्ण-द्वितीयायां गर्भ-कल्याणक-प्राप्ताय श्रीआदिनाथ-जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

चैत वदी नवमी के शुभ दिन, तीर्थंकर अवतार हुआ।
भोग भूमि में कर्म भूमिसा, अतिशय मय उद्धार हुआ।।
सहस सुवासित कलशो से फिर, पाण्डुक वन अभिषेक हुआ।
अयोध्या की गली गली में, खुशियों का अतिरेक हुआ।।

ॐ ह्रीं चैत्र-कृष्ण-नवम्यां जन्म-कल्याणक-प्राप्ताय श्रीआदिनाथ-जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

एक नृत्य ने आदिश्वर के, जीवन की बदली सब धार।
जगती में कुछ सार नहीं है, ये तो है दुःख का आगार।।
धन वैभव को छोड़ दिया, और छोड़ चले सारा परिवार।
भीषण वन में शीत उष्ण में, धारा तप बनकर अनगार।।

ॐ ह्रीं चैत्र-कृष्ण-नवम्यां तप-कल्याणक-प्राप्ताय श्रीआदिनाथ-जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

रंग रंगीला फागुन महीना, उड़ने लागा धर्म गुलाल।
फागुन ग्यारस को मुनिवर ने, प्राप्त किया था केवलज्ञान।।

दिव्य ध्वनि को सुनकर भविजन, हर्षित हो गए सब नर नार।
टूटी नैया पार लगा दो, ओ सृष्टि के तारनहार।।

ॐ ह्रीं फाल्गुन-कृष्ण-एकादश्यां ज्ञान-कल्याणक-प्राप्ताय श्रीआदिनाथ-जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मोक्ष निकेतन वरन करन को, योग निरोध करे धर ध्यान।
अष्टापद से आदिश्वर ने, पाया था फिर पद निर्वाण।।
निज आतम कल्याण किया और, किया प्रभु ने जग कल्याण।
तृतीय काल में तीन लोक के, अधिनायक बन गये भगवान।।

ॐ ह्रीं माघ-कृष्ण-चतुर्दश्यां मोक्ष-कल्याणक-प्राप्ताय श्रीआदिनाथ-जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जयमाला

शुभ देश अयोध्या सुन्दर है, जहाँ के नृप नाभि नरेन्दर है।
उनके सुत आदि जिनेन्दर हैं, हम नमते वे तीर्थंकर हैं।।1।।

मन वच तन से शुभ कर्म करें, कृत कारित मोदन मोद भरे।
सब संकट को प्रभु दूर करें, भक्ति पूजा भरपूर करें।।2।।

जब जगति में अवतार लिया, सुर मंगल द्रव्य सजाय लिया।
पाण्डुक वन में अभिषेक किया, सबने वन्दन प्रथमेश किया।।3।।

सुन्दर तन का शृंगार किया, कर कंकण कज्जल नेत्र दिया।
मस्तक पर मुकुट सजाया है, श्रद्धा से शीश झुकाया है।।4।।

सज धज कर राज महल आए, सब देख देख कर हर्षाए।
सौधर्म ने ताण्डव नृत्य किया, वन्दनमय शुभ शुभ कृत्य किया।।5।।

हाथी घोड़ा सब वस्त्र दिए, रथ सेना सब चतुरंग किए।
शुभ योग सुभोग सभी देवें, शिशु आदि जिनेश के पद सेवे।।6।।

लाख तिरासी वरष पूर्व, सुख भोगे जगति के अपूर्व।
दो नारी दो पुत्री धारी, शत पुत्र हुयें आज्ञाकारी।।7।।

शुभ वर्ष गाँठ का दिन आया, सौधर्म इन्द्र अति हर्षाया।
नीलांजना ने था नृत्य किया, तत्क्षण आयुक्षय मृत्यु हुआ॥8॥

क्षण भंगुर जग की माया है, पल में विनशी यह काया है।
वैराग्य जगा आदि मन में, जिन दीक्षा ली जाकर वन में॥9॥

तप करते वर्ष हजार गए, सब राग द्वेष विनष्ट भए।
कैवल्य ज्ञान की ज्योति जली, भव्यों को दिव्य ध्वनि मिली॥10॥

शुभ समवशरण सुखदायक है, प्रभु आदि जिनेश्वर ज्ञायक है।
भव्य जीव सब आते हैं, प्रभु वाणी सुन हर्षाते हैं॥11॥

उपदेश सुतत्व प्रकाश हुआ, मुनि श्रावक धर्म विकास हुआ।
दु:खदायक कर्म नशाया है, जो आदिनाथ पथ पाया है॥12॥

सब जगति का उद्धार किया, कैलाशगिरी विहार किया।
शेष अघाति नष्ट किये, श्री आदि जिनेश्वर सिद्ध हुए॥13

जिनदेव कृपा की नजर करो, मम कर्म नाश कर अमर करो।
उत्सव का अवसर आया है, पूजा कर शीश झुकाया है॥14॥

दोहा

भव अर्णव को पार कर, पाया मोक्ष महान।
भक्त सभी नमते तुम्हें, आदि जिनेश महान॥

ॐ ह्रीं श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय नमः जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

श्री आदि जिनेशा हरो दुख क्लेशा, चरण नमें हम सुखकारी।
मुनि सौरभ सागर पूजा गाकर, पावे पद प्रभु अविकारी॥

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं अर्हं श्री वृषभनाथ तीर्थंकर पंचकल्याणक संयुक्ताय शिवपदकर्ता भव जल निधि पोत सर्व विघ्न व्याधिहर्ता तव भक्ति प्रसादात् मम सर्व कल्याणमस्तु दीर्घायुरस्तु शुभमस्तु सुकीर्तिरस्तु सद्बुद्धिरस्तु धन धान्य समृद्धिरस्तु सम्यकवृद्धिरस्तु आरोग्यमस्तु विजयोस्तु सर्व रिद्धि-सिद्धि भवतु रक्ष-रक्ष हूं फट् स्वाहा।

शान्तिनाथ, कुन्थुनाथ, अरहनाथ जिन पूजन

स्थापना

कर्म विनाशी शिवपुर वासी, शान्तिनाथ की जय जय कार।
त्रिपदधारी कुन्थु अरह जिन, नमन करूँ मैं बारम्बार।।
भक्तिभाव से आज पुकारूँ, शान्ति कुन्थु अरह जिनराज।
स्थापन मम निकट पधारो-ज्ञाता दृष्टा हे जिनराज।।

ॐ ह्रीं श्रीं शांति कुंथु अरहनाथ त्रय पद धारी जिन समूह अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्वाननं।

ॐ ह्रीं श्रीं शांति कुंथु अरहनाथ त्रय पद धारी जिन समूह अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनं।

ॐ ह्रीं श्रीं शांति कुंथु अरहनाथ त्रय पद धारी जिन समूह अत्र मम् सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधिकरणं।

जल

क्षायिक सम्यक दर्शन सा जल, प्रभु पूजन में ले आऊँ।
चरण अग्र त्रय धारा देकर, त्रय दोषों को विनशाऊँ।।
त्रय पदधारी शांति कुंथू अर, गुण रत्नों से भूषित है।
जन्म जरा मृत नाश करो प्रभु, भक्ति भाव से पूजित है।।

ॐ ह्रीं श्रीं शांति कुंथु अरहनाथ त्रय पद धारी जिन समूह जन्म जरा मृत्यु विनाशनाय जलम् निर्वपामीति स्वाहा।

चंदन

अनुकंपा का भाव लिए प्रभु, केसर चंदन संग लिया।
चरण कमल की अर्चा करता, क्रोध क्षमा मय रंग किया।।
त्रय पदधारी शांति कुंथू अर, गुण रत्नों से भूषित है।
भव संताप मिटाने हेतु, चंदन द्रव्य समर्पित है।।

ॐ ह्रीं श्रीं शांति कुंथु अरहनाथ त्रय पद धारी जिन समूह भव आताप विनाशनाय चंदनम् निर्वपामीति स्वाहा।

अक्षत

त्रय योगों से वंदन करता, अक्षत आर्जव भाव लिए।
त्रय शल्यों से पार करो प्रभु, भव अर्णव में नाव लिए।।
त्रय पदधारी शांति कुंथू अर, गुण रत्नों से भूषित है।
अक्षय पद की करूँ कामना, अक्षत द्रव्य समर्पित है।।

ॐ ह्रीं श्रीं शांति कुंथु अरहनाथ त्रय पद धारी जिन समूह अक्षय पद प्राप्तये अक्षतम् निर्वपामीति स्वाहा।

पुष्प

भंवरे गुंजित पुष्प सुगंधित, पौधे पर इतराते हैं।
भोर शाम तक जीवन जीते, कामी सम मुस्काते हैं।।
त्रय पदधारी शांति कुंथू अर, गुण रत्नों से भूषित है।
काम भाव विध्वंस करो प्रभु, द्रव्य पुष्प समर्पित है।।

ॐ ह्रीं श्रीं शांति कुंथु अरहनाथ त्रय पद धारी जिन समूह कामबाण विनाशनाय पुष्पम् निर्वपामीति स्वाहा।

नैवेद्य

अन्न कीट यह तन सारा है, नाना विध पकवान चहें।
जितना देंवे ज्यादा चाहे, कभी नहीं इंकार करें।।
त्रय पदधारी शांति कुंथू अर, गुण रत्नों से भूषित है।
क्षुधा रोग विनशाने वाले, नेवेज द्रव्य समर्पित है।।

ॐ ह्रीं श्रीं शांति कुंथु अरहनाथ त्रय पद धारी जिन समूह क्षुधा रोग विनाशनाय नैवेद्यम् निर्वपामीति स्वाहा।

दीप

अंतर ज्योति दिव्य दीप्ति मय, केवल ज्ञान मयी परकाश।
जगमग दीपक भक्ति ज्ञान का, अर्पित है अज्ञान विनाश।।
त्रय पदधारी शांति कुंथू अर, गुण रत्नों से भूषित है।
मोह तिमिर सारे छट जाये, दीप द्रव्य समर्पित है।।

ॐ ह्रीं श्रीं शांति कुंथु अरहनाथ त्रय पद धारी जिन समूह मोह अन्धकार विनाशनाय दीपम् निर्वपामीति स्वाहा।

धूप

अग्नि ताप से धूप जले पर, धूम सुवासित है देता।
तप अग्नि में तन मन जलता, कर्म निकाचित हर लेता।।
त्रय पदधारी शांति कुंथू अर, गुण रत्नों से भूषित है।
अष्ट कर्म विनशाने वाले, द्रव्य धूप समर्पित है।।

ॐ ह्रीं श्रीं शांति कुंथु अरहनाथ त्रय पद धारी जिन समूह अष्ट कर्म दहनाय धूपम् निर्वपामीति स्वाहा।

फल

उत्तम फल जिन अग्र चढ़ाऊँ, व्यग्र भाव निस्तार करूँ।
दर्शन ज्ञान मई चेतन का, अनुभव फल बिस्तार करूँ।।
त्रय पदधारी शांति कुंथू अर, गुण रत्नों से भूषित है।
मोक्ष महाफल फले आत्म में, द्रव्य फल समर्पित है।।

ॐ ह्रीं श्रीं शांति कुंथु अरहनाथ त्रय पद धारी जिन समूह मोक्ष फल प्राप्तये फलम् निर्वपामीति स्वाहा।

अर्घ

वारि चंदन तन्दुल पुष्पम्, नेवज दीप सजाया है।
धूपम् और फलम् लेकर के, चरणन अर्घ चढ़ाया है।।
त्रय पदधारी शांति कुंथू अर, गुण रत्नों से भूषित है।
है अनर्घ पद पाने अर्घम्, अष्ट द्रव्य समर्पित है।।

ॐ ह्रीं श्रीं शांति कुंथु अरहनाथ त्रय पद धारी जिन समूह अनर्घ पद प्राप्तये अर्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा।

जयमाला

शांति नाथ जय शांति प्रदाता, भव्य जीव के तारणहार।
तीर्थंकर चक्री पदधारी, कामदेव सौंदर्य अपार।।1।।
चरम शरीरी इंद्रिय सुख को, चरम शिखर तक पाया है।
पाप विकाशक जाना मन से, क्षणभर में ठुकराया है।।
सुप्त धर्म को जागृत करके, धर्म ध्वजा फहराया है।
षट खंडो के स्वामी होकर, षट कर्तव्य सिखाया है।।
बाह्य चक्र से सर्वशत्रु को, क्षण भर में भयभीत किया।
मोह चक्र को ध्यान चक्र से, सहज भाव से जीत लिया।।

वीतराग पथ अपना करके, आत्मिक शांति प्रगटाया।
शांतिनाथ जिन जय हो तेरी, सिद्ध निरामय सुख पाया।।
कुंथुनाथ जी निर्मल मन पा करुणरस बरसाते हैं।
पद वैभव सत्ता शक्ति सब, पुण्य योग से पाते है।।
अहमिंद्र पद तजकर प्रभु ने, नर भव उत्तम पाया है।
इंद्रिय सुख अग्नि ज्वाला सम, तज सिद्धालय पाया है।।
अरिहवंसी श्री सप्तम चक्री, अरहनाथ गुणवान मुनि।
मेघ पटल परिवर्तन लखकर, सिद्धालय की राह चुनी।।
अरहनाथ के चरणों में रह, सर्व जीव पर रहम करूं।
अविनाशी जगनायक जिनवर, विषयों के सुख वहम हरु।।
नरभव उत्तम सार्थक करने, जिन मुद्रा को धारा है।
अरहनाथ अरिकुल के नाशक, अर्हत पद को पाया है।।
वीतराग सर्वज्ञ जिनेश्वर, कल्याणक के धारी है।
भक्ति भाव से चरण वंदना, तीर्थंकर हितकारी है।।
पाप विनाशक संकटहर्ता, विघ्नों के संहारक है।
अमल आत्मा अचल विराजित, भव अर्णव के तारक है।।
रत्नत्रय पथ गमन करने प्रभु, ऐसी शक्ति मन भरदों।
कर्म दासता झर छँट जायें, ध्यान लगाऊँ नित वरदो।।
शांति कुंथु अर चरण पूजकर, कर्म कलंक मिटाऊँगा।
निजपद पाने जिन पद पूजा, अन्तिम क्षण तक गाऊंगा।।

ॐ ह्रीं श्रीं शांति कुंथु अरनाथ जिन समूह अनर्घ पद प्राप्तये जयमाला पूर्ण अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

घत्ता

जय जय तीर्थंकर, सर्वहितंकर, कर्म क्षयंकर, ध्यानधरुं।
नत सौरभ सागर पूजा गाकर, शान्ति निलय में वास करूँ।।

इत्याशीर्वाद पुष्पांजलि क्षिपेत्

शांति शांति धारा

तप करते जीवन गया द्रव्य गया मुनि दान
प्राण गये संन्यास में तीनों गया न जान

श्री पार्श्वनाथ पूजन

दोहा

मोह महारिपु जीतकर, कर्म किये चकचूर।
कल्याण धाम श्री पार्श्व जिन, भक्ति करूँ भरपूर॥
कुमुद चन्द्र आचार्य ने, स्तोत्र रचा महान्।
श्रद्धा से पूजा करें, मुक्ति निकट यह जान॥

स्थापना

फैल रही है प्रभा सूर्य सी, वर्ण तुम्हारा श्याम है।
सिद्ध लोक में आप विराजे, रहा न जग से काम है॥
प्राणत स्वर्ग से आए मुनिवर, फणि लाञ्छन को पाए हैं।
गुण पाने श्री वामा नन्दन, पूजा पाठ रचाए हैं॥

ॐ ह्रीं श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्र मम हृदये अवतर-अवतर संवोषट् आह्वाननम्।
ॐ ह्रीं श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्र मम हृदये तिष्ठ-तिष्ठ! ठः ठः स्थापनम्।
ॐ ह्रीं श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्र मम हृदये सन्निहितो भव-भव वषट् सन्निधिकरणम्।

जल

गंगा सिन्धु शुभ सरवर अरूँ, जिन तीर्थों का जल लाऊँ।
शरद चन्द्र सा चारू पात्र ले, चरणाम्बुज में नीर चढ़ाऊँ॥
सुर नर खग पशु नृप से पूजित, पार्श्वनाथ के चरण जजूँ।
कर्म कमठ उपसर्ग जीतकर, चिदानन्द कैवल्य भजूँ॥

ॐ ह्रीं श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय नमः मम जन्म जरा मृत्यु विनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

चंदन

दिग्दिगन्त तक गन्ध है फैली, तरु से फणिधर लिपट रहे।
भक्ति ध्यान से समता पाकर, कर्म पांशु से निपट रहे॥
सुर नर खग पशु नृप से पूजित, पार्श्वनाथ के चरण जजूँ।
कर्म कमठ उपसर्ग जीतकर, चिदानन्द कैवल्य भजूँ॥

ॐ ह्रीं श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय नमः संसार ताप विनाशनाय चन्दनं निर्वपामीति स्वाहा।

अक्षत

नयन मनोहर सुन्दर तन्दुल, अक्षत अक्षय लाया हूँ।
मन वच तन को अक्षत करके, वन्दन कर हर्षाया हूँ।।
सुर नर खग पशु नृप से पूजित, पार्श्वनाथ के चरण जजूँ।
कर्म कमठ उपसर्ग जीकर, चिदानन्द कैवल्य भजूँ।।

ॐ ह्रीं श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय नमः अक्षय पद प्राप्ताय अक्षतं निर्वपामीति स्वाहा।

पुष्प

गुंजन करते भ्रमर पुष्प पर, गन्ध सुगन्ध से भरे पड़ें।
अद्‌भुत मनहर दिव्य पुष्प ले, चरणों में यह द्रव्य चढ़े।।
सुर नर खग पशु नृप से पूजित, पार्श्वनाथ के चरण जजूँ।
कर्म कमठ उपसर्ग जीतकर, चिदानन्द कैवल्य भजूँ।।

ॐ ह्रीं श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय नमः कामबाण विध्वंसनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

नैवेद्य

स्वर्ण पात्र में अन्न पान ले, क्षुधा शमन को बहु खाए।
त्याग किए बिन षट्‌रस मनवा, निजरस ना ही चख पाए।।
सुर नर खग पशु नृप से पूजित, पार्श्वनाथ के चरण जजूँ।
कर्म कमठ उपसर्ग जीतकर, चिदानन्द कैवल्य भजूँ।।

ॐ ह्रीं श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय नमः क्षुधारोग विनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दीप

अन्तर मन में तमस मोह का, ज्ञान दीप से छट जाए।
मृणमय दीपक से भक्ति कर, मोह तिमिर भी घट जाए।।
सुर नर खग पशु नृप से पूजित, पार्श्वनाथ के चरण जजूँ।
कर्म कमठ उपसर्ग जीतकर, चिदानन्द कैवल्य भजूँ।।

ॐ ह्रीं श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय नमः मोहान्धकार विनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

धूप

चन्दन अरूँ कर्पूर चूर्ण ले, धूप अगन में खेता हूँ।
निज वैभव का सौरभ पाने, कर्म दहन कर देता हूँ।।
सुर नर खग पशु नृप से पूजित, पार्श्वनाथ के चरण जजूँ।
कर्म कमठ उपसर्ग जीतकर, चिदानन्द कैवल्य भजूँ।।

ॐ ह्रीं श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय नमः अष्टकर्म दहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

फल

लौकिक फल का मधुर स्वाद है, इन्द्रिय से जाना जाता।
मोक्ष महाफल का आस्वादन, वीतरागी ही कर पाता।।
सुर नर खग पशु नृप से पूजित, पार्श्वनाथ के चरण जजूँ।
कर्म कमठ उपसर्ग जीतकर, चिदानन्द कैवल्य भजूँ।।

ॐ ह्रीं श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय नमः मोक्षफल प्राप्ताय फलं निर्वपामीति स्वाहा।

अर्घ्य

अष्ट द्रव्य का थाल सजाकर, अष्ट अंग नमाऊँगा।
अष्ट कर्म को शीघ्र नष्ट कर, अष्टम वसुधा पाऊँगा।।
सुर नर खग पशु नृप से पूजित, पार्श्वनाथ के चरण जजूँ।
कर्म कमठ उपसर्ग जीतकर, चिदानन्द कैवल्य भजूँ।।

ॐ ह्रीं श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय नमः अनर्घपद प्राप्ताय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पंच कल्याणक अर्घ्य

दिव्य आत्मा गर्भ में आई, सपने देखे वामा ने।
रतन बरसते खुशियाँ छाई, अश्वसेन के आँगन में।।
दूज कृष्ण वैशाख दिवस था, शुभ लक्षण प्रगटित होते।
नगर बनारस की गलियों में, नर देवा हर्षित होते।।

ॐ ह्रीं वैशाख कृष्ण द्वितीयां गर्भ मंगलमण्डिताय श्री पार्श्वनाथाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पौष कृष्ण एकादशी पावन, धरती पर अवतार लिया।
श्याम वर्ण का सुन्दर तन पा, क्षणभर शान्ति अपार दिया।।
काशी नगरी धन्य हुई प्रभु, ऐरावत ले इन्द्र आया।
मेरु पर्वत न्हवन कराकर, सहस्र नयन दर्शन पाया।।

ॐ ह्रीं पौष कृष्ण एकादश्यां जन्म मंगल मण्डिताय श्री पार्श्वनाथाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पौष कृष्ण एकादशी का दिन, जन्म दिवस दीक्षाधारा।
लोकान्तिक अनुमोदन करके, शुभ भावों को शृंगारा।।

राजाओं सा वैभव पाकर, मन वैरागी बना रहा।
तीस बरस में दीक्षा लेकर, वन पर्वत में ध्यान करा।।

ॐ ह्रीं पौष कृष्ण एकादश्यां तप मंगल मण्डिताय श्री पार्श्वनाथाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

गहन साधना महामना की, वन पर्वत में अमल रही।
अहिक्षेत्र की धरा धाम में, स्थिर होकर अचल रही।।
चैत्र कृष्ण की आई चतुर्थी, चार घातियाँ नाश किया।
केवलज्ञानी पार्श्वनाथ का, सबने जय जयकार किया।।

ॐ ह्रीं चैत्र कृष्ण चतुर्थी दिने केवलज्ञान प्राप्ताय श्री पार्श्वनाथाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

श्रावण की शुक्ला सातम को, सम्मेदाचल ध्यान करें।
चार अघाति कर्म नाशकर, सिद्धालय प्रस्थान करें।।
स्वर्ण भद्र का कूट मनोहर, दर्शन वन्दन हितकारी।
पार्श्वनाथ के चरण कमल में, अर्घ समर्पित सुखकारी।।

ॐ ह्रीं श्रावण शुक्ल सप्तम्यां मोक्ष मंगल मण्डिताय श्री पार्श्वनाथाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जयमाला

विषय विकार विवर्जित तन मन, लोभ शत्रु का दमन किया।
चिदानन्द चैतन्य विहारी, श्रद्धा धर वन्दन किया।।
भव तारक हे पार्श्व जिनेश्वर, मम भक्ति स्वीकार करों।
दोष तिरेशठ रहित केवली, निज सम कर उद्धार करो।।1।।
नाम जाप से कार्य सिद्ध हो, श्रेष्ठ चतुष्टय धारी हो।
आत्म रमण कर ईश बनें प्रभु, मदन जीत अविकारी हो।।
भव तारक हे पार्श्व जिनेश्वर, मम भक्ति स्वीकार करो।
दोष तिरेशठ रहित केवली, निज सम कर उद्धार करो।।2।।
दिव्य नाद कर हर्षित शत नृप, चरण कमल पूजा करते।
मुनियों के हे महा मुनि कह, ढोल मजीरा सब बजते।।
भव तारक हे पार्श्व जिनेश्वर, मम भक्ति स्वीकार करो।
दोष तिरेशठ रहित केवली, निज सम कर उद्धार करो।।3।।

रत्न त्रय से भरी आत्मा, समवशरण से युक्त हुए।
क्षुधा तृषा की तपन मेटकर, द्विधा संग से मुक्त हुए।।
भव तारक हे पार्श्व जिनेश्वर, मम भक्ति स्वीकार करो।
दोष तिरेशठ रहित केवली, निज सम कर उद्धार करो।।4।।
अम्बर बनी दिशाएँ तेरी, मुक्ति रमा के वर प्यारे।
मोह क्षोभ से मुक्त जिनेश्वर, निराकार तन को धारे।।
भव तारक हे पार्श्व जिनेश्वर, मम भक्ति स्वीकार करो।
दोष तिरेसठ रहित केवली, निज सम कर उद्धार करो।।5।।
जन्म जरा का नाम नहीं, चिन्मूरत आनन्द पाया है।
क्रोध मान तज आत्मरमण कर, दर्श ज्ञान सुख पाया है।।
भव तारक हे पार्श्व जिनेश्वर, मम भक्ति स्वीकार करो।
दोष तिरेशठ रहित केवली, निज सम कर उद्धार करो।।6।।
मति श्रुत अवधि ज्ञान तजा, सर्वज्ञपने को महकाया।
स्वयं स्वयं का दिव्य रूप पा, तीन लोक में यश पाया।।
भव तारक हे पार्श्व जिनेश्वर, मम भक्ति स्वीकार करो।
दोष तिरेसठ रहित केवली, निज सम कर उद्धार करो।।7।।

धत्ता

यतियों में है श्रेष्ठ जिनन्दा, भव तारक है श्री अरिहन्ता।
विमल गुणों के समृद्ध चन्दा, नम्रीभूत है देव नरेन्दा।।
जिनपति मस्तक अहि ने धारा, पाप ताप सन्ताप है हारा।
'सौरभ सागर' नमता द्वारा, सिद्ध शिला सुख मिले अपारा।।

ॐ ह्रीं श्री पार्श्वनाथाय नमः जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा

दया क्षमा से युक्त हैं, पार्श्वनाथ भगवान।
लौकान्तिक पूजा करे, चरण कमल धर ध्यान।।
प्रतिदिन जो पूजा करे, समता उर में धार।
पार्श्व परस पा स्वर्ण बन, होवे भव से पार।।

(इत्याशीर्वादः परिपुष्पांजलिं क्षिपेत्)

श्री मंशापूर्ण महावीर पूजन

स्थापना

हे वीर प्रभो महावीर प्रभो, तेरे चरणों में आया हूँ।
सब पाप ताप संताप हरो, मैं अर्चन कर हर्षाया हूँ।।
आओ आओ प्रभु एक बार, मेरे मन का प्रक्षाल करों।
हे महाश्रमण हे वर्धमान, तुम सन्मति दे जंजाल हरों।।
प्रभु मंशापूरण करते हो, प्रभु संशय तिमिर भी हरते हों।
मैं मन से पूजा तेरी करूँ, सुख सिन्धु से भी भरते हों।।

ॐ ह्रीं श्रीमंशापूर्णमहावीरजिनेन्द्र! अत्र अवतर अवतर संवोषट् आह्वाननम्।

ॐ ह्रीं श्रीमंशापूर्णमहावीरजिनेन्द्र! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनम्।

ॐ ह्रीं श्रीमंशापूर्णमहावीरजिनेन्द्र! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधिकरणम्।

जल

जल का जलवा प्रभु जगति में, शुचिकर प्यास बुझाता है।
तेरी पूजा में जल अर्पित, जन्म जरा विनशाता है।।
नीर सहित हे महामुनि, मैं भक्ति सरिता लाया हूँ।
मंशापूरण महावीर की, पूजा कर हर्षाया हूँ।।

ॐ ह्री श्रीमंशापूर्णमहावीरजिनेन्द्राय जन्म-जरा-मृत्यु विनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

चन्दन

चन्दन की प्रभु शीतलता तो, तन का ताप मिटाती है।
प्रभु पूजा भक्ति का चन्दन, वन्दन बन मुस्काती है।।
भव भव की ज्वाला शान्त करूँ, प्रभु चन्दन चरण चढ़ाऊँगा।
श्री मंशापूरण महावीर, मैं गीत आपके गाऊँगा।।

ॐ ह्रीं श्रीमंशापूर्णमहावीरजिनेन्द्राय भवातापविनाशनाय चन्दनं निर्वपामीति स्वाहा।

अक्षत

अक्षय सुख का अनुपम वैभव, भोगों में फँस खोया हूँ।
जीवन धन्य न कर पाया प्रभु, मोह नींद में सोया हूँ।।

चरणों में अक्षत अर्पित कर, अक्षय निधी को पाऊँगा।
श्री मंशापूरण महावीर, मैं कर्म कलंक मिटाऊँगा।।

ॐ ह्रीं श्रीमंशापूर्णमहावीरजिनेन्द्राय अक्षय-पद-प्राप्तये अक्षतं निर्वपामीति स्वाहा।

पुष्प

यह कोमल कुसुम मनोहर है, जो क्षण भंगुरता दर्शाता।
यौवन जीवन पा भोगों में, क्यूँ मन मेरा रच पच जाता।।
हे बाल ब्रह्मचारी जिनवर, यह भाव पुष्प स्वीकार करो।
श्री मंशापूरण महावीर जी, काम नाश उद्धार करो।।

ॐ ह्रीं श्रीमंशापूर्णमहावीरजिनेन्द्राय कामबाणविध्वंसनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

नैवेद्य

क्षुधा वेदिनी महाभयानक, भक्ष्य अभक्ष्य सदा चाहे।
रात दिवस का भेद गिने ना, धर्म कर्म सब विनशावे।।
हे महायति तेरी चर्या कर, क्षुधा रोग विनशाऊँगा।
श्री मंशापूरण महावीर की, गौरव गाथा गाऊँगा।।

ॐ ह्रीं श्रीमंशापूर्णमहावीरजिनेन्द्राय क्षुधा-रोग-विनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दीप

जगमग जगमग जलता दीपक, बाहर उजियाला करता।
अन्तर मन आलोकित होवे, भक्ति दीप माला धरता।।
दिव्य ज्ञान की किरणें फूटें, भाव यही मैं भाता हूँ।
श्री मंशापूरण महावीर, मैं चरणन दीप चढ़ाता हूँ।।

ॐ ह्रीं श्रीमंशापूर्णमहावीरजिनेन्द्राय मोहान्धकारविनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

धूप

काम क्रोध मद लोभ मोह की, भीतर ज्वाला जलती है।
नित नूतन परिवेश बनाकर, निज आतम को छलती है।।
दश विध धूप अगन में खेकर, दश धर्मों को पाऊँगा।
श्री मंशापूरण पूजा करके, आठों कर्म जलाऊँगा।।

ॐ ह्रीं श्रीमंशापूर्णमहावीरजिनेन्द्राय अष्ट-कर्मदहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

फल

भाव समर्पण का फल लेकर, भक्ति में अनुरक्त हुआ।
सिद्धालय का अमृत फल पा, कर्म जाल से मुक्त हुआ।।
हे सन्मति दाता बुद्धि दो, ना लौकिक फल की चाह करूँ।
श्री मंशापूरण महावीर जी, धर्म लीन शिव राह वरूँ।।

ॐ ह्रीं श्रीमंशापूर्णमहावीरजिनेन्द्राय मोक्ष महाफल प्राप्तये फलं निर्व. स्वाहा।

अर्घ्य

श्रद्धा का जल कर में लेकर, भक्ति का चन्दन लाया।
अक्षत कुसुम चरूवर पावन, दीप धूप वन्दन भाया।।
सिद्ध शिला फल चाह लिये प्रभु, आठों द्रव्य चढ़ाऊँगा।
श्री मंशापूरण महावीर की, पूजा कर सुख पाऊँगा।।

ॐ ह्रीं श्रीमंशापूर्णमहावीरजिनेन्द्राय अनर्घ्य-पद-प्राप्तये अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

पंचकल्याणक के अर्घ

गर्भ कल्याणक

तीन ज्ञान के धारी होकर, गर्भ वास नव मास रहे।
मंजुषा जो देव रचित थी, उस पर ही प्रवास करें।।
परिवर्तन ग्रह राज्य नगर का, पुण्य जीव का दर्शाता।
सप्त खण्ड का महल अनुपम, कुण्डलपुर में बन जाता।।8।।

ॐ ह्रीं आषाढ शुक्ला षष्ठ्यां गर्भमंगल- मंडिताय श्रीमंशापूर्णमहावीरजिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जन्म कल्याणक

चैत सुदी तेरस का शुभ दिन, तीर्थंकर अवतार हुआ।
तीन लोक में शान्ति छाई, घर घर मंगलाचार हुआ।।
देव इन्द्र हर्षित हो करके, कुण्डलपुर तत्क्षण आया।
ऐरावत पर बिठा प्रभु को, मेरु पर था न्यवहन कराया।।1।।

ॐ ह्री चैत्र शुक्ला त्रयोदश्यां जन्म-मंगल-मण्डिताय श्रीमंशापूर्णमहावीर जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

तप कल्याणक

वस्त्र तजा आभूषण तजकर, पंच मुट्ठी कच लोच किया।
सिद्धों को वे नमस्कार कर, वेश दिगम्बर बोध लिया।।
यथाजात मुद्रा में रहकर, यथाख्यात चारित्र वरा।
परम पूज्य जग श्रेष्ठ धर्म पा, निज आतम पवित्र करा।।6।।

ॐ ह्रीं मंगसिरवदी-दशमी-तपोमंगल- मंडिताय श्रीमंशापूर्णमहावीरजिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

ज्ञान कल्याणक

चार ज्ञान के धारी वीरा, ऋद्धि तिरेसठ को पाए।
निज चैतन्य गुणों में रमते, स्वयं स्वयंभू कहलाए।।
वर्धमान बन निज स्वरूप में, वर्धमान बढ़ते जाए।
ऋजुकुला के तट पर आकर, केवलज्ञान के दीप जलाए।।1।।

ॐ ह्रीं बैसाखसुदी-दशमी-केवलज्ञान-मंडिताय श्रीमंशापूर्णमहावीरजिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मोक्ष कल्याणक

शुक्ल ध्यान में स्थिर होकर, कर्म अघाति विनशावें।
सूक्ष्म क्रिया प्रतिपाति में रम, निराकारता प्रगटावें।।
कार्तिक कृष्णा के अन्तिम क्षण, पावापुर से गए निर्वाण।
अर्घ चढ़ाऊँ मोद मनाऊँ, मम आतम का हो कल्याण।।5।।

ॐ ह्रीं कार्तिकवदी अमावस्या मोक्षमंगल-मंडिताय पावापुर-पद्म सरोवरमध्ये सर्व-कर्म-विमुक्ताय श्रीमंशापूर्णमहावीरजिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मंशापूर्ण महावीर भगवान का प्रगटोत्सव

भू भीतर देवों द्वारा ही, पूजा सेवा नित होती।
वर्षों तक ना पुण्योदय था, दर्शन फिर कैसे होती।।
सात नवम्बर भू से प्रगटे, मंशापूरण श्री भगवान।
अर्घ चढ़ाऊँ भक्ति गाऊँ, वर्धमान महावीर महान।।7।।

ॐ ह्रीं मंगसिर सप्तयां तिथौ भूगर्भ-प्रगटिताय दिव्य-दर्शनाय श्रीमंशापूर्ण-महावीरजिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जयमाला

जय वीरा बन्दो महान, जय स्याद्वाद सूरज जहान।
जय कर्म विजेता आत्म धीर, जय निजानंद सब हरत पीर।।1।।

जय पंच नाम धारी कहाय, जय वर्धमान गुण गण बढ़ाय।
जय न्यहवन समय में श्वास लीन, जय वीर नाम सुरेन्द्र दीन।।2।।

दो मुनि ने देखा बाल रूप, फिर नाम रखा सन्मति अनूप।
गजराज उपद्रव करता आय, अतिवीर नाम जय करके पाय।।3।।

देवों ने बल का यश गाया, संगम तत्क्षण धरती आया।
खेले बालक जिस वृक्ष पास, विकराल धरा था रूप नाग।।4।।

भय से भागे सारे बालक, पर वर्धमान सबके पालक।
नागों पर मुष्ठी प्रहार किया, तत्क्षण संगम मनुहार किया।।5।।

तुम अद्भुत बलशाली महान, गुणशाली धरा महावीर नाम।
प्रभु नाम में शक्ति है अनन्त, जो जपता कटते कर्म बन्ध।।6।।

भई तीस वर्ष की उम्र आप, छोड़े जग झंझट राज पाठ।
तप बारह वर्ष महा कीना, सब घाति कर्म भगा दीना।।7।।

प्रभु समवशरण रचना महान, दर्शन पा भक्त करे प्रणाम।
दिन पर दिन छयासठ बीते, प्रभु वाणी बिन रीते रीते।।8।।

तब इन्द्रभूति गौतम आया, प्रभुदर्श किया चित उमगाया।
पहले ही दर्शन का प्रभाव, सब वस्त्र तजा पाया स्वभाव।।9।।

पाँच शतक थे शिष्य आय, केशलोंच करी दीक्षा सुपाय।
श्री महावीर वाणी थी खिरी, सब भव्य जनों पर है बिखरी।।10।।

चहुँ ओर धरम विस्तार हुआ, प्रभु सत्य अहिंसा प्रचार हुआ।
प्रभु मूरत गढ़ पूजा करते, निधत्त निकाचित क्षय करते।।11।।

धीरे धीरे बहुकाल गया, घट बढ़ता धर्म सँभाल लिया।
आतंकी ने मन्दिर तोड़ा, प्रभु ने भू से नाता जोड़ा।।12।।

वर्षों पर वर्षों बीत गए, प्रभु धरती के ही मीत हुए।
सात नवम्बर शुभ दिन आया, झाड़ली में प्रभु दर्श दिखाया॥13॥

भक्तों ने प्रभु दर्शन कीना, खुशियों से जयकारा कीना।
तभी भक्त गुरु सम्मुख आए, महावीर तस्वीर दिखाए॥14॥

सौरभ सागर ने रूप लखा, कुछ अतिशय ऐसा भाव जगा।
मंशापूरण जाप किया है, प्रतिमा का सानिध्य लिया है॥15॥

गुरु भक्तों ने साथ निभाया, प्रतिमा गाजियाबाद है लाया।
पुण्य उदय भक्तों का आया, गंगानगर में दर्श दिखाया॥16॥

प्रतिमा से आवरण हटाया, इन्द्रों ने बरसात कराया।
सन अठारह माह जुलाई, रथ यात्रा से करी विदायी॥17॥

धूम-धाम से चली सवारी, प्रभु विहार की शोभा न्यारी॥
गंगनहर के एक किनारे, मंशापूरण वीर पधारे॥18॥

दिव्य शान्त है मूरत तेरी, दर्शन से मिटती भव फेरी।
जो भी मन से ध्यान लगाता, मंशापूर्ण फल मिल जाता॥19॥

भक्ति भाव से ज्योति जलावे, सब संकट को दूर भगावे।
महावीर जयमाला गावे, सुख शान्ति समृद्धि पावे॥20॥

ॐ ह्रीं श्रीमंशापूर्णमहावीरजिनेन्द्राय जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

धत्ता – **जय जय महावीरा भवदधि तीरा, गुण गंभीरा अतिवीरा।**
मम धर्म बढ़ावे जिनपद पावें, सौरभ सागर नत धीरा॥

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं अर्हं श्रीमंशापूर्णमहावीरजिनेन्द्र पंचकल्याणक संयुक्त शिवपद-कर्त्ता-भव-जल-निधी सर्वविघ्नव्याधिहर्ता तव भक्ति प्रसादात् सर्व जीव कल्याणमस्तु दीर्घायुरस्तु शुभमस्तु सुकीर्तिरस्तु धन-धान्य समृद्धिरस्तु आरोग्यमस्तु सर्व जीव रोग शोक पीड़ा विनाशनं भवतु सम्यग्दर्शन ज्ञान-चारित्र-वृद्धिरस्तु सर्व-ऋद्धि-सिद्धि-भवतु रक्ष रक्ष हूँ फट् स्वाहा।

श्री नवग्रह जिनदेव पूजन

स्थापना

जय तीर्थङ्कर आत्म हितंकर, पद्म चन्द्र प्रभु जिनराज।
पुष्पदन्त जय वासुपूज्य जय, शान्तिनाथ जी जग सरताज।।
आदिनाथ जय मुनिसुव्रत जय, नेमि पारस ध्यान धरूँ।
आह्वानन स्थापन करके, गृह कर्म दोष अवसान करूँ।।

ॐ ह्रीं श्री-पद्मप्रभु-चन्द्रप्रभु-वासुपूज्य-शांतिनाथ-आदिनाथ-पुष्पदंत-मुनिसुव्रत-नेमिनाथ-पारसनाथ-नवग्रह-अरिष्टनिवारक नव-जिनेन्द्राय नमः अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्वाननम्।

ॐ ह्रीं श्री पद्मप्रभु-चन्द्रप्रभु-वासुपूज्य-शांतिनाथ-आदिनाथ-पुष्पदंत-मुनिसुव्रत-नेमिनाथ-पारसनाथ-नवग्रह-अरिष्टनिवारक नव-जिनेन्द्राय नमः अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनम्।

ॐ ह्रीं श्री-पद्मप्रभु-चन्द्रप्रभु-वासुपूज्य-शांतिनाथ-आदिनाथ-पुष्पदंत-मुनिसुव्रत-नेमिनाथ-पारसनाथ-नवग्रह-अरिष्टनिवारक नव-जिनेन्द्राय नमः अत्र मम सन्निहतो भव भव वषट् सन्निधकरणम्।

जल

सिद्धक्षेत्र की पावन भूमि, से निर्मल जल ले आउँ।
श्री जिनवर के चरण पूजकर, जन्मजरा मृत विनशाउँ।।
आदि पदम चन्दा प्रभु स्वामी, वासुपूज्य शान्ति सुखदाय।
मुनिसुव्रत श्री नेमि पारस, पुष्पदंत पद शीश नवाय।।

ॐ ह्रीं श्री-पद्मप्रभु-चन्द्रप्रभु-वासुपूज्य-शांतिनाथ-आदिनाथ-पुष्पदंत-मुनिसुव्रत-नेमिनाथ-पारसनाथ-नवग्रह-अरिष्टनिवारक नव-जिनेन्द्राय नमः जन्म-जरा-मृत्यु-विनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

चन्दन

आत्म वृक्ष चंदन सम सुरभित, अष्टकर्म के नाग पले।
भक्ति मोर का दिव्य नाद सुन, आत्मवृक्ष को छोड़ चले।।
आदि पदम चन्दा प्रभु स्वामी, वासुपूज्य शान्ति सुखदाय।
मुनिसुव्रत श्री नेमि पारस, पुष्पदंत पद शीश नवाय।।

ॐ ह्रीं श्री-पद्मप्रभु-चन्द्रप्रभु-वासुपूज्य-शांतिनाथ-आदिनाथ-पुष्पदंत-मुनिसुव्रत-नेमिनाथ-पारसनाथ-नवग्रह-अरिष्टनिवारक नव-जिनेन्द्राय नमः भव-ताप-विनाशनाय चन्दनं निर्वपामीति स्वाहा।

अक्षत

श्वेत वर्ण मोती सम उज्ज्वल, अक्षय अक्षत लाए हैं।
सिद्धालय पा जाएँ भगवन, अक्षत चरण चढ़ाए हैं।।
आदि पदम चन्दा प्रभु स्वामी, वासुपूज्य शान्ति सुखदाय।
मुनिसुव्रत श्री नेमि पारस, पुष्पदंत पद शीश नवाय।।

ॐ ह्रीं श्री-पद्मप्रभु-चन्द्रप्रभु-वासुपूज्य-शांतिनाथ-आदिनाथ-पुष्पदंत-मुनिसुव्रत-नेमिनाथ-पारसनाथ-नवग्रह-अरिष्टनिवारक नव-जिनेन्द्राय नमः अक्षय-पद-प्राप्ताय अक्षतं निर्वपामीति स्वाहा।

पुष्प

मन उपवन की क्यारी से कुछ, भक्ति सुमन चुन लाया हूँ।
चरण कमल की सौरभ पाने, पुष्प चढ़ा हर्षाया हूँ।।
आदि पदम चन्दा प्रभु स्वामी, वासुपूज्य शान्ति सुखदाय।
मुनिसुव्रत श्री नेमि पारस, पुष्पदंत पद शीश नवाय।।

ॐ ह्रीं श्री-पद्मप्रभु-चन्द्रप्रभु-वासुपूज्य-शांतिनाथ-आदिनाथ-पुष्पदंत-मुनिसुव्रत-नेमिनाथ-पारसनाथ-नवग्रह-अरिष्टनिवारक नव-जिनेन्द्राय नमः कामवाण-विध्वंसनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

नैवेद्य

क्षुधा वेदिनी महाडाकिनी, सदा पाप करवाती है।
चरण कमल नैवेद्य चढ़ाऊँ, भव संताप मिटाती है।।
आदि पदम चन्दा प्रभु स्वामी, वासुपूज्य शान्ति सुखदाय।
मुनिसुव्रत श्री नेमि पारस, पुष्पदंत पद शीश नवाय।।

ॐ ह्रीं श्री-पद्मप्रभु-चन्द्रप्रभु-वासुपूज्य-शांतिनाथ-आदिनाथ-पुष्पदंत-मुनिसुव्रत-नेमिनाथ-पारसनाथ-नवग्रह-अरिष्टनिवारक नव-जिनेन्द्राय नमः क्षुधा-रोग-विनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दीप

ना बाती ना घृत का दीपक, फिर भी त्रिभुवन उजियारा।
केवल ज्ञान की ज्योति अनुपम, दूर भगाती अंधियारा।।
आदि पदम चन्दा प्रभु स्वामी, वासुपूज्य शान्ति सुखदाय।
मुनिसुव्रत श्री नेमि पारस, पुष्पदंत पद शीश नवाय।।

ॐ ह्रीं श्री-पद्मप्रभु-चन्द्रप्रभु-वासुपूज्य-शांतिनाथ-आदिनाथ-पुष्पदंत-मुनिसुव्रत-नेमिनाथ-पारसनाथ-नवग्रह-अरिष्टनिवारक नव-जिनेन्द्राय नमः मोहांधकारविनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

धूप

धूपायन में धूप समर्पित, कर्म धुम्र मेटो स्वामी।
पाप ताप संताप मिटाओ, त्रिभुवन के अन्तर्यामी।।
आदि पदम चन्दा प्रभु स्वामी, वासुपूज्य शान्ति सुखदाय।
मुनिसुव्रत श्री नेमि पारस, पुष्पदंत पद शीश नवाय।।

ॐ ह्रीं श्री-पद्मप्रभु-चन्द्रप्रभु-वासुपूज्य-शांतिनाथ-आदिनाथ-पुष्पदंत-मुनिसुव्रत-नेमिनाथ-पारसनाथ-नवग्रह-अरिष्टनिवारक नव-जिनेन्द्राय नमः अष्टकर्म-दहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

फल

फल की इच्छा सभी कार्य में, सब प्राणी को होती है।
पूजा का फल मोक्ष महाफल, यही भक्ति की ज्योति है।।
आदि पदम चन्दा प्रभु स्वामी, वासुपूज्य शान्ति सुखदाय।
मुनिसुव्रत श्री नेमि पारस, पुष्पदंत पद शीश नवाय।।

ॐ ह्रीं श्री-पद्मप्रभु-चन्द्रप्रभु-वासुपूज्य-शांतिनाथ-आदिनाथ-पुष्पदंत-मुनिसुव्रत-नेमिनाथ-पारसनाथ-नवग्रह-अरिष्टनिवारक नव-जिनेन्द्राय नमः मोक्ष-फल-प्राप्ताय फलं निर्वपामीति स्वाहा।

अर्घ्य

जल गंधाक्षत पुष्प दीप, नैवेद्य धूप फल लाए हैं।
ग्रहकर्म दोष मेटो सारे प्रभु, चरणन अर्घ चढ़ाए हैं।।
आदि पदम चन्दा प्रभु स्वामी, वासुपूज्य शान्ति सुखदाय।
मुनिसुव्रत श्री नेमि पारस, पुष्पदंत पद शीश नवाय।।

ॐ ह्रीं श्री-पद्मप्रभु-चन्द्रप्रभु-वासुपूज्य-शांतिनाथ-आदिनाथ-पुष्पदंत-मुनिसुव्रत-नेमिनाथ-पारसनाथ-नवग्रह-अरिष्टनिवारक नव-जिनेन्द्राय नमः अनर्घ-पद-प्राप्ताय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा– **नवग्रहों के भवन में, अकृत्रिम जिनदेव।**
एक सो दश योजन बसें, नवग्रहों के देव।।

(मण्डलस्योपरि-पुष्पांजलिं क्षिपेत्)

सूर्य ग्रह अरिष्ट निवारक श्री पद्मप्रभु भगवान का अर्घ्य

आतम ध्यानी महा विरागी, पदम प्रभु जिनराज महान।
बंधन कुंजर देख सके ना, धारा मुनिव्रत कर्मन हान।।

जन्म राशि अक्षांश समय से, कर्म उदय आ कष्ट दिए।
सूर्य ग्रह के दोष सतावे, पदम प्रभु जप नष्ट किए।।1।।

ॐ ह्रीं सूर्यग्रह-अरिष्टनिवारक श्री-पद्मप्रभुजिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

चन्द्र ग्रह अरिष्ट निवारक श्री चन्द्रप्रभु भगवान का अर्घ्य

बादल छटता देख चंद्र ने, क्षणभंगुर जग को जाना।
लोकांतिक शिविका ले आये, दीक्षा वन ले मुनि बाना।।
चंद्र नाथ की चंद कृपा से, चंद्र दोष सब टल जाएँ।
चंद्रप्रभु अरिहंताणं जप, सर्व दोष मम गल जाएँ।।1।।

ॐ ह्रीं चन्द्रग्रह-अरिष्टनिवारक श्री-चन्दप्रभुजिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

मंगल दोष निवारक श्री वासुपूज्य भगवान का अर्घ्य

वासुपूज्य जिन बाल ब्रह्म हैं, लाल वर्ण गहरा पाया।
मंगल दोष निकट ना आवे, निश्चल मन से जो ध्याया।।
प्रतिशोध का भाव जगे ना, समता मय जीवन पाऊँ।
चरणों में शुभ अर्घ्य समर्पित, सिद्ध प्रभु को नित ध्याऊँ।।1।

ॐ ह्रीं मंगलग्रह-अरिष्टनिवारक श्री-वासुपूज्यजिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

बुध ग्रह अरिष्ट निवारक श्री शान्तिनाथ भगवान का अर्घ्य

चक्रवर्ती तीर्थंकर पद पा, कामदेव से सुंदर थे।
वैभव रूप धरम पाकर भी, निज आतम के अंदर थे।।
शांति नाथ सह उपाध्याय की, जाप हरें बुध ग्रह पीड़ा।
जन्म कुंडली दोष निवारे, शांतिनाथ नित जप धीरा।।1।।

ॐ ह्रीं बुधग्रह-अरिष्टनिवारक श्री-शांतिनाथजिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

गुरु ग्रह अरिष्ट निवारक श्री आदिनाथ भगवान का अर्घ्य

आदिनाथ जी श्रेष्ठ गुरु हैं, बृहस्पति नित गुण गाये।
गुरु ग्रह पीड़ा नाम जाप से, दूर रहे ना दुख लाये।।
आदर देकर आदर पायें, जो विनम्र व्यवहार करें।
छोटे होकर दिखे बड़प्पन, गुरुजन भी सत्कार करें।।1।।

ॐ ह्रीं गुरुग्रह-अरिष्टनिवारक श्री-आदिनाथजिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

शुक्र ग्रह अरिष्ट निवारक श्री पुष्पदंत भगवान का अर्घ्य

सुख दाता सब दोष निवारे, कर्म विनाशी श्री भगवान।
पुष्पदंत की जाप करो नित, शुक्र ग्रह पीड़ा की हान।।
जल में रहकर मगरमच्छ से, बैर नहीं करते ज्ञानी।
शुक्रगुजार करो सब जन का, नम्र मिले या अभिमानी।।1।।

ॐ ह्रीं शुक्रग्रह-अरिष्टनिवारक श्री-पुष्पदंतजिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शनिग्रह अरिष्ट निवारक श्री मुनिसुव्रत भगवान का अर्घ्य

अपना कर्म प्रभाव भाव ही, शनि पीड़ा वर्धन करता।
मुनिसुव्रत-सा संयम पाले, ग्रह बाधा हर क्षण हरता।।
णमो लोए सव्व साहूणं की, मुनिसुव्रत संग जाप करें।
सादा जीवन रखकर सबके, क्लेश दोष सब माफ करें।1।।

ॐ ह्रीं शनिग्रह-अरिष्टनिवारक श्री-मुनिसुव्रतजिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

राहु ग्रह अरिष्ट निवारक श्री नेमिनाथ भगवान का अर्घ्य

नेमिनाथ जी दया मूर्ति हैं, पशु पीड़ा लख दीक्षा ली।
हिंसक जीव ही राहु जग में, इनसे बचना शिक्षा दी।।
रोगी को औषध देकर के, पक्षी को दाना डालें।
दया भाव सब जीवों पर रख, राहु ग्रह दुख सब टालें।।1।।

ॐ ह्रीं राहुग्रह-अरिष्टनिवारक श्री-नेमिनाथजिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

केतु ग्रह अरिष्ट निवारक श्री मल्लिनाथ भगवान एवं श्री पार्श्वनाथ भगवान का अर्घ्य

केतु का जो कष्ट घनेरा, पारस भक्ति दूर करें।
करो सदा पूजा जलधारा, केतु ग्रह सुख पूर करें।।
कुष्ठ चर्म या अग्नि पीड़ित, दया दान कर कष्ट हरें।
केतु के हेतु जो जग में, साहूणं पढ़ इष्ट वरें।।1।।

ॐ ह्रीं केतुग्रह-अरिष्टनिवारक श्री-पार्श्वनाथजिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

श्री मल्लिनाथ भगवान का अर्घ्य

मन मर्कट-सा मचल रहा हो, मंत्र जाप वश में करता।
इन्द्रिय वश कर मल्लि नाथ सम, ब्रह्मचर्य व्रत दृढ़ रहता।।
कौतुकता में केतु ग्रह भी, किञ्चित ना नुकसान करें।
मोह मल्ल मल्लि सम नाशे, मल्लिनाथ गुणगान करें।।2।।

ॐ ह्रीं केतुग्रह-अरिष्टनिवारक श्री-मल्लिनाथजिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जयमाला

वीतराग जिनदेव की, भक्ति करे निःराग।
रागी मैं भक्ति करूँ, त्याग मार्ग अनुराग।।

लोक प्रकाशक तीर्थंकर हैं, पाप विनाशक कृपा निधान।
रत्नत्रय के दिव्य रूप हैं, जग हितकर भी देव महान।।
उपमा से महिमा गरिमा का, व्यवहारिक संबंध रहा।
कर्मातीत निरत शुद्धातम, सिद्धालय आनन्द महा।।1।।

क्षायिक नव लब्धि के धारी, नव ग्रह के जिन देव कहे।
भक्ति पूजा निशदिन करता, नव ग्रह के सब कष्ट बहे।।
नव तीर्थंकर नवकार जप, नवधा भक्ति नित्य करें।
नव निधि नव जीवन पाकर के, नव नव आनंद नित्य वरें।2।।

दो गोरे दो लाल मनोहर, दो काले दो हरे महान।
सोलह कंचनमय तीर्थंकर, कर्म दोष सब हरे जहान।।
मन से भक्ति करूँ मैं जिनवर, कर्म दोष से मुक्त रहूँ।
जब तक तन में साँस चलेगी, तब तक तव पद भक्त रहूँ।3।।

तारण हारे पद्म चन्द जिन, वासुपूज्य शांति जिनराज।
आदिनाथ श्री पुष्पदंत प्रभु, मुनिसुव्रत नेमि महाराज।।
पारसनाथ जिनेश्वर पूजूँ, दया दृष्टि नित बनी रहे।
मिथ्यामत से बचा रहुँ बस, श्रद्धा जिनपर जमी रहें।।4।।

न अपराध न दोष करूँ मैं, पापों का ना करूँ चयन।
पुण्य व्रती सेवा संयम धर, करूँ सदा निर्वाण गमन।।

परमेष्ठी की भक्ति करूँ मैं, जिनवाणी का अध्ययन हो।
दीन दुखी पशु दश विध मुनियों, की सेवामय जीवन हो॥5॥

नर भव देवों से ऊँचा है, त्याग साधना कर सकते।
पंचम से चौदह गुण श्रेणी, चढ़कर सिद्धालय वरते॥
देव देवियाँ नर वश होकर, कार्य सिद्धि कर जाते हैं।
चमत्कार या अतिशय करके, मुनि सखा बन जाते हैं॥6॥

ग्रह दोष में कारण माने, देव सभी खेचर जानें।
तीर्थंकर के जन्म काल पर, भक्ति करें निज हित माने॥
भवनवासी में शंख ध्वनि कर, भेरी नाद व्यन्तर करते।
सिंहनाद ज्योतिष देवाकर, स्वर्गों में घण्टे बजते॥7॥

जय हो जय हो दिव्यनाद कर, देव सभी धरती आते।
बालक की आराधन करके, दुर्लभ मानुष गुण गाते॥
सर्व देव के इष्ट जिनेश्वर, चौबीसों तीर्थंकर हैं।
मालिक की भक्ति कर प्राणी, कष्ट हरे ये जिनवर हैं॥8॥

जब कर्मोदय आ दुख देते, दुनिया हँसती हम रोते हैं।
जिससे मन की बात कहुँ, वे रस ले पर से कहते हैं॥
नश्वर दुनिया में अपना था, ना अपना कोई प्राणी।
फूल शूल में समता रख शुभ, कर्म करूँ हे शिवगामी॥9॥

दुःखों का विष पीकर जीया, श्रद्धामृत अब पीऊँगा।
ज्योति पुँज है दया निधि, मैं अजर अमर हो जीऊँगा॥
स्वस्थ रहूँ मैं व्यस्त रहूँ, मैं धर्म कार्य में मस्त रहूँ।
द्वेष करूँ ना दीन रहूँ प्रभु, पाप कर्म से मुक्त रहूँ॥10॥

प्रस्तर में मूरत को ढूंढे, जंगल में मंजिल की राह।
कोलाहल में गीत ढूंढले, मावस में किरणों की चाह॥
साहस हो उत्साह लगन हो, जग सारे बौने होंगे।
मनराजी जग राजी जिनवर, कृपा दृष्टि तेरे होंगे॥11॥

मैं हूँ भव भव का दुखिया, तेरे चरणों में आया हूँ।
आओ आओ प्रभु दर्शन दो, मैं यही भावना भाया हूँ॥

इक बार सहारा दो जिनवर, सब कष्ट मिटे मुक्ति पाऊँ।
मन कमल खिला दो किरणों से, तव भक्ति में ही खो जाऊँ॥12॥

आँखों से दर्शन तेरे हो, हाथों से नित्य करूँ पूजन।
कदमों से चलकर दर आऊँ, अर्न्तमन से होवें सुमिरन॥
हे महागुणी! निर्ग्रन्थ देव! हे धर्म वीर! ध्रुव धाम रहे।
हे ज्ञानेश्वर! हे परमेश्वर! सौरभ सागर प्रणाम कहे॥13॥

धत्ता

जय नव जिनदेवा, कर्म खिपेवा, सब सुखदेवा, हितकारी।
जय विघ्न विनाशी, ज्ञान प्रकाशी, अविनाशी, मंगलकारी॥

ॐ ह्रीं श्री नवग्रह अरिष्ट निवारक चतुर्विंशती जिनेन्द्राय नमः जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा– नवग्रहों की शान्ति को, चरण नमूँ शत बार।
नव लब्धि पाऊँ प्रभु, गा गा मंगलाचार॥

शांति शांति शांतिधारा
(पुष्पांजलिं क्षिपेत्)

कोई भी अक्षर मंत्र रहित नहीं है,
कोई वृक्ष का अवयव औषधि रहित नहीं है,
कोई भी व्यक्ति योग्यता विहीन नहीं है
इसकी योजना करके
इसको लाभप्रद बनाने वाला ही दुर्लभ है।

श्री लघु चौबीसी पूजन (विधान)

स्थापना

ऋषभ अजित संभव अभिनन्दन, सुमतिनाथ स्वामी गुणखान।
पद्म सुपारस चन्दा प्रभु जी, पुष्पदन्त जिन कर लूँ ध्यान॥
हे शीतल प्रभु शीतल करदो, श्रेयनाथ जिन हृदय विशाल।
वासुपूज्य पद बाल ब्रह्म हैं, विमल अनन्त धरम जयमाल॥
शान्ति कुन्थु अर मल्लि जिनेश्वर, मुनिसुव्रत व्रत पाऊँगा।
नमिनाथ नम नेमि शरण पा, पारस वीर को ध्याऊँगा॥
चौबीसों जिनराज हमारे, आज पुकारूँ करुणा धार।
अत्र पधारो हृदय विराजो, कर्म खपाओ हे अविकार॥
तीर्थंकर हे धर्म शिरोमणि, कर्म नाश भव पार करो।
भक्ति भाव से पूजा करता, मम विनती स्वीकार करो॥

ॐ ह्रीं ऋषभादि-महावीरपर्यन्त-चतुर्विंशति तीर्थंकर! अत्र अवतर अवतर संवोषट् आह्वाननम्। अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनम्। अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधिकरणम्।

जल

जग की ज्वाला में जल जल कर, जीवन व्यर्थ गवाया है।
जल की धारा चरण कमल दें, जन्म जरा विनशाया है॥
तीर्थंकर हे चौबीस जिनवर, जलधारा स्वीकार करो।
पाप ताप संताप हरण कर, जगति का उद्धार करो॥

ॐ ह्रीं ऋषभादि-महावीरपर्यन्त-चतुर्विंशतितीर्थंकरेभ्यो जन्म-जरा-मृत्यु-विनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

चन्दन

चन्दन चुटकी ले आया प्रभु, वन्दन भाव जगा करके।
शीतल सुरभित मन हो जाए, पूजा पाठ रचा करके॥
तीर्थंकर हे चौबीस जिनवर, चन्दन यह स्वीकार करो।
पाप ताप संताप हरण कर, जगति का उद्धार करो॥

ॐ ह्रीं ऋषभादि महावीरपर्यन्त चतुर्विंशति तीर्थंकरेभ्यः संसारताप विनाशनाय चन्दनं निर्वपामीति स्वाहा।

अक्षत

उज्ज्वल तन्दुल भाव मृदुल कर, श्री जिन सम्मुख ले आऊँ।
अक्षय निधी अक्षय संयम धर, सिद्धालय को पा जाऊँ॥
तीर्थंकर हे चौबीस जिनवर, अक्षत यह स्वीकार करो।
पाप ताप संताप हरण कर, जगति का उद्धार करो॥

ॐ ह्रीं ऋषभादि-महावीरपर्यन्त-चतुर्विंशति-तीर्थंकरेभ्यो अक्षय-पदप्राप्ताय अक्षतं निर्वपामीति स्वाहा।

पुष्प

हृदय कमल कोमल करुणामय, काम बाण से रहित करो।
इन्द्रिय भोग तजूँ मैं जिनवर, ब्रह्मभाव को उदित करो॥
तीर्थंकर हे चौबीस जिनवर, पुष्पाञ्जलि स्वीकार करो।
पाप ताप संताप हरण कर, जगति का उद्धार करो॥

ॐ ह्रीं ऋषभादि-महावीरपर्यन्त-चतुर्विंशति-तीर्थंकरेभ्यो कामबाण-विध्वंसनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

नैवेद्य

इच्छाओं को दूर भगाया, नित उपवास किया करते।
क्षुधा वेदिनी नाश करन को, अन्नपान तजा करते॥
तीर्थंकर हे चौबीस जिनवर, नैवेद्यम् स्वीकार करो।
पाप ताप संताप हरण कर, जगति का उद्धार करो॥

ॐ ह्रीं ऋषभादि-महावीरपर्यन्त-चतुर्विंशति-तीर्थंकरेभ्यो क्षुधारोग-विनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दीप

मिथ्यातम में फँसा रहा पर, अन्तर दीप न जल पाया।
तेरी अनुपम दिव्य ज्योति से, अन्तर मन उज्ज्वल छाया॥
तीर्थंकर हे चौबीस जिनवर, जगमग दीप स्वीकार करो।
पाप ताप संताप हरण कर, जगति का उद्धार करो॥

ॐ ह्रीं ऋषभादि-महावीरपर्यन्त-चतुर्विंशति-तीर्थंकरेभ्यो मोहान्धकार-विनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

धूप

दीक्षा लेकर महा तपस्या, करते चौबीसों मुनिराज।
योग साधना निजानन्दमय, अद्भुत अनुभूति निजसाध॥

तीर्थंकर हे चौबीस जिनवर, धूपं यह स्वीकार करो।
पाप ताप संताप हरण कर, जगति का उद्धार करो॥

ॐ ह्रीं ऋषभादि-महावीरपर्यन्त-चतुर्विंशति-तीर्थंकरेभ्यो अष्टकर्म-दहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

फल

तरुवर फल तन पुष्ट करावें, बाहर बढ़ता फलता है।
अन्तर मन का मोक्ष महाफल, भक्ति ध्यान से मिलता है॥
तीर्थंकर हे चौबीस जिनवर, श्रद्धा फल स्वीकार करो।
पाप ताप संताप हरण कर, जगति का उद्धार करो॥

ॐ ह्रीं ऋषभादि-महावीरपर्यन्त-चतुर्विंशति-तीर्थंकरेभ्यो मोक्ष-महाफल-प्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा।

अर्घ्य

ऋजु भावों का शुभ जल लेकर, समता का चन्दन लाया।
ध्यान अवस्था के अक्षत ले, भक्ति पुष्प मन खिलवाया॥
चाहत की नैवेद्य चढ़ाकर, श्रद्धा दीप जलाऊँगा।
अष्ट मदों की धूप समर्पित, निराकार फल पाऊँगा॥
अष्ट द्रव्य का अर्घ बनाकर, चरणों में अर्पित करता।
चौबीसी की पूजा करके, अन्तर मन हर्षित होता॥

ॐ ह्रीं ऋषभादि-महावीरपर्यन्त-चतुर्विंशति-तीर्थंकरेभ्यो अनर्घ पद प्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पंच कल्याणक

(चौपाई)

सोलह कारण भावना भाई, दया धर्म मन में प्रकटाई।
सोलह स्वप्न शगुन दर्शाता, पन्द्रह माह रतन बरसाता॥
तीर्थंकर का एक ही क्रम है, नाहीं संशय ना विभ्रम है।
गर्भ विषे जो जीव पला है, तीर्थंकर जग जीव भला है॥1॥

ॐ ह्रीं चतुर्विंशति-तीर्थंकरेभ्यो गर्भ-मंगल-मण्डिताय मम-गर्भ-दोष-विनाशनाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अष्ट देवीयाँ मंगल गाये, माता की सेवा चित लाये।
जन्म हुआ प्रभु का धरती पर, सुख शान्ति त्रय लोक में क्षणभर॥

देव इन्द्र सौधर्म भी आये, पाण्डुक वन अभिषेक कराये।
चिह्न लखा अरुँ नाम पुकारा, जन्म कल्याणक अति सुख कारा॥2॥

ॐ ह्रीं चतुर्विंशति-तीर्थंकरेभ्यो जन्ममंगल-मण्डिताय मम-जन्मरोग-विनाशनाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जगति के इन्द्रिय सुखभोगे, राज काज सब नित अवलोके।
पूर्व जन्म की यादें आई, या घटना ने भाव जगाई॥
लौकान्तिक सब देव भी आए, मनहर शिविका में बिठलाएँ।
छोड़ दिया नश्वर संसारा, भेष दिगम्बर अनुपम धारा॥3॥

ॐ ह्रीं चतुर्विंशति-तीर्थंकरेभ्यो तपोमंगल-मण्डिताय मम-चारित्र-वर्धनाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

वर्षों जंगल में तप कीना, कभी कभी आहार है लीना।
धर्म गृहस्थी या संन्यासी, पथ दोनों दे तप अभ्यासी॥
पद्मासन खड्गासन रहते, परिषहों को हर क्षण सहते।
शुक्ल ध्यान चउ कर्म नशाया, केवलज्ञान कल्याण मनाया॥4॥

ॐ ह्रीं चतुर्विंशति-तीर्थंकरेभ्यो केवलज्ञान-मण्डिताय मम-कुज्ञान-विनाशनाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

त्रय योगों से मुक्त हुए हो, ध्यान अवस्था युक्त हुए हो।
सूक्ष्म क्रिया प्रतिपाति ध्याना, व्युपरत किरिया अरि सब हाना॥
अ-इ-उ-ऋ-लृ लघु शब्दा, कर्म जला तत्क्षण प्रभु सिद्धा।
निराकार चैतन्य प्रकाशी, चरण नमें पाने सुख राशि॥5॥

ॐ ह्रीं चतुर्विंशति-तीर्थंकरेभ्यो मोक्षमंगल-मण्डिताय मम-सर्व-कर्म विध्वंसनाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

चौबीसी अर्घावली

श्री आदिनाथ भगवान का अर्घ्य

आदिनाथ प्रथमेश जिन, धर्म कर्म दातार।
भव वारिधी से पार कर, मेटो मम संसार॥

ॐ ह्रीं श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय नमः अनर्घपद प्राप्ताये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

श्री अजितनाथ भगवान का अर्घ्य

धर्मधुरा धारी प्रभु, धर्म बढ़ावें रोज।
अजितनाथ भगवान के बन्दूँ चरण सरोज॥

ॐ ह्रीं श्री अजितनाथ जिनेन्द्राय नमः अनर्घपद प्राप्ताये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

श्री संभवनाथ भगवान का अर्घ्य

संभव सम भव अन्त हो, पाऊँ सिद्ध स्वभाव।
भावों में समभाव हो, तजूँ विकारी भाव॥

ॐ ह्रीं श्री संभवनाथ जिनेन्द्राय नमः अनर्घपद प्राप्ताये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

श्री अभिनन्दननाथ भगवान का अर्घ्य

अभिनन्दन वन्दन करूँ, क्रन्दन कर्म नशाय।
जग बन्धन को तोड़कर, सिद्धालय को पाय॥

ॐ ह्रीं श्री अभिनन्दननाथ जिनेन्द्राय नमः अनर्घपद प्राप्ताये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

श्री सुमतिनाथ भगवान का अर्घ्य

मिथ्यावाद को दूर कर, स्याद्वाद प्रगटाय।
दुर्बुद्धि दुर्ध्यान तज, सुमतिनाथ शिर नाय॥

ॐ ह्रीं श्री सुमतिनाथ जिनेन्द्राय नमः अनर्घपद प्राप्ताये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

श्री पद्मप्रभ भगवान का अर्घ्य

पद्मासन बैठे प्रभू, आतम पद्म खिलाय।
पद्म खिले निज ध्यान का, पद्म प्रभु सिर नाय॥

ॐ ह्रीं श्री पद्मप्रभु जिनेन्द्राय नमः अनर्घपद प्राप्ताये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

श्री सुपार्श्वनाथ भगवान का अर्घ्य

वीतराग निज ज्ञान में, झलके तीनों लोक।
तत्व प्रकाशक महामुनि, चरण सुपारस धोक॥

ॐ ह्रीं श्री सुपार्श्वनाथ जिनेन्द्राय नमः अनर्घपद प्राप्ताये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

श्री चन्द्रप्रभु भगवान का अर्घ्य

अखिलेश्वर हे महाव्रती, तीर्थ प्रवर्तक आप।
धवल वर्ण तन आत्मा, चन्द्र प्रभु निष्पाप॥

ॐ ह्रीं श्री चन्द्रप्रभु जिनेन्द्राय नमः अनर्घपद प्राप्ताये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

श्री पुष्पदन्त भगवान का अर्घ्य

भव भंजक भगवान हैं, पुष्पदंत शुभ नाम।
मगर चिह्न तन श्वेत है, शत शत करूँ प्रणाम॥

ॐ ह्रीं श्री पुष्पदन्त जिनेन्द्राय नमः अनर्घपद प्राप्ताये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

श्री शीतलनाथ भगवान का अर्घ्य

धर्मामृत का दान दे, शीतल शिवपद पाय।
मम आतम शीतल करे, छोड़े विषय कषाय॥

ॐ ह्रीं श्री शीतलनाथ जिनेन्द्राय नमः अनर्घपद प्राप्ताये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

श्री श्रेयांसनाथ भगवान का अर्घ्य

जय जय श्रेयांशम तव गुण पासं, कर्म विनाशं भक्ति करम्।
पावन पद बन्दों जय जिन चन्दों, कृपा करिंदो शान्ति प्रदम्॥

ॐ ह्रीं श्री श्रेयांसनाथ जिनेन्द्राय नमः अनर्घपद प्राप्ताये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

श्री वासुपूज्य भगवान का अर्घ्य

पाँचों कल्याणक महा, चम्पापुर में पाय।
बाल ब्रह्मचारी प्रथम, वासुपूज्य जिनराय॥

ॐ ह्रीं श्री वासुपूज्य जिनेन्द्राय नमः अनर्घपद प्राप्ताये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

श्री विमलनाथ भगवान का अर्घ्य

बाहर भीतर स्वच्छता, विमल अमल गुणवन्त।
अर्घ चढ़ाकर पूजता, पाने पद अरहन्त॥

ॐ ह्रीं श्री विमलनाथ जिनेन्द्राय नमः अनर्घपद प्राप्ताये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

श्री अनन्तनाथ भगवान का अर्घ्य

सुख अनन्त पाया प्रभु, कर कर कर्मन अन्त।
अर्घ चढ़ा वन्दन करूँ, अनन्तनाथ भगवन्त॥

ॐ ह्रीं श्री अनन्तनाथ जिनेन्द्राय नमः अनर्घपद प्राप्ताये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

श्री धर्मनाथ भगवान का अर्घ्य

ध्वनि सुनि ध्रुवधाम की, धैर्य धर्म प्रगटाय।
ध्याता बन निज ध्येय को, धर्मनाथ सम ध्याय॥

ॐ ह्रीं श्री धर्मनाथ जिनेन्द्राय नमः अनर्घपद प्राप्ताये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

श्री शांतिनाथ भगवान का अर्घ्य

जय त्रिभुवन नायक आतम ज्ञायक, कर्म विनाशक शान्ति नमो।
जय शिवपुरवासी ज्ञान प्रकाशी, धर्म विकासी शान्ति नमों॥

ॐ ह्रीं श्री शांतिनाथ जिनेन्द्राय नमः अनर्घपद प्राप्ताये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

श्री कुंथुनाथ भगवान का अर्घ्य

कर्म जहर निज आत्मा, मरण देय भटकाय।
भक्ति कुन्थुनाथ की, सर्व जहर विनशाय॥

ॐ ह्रीं श्री कुन्थुनाथ जिनेन्द्राय नमः अनर्घपद प्राप्ताये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

श्री अरहनाथ भगवान का अर्घ्य

दर्पण में मुख रूप लख, भूला आत्म स्वरूप।
अरहनाथ सर्व दर्प हर, पाया चिन्मय रूप॥

ॐ ह्रीं श्री अरहनाथ जिनेन्द्राय नमः अनर्घपद प्राप्ताये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

श्री मल्लिनाथ भगवान का अर्घ्य

हे लेश्या तीता भव्या मीता, परम पुनीता मल्लि जिनेश।
जय आत्म विहारी बाल ब्रह्मचारी, आरती उतारी भक्ति विशेष॥

ॐ ह्रीं श्री मल्लिनाथ जिनेन्द्राय नमः अनर्घपद प्राप्ताये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

श्री मुनिसुव्रतनाथ भगवान का अर्घ्य

शत इन्द्रों ने भक्ति कर, नाशा भव भटकाव।
मुनिसुव्रत की अर्चना, देवे निज स्वभाव॥

ॐ ह्रीं श्री मुनिसुव्रतनाथ जिनेन्द्राय नमः अनर्घपद प्राप्ताये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

श्री नमिनाथ भगवान का अर्घ्य

नमिनाथ नमता रहूँ, नम्र भाव मन धार।
अहंकार सब मेट कर, धारूँ शुद्ध विचार॥

ॐ ह्रीं श्री नमिनाथ जिनेन्द्राय नमः अनर्घपद प्राप्ताये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

श्री नेमिनाथ भगवान का अर्घ्य

पशु बन्धन को देखकर, धार लिया वैराग्य।
सर्वदर्शी नेमी प्रभु, नमन जगावे भाग्य॥

ॐ ह्रीं श्री नेमिनाथ जिनेन्द्राय नमः अनर्घपद प्राप्ताये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

श्री पार्श्वनाथ भगवान का अर्घ्य

क्षायिक नव लब्धि महा, योग निरोध कर पाय।
पार्श्व प्रभु की वन्दना, पाऊँ निज स्वभाव॥

ॐ ह्रीं श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय नमः अनर्घपद प्राप्ताये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

श्री महावीर स्वामी का अर्घ्य

शासन नायक वीर जिन, अनेकान्त सरताज।
समवशरण सन्देश दे, पाया मुक्ति राज॥

ॐ ह्रीं श्री महावीर जिनेन्द्राय नमः अनर्घपद प्राप्ताये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

श्री मंशापूर्ण महावीर स्वामी का अर्घ्य

श्रद्धा का जल कर में लेकर भक्ति का चन्दन लाया।
अक्षत कुसुम चरुवर पावन दीप धूप वन्दन भाया॥
सिद्ध शिला फल चाह लिये प्रभु आठों द्रव्य चढ़ाऊँगा।
श्री मंशापूरण महावीर की पूजा कर सुख पाऊँगा॥

ॐ ह्रीं श्री मंशापूर्ण महावीर जिनेन्द्राय अनर्घ्य-पद-प्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जयमाला

दोहा– तीर्थङ्कर चौबीस जिन-सदा करे कल्याण
निज आतम दर्शन मिले-सिद्धालय विश्राम।

अविनश्वर अविकारी जिनवर, तत्व ज्ञान के हे भण्डार।
आत्म ध्यान में निज को लखते, लखकर भी सारा संसार॥1॥
मोह नहीं वे मोक्ष विराजें, जो पाया वह है पर्याप्त।
कर्म नशा धर नासा दृष्टि, पूज्य बने कर कर्म समाप्त॥2॥
क्षायिक नवलब्धि के धारी, स्वयं स्वयंभू कहलाते।
सोलह कारण भावना भाकर, तीर्थंकर पद को पाते॥3॥
दुर्लभ मानुष जन्म है पाया, ना इसको बेकार करूँ।
पाप विकारी भाव तजूँ मैं, पुण्य भाव स्वीकार करूँ॥4॥
गुण पर्ययवद् द्रव्यं जानो, नय निक्षेप प्रमाण विचार।
स्याद्वाद अनेकान्तमयी वह, धर्म अहिंसा प्राणाधार॥5॥

स्तुतिकर्ता स्तुति करते, जो स्तुत्य कहाता है।
स्तुति का फल भले न चाहे, फलीभूत हो जाता है।।6।।
ना रोऊँ ना दुख को बोलूँ, ना मागूँ वैभव संसार।
ना रूठूँ ना उन्हें मनाऊँ, जिनवर तो जगती के पार।।7।।
ना देते अभिशाप किसी को, ना देते वे आशीर्वाद।
फिर भी भक्ति जो भी करता, लेता इह परभव को साध।।8।।
प्रातः सूरज उगकर क्षण में, तम हरता जागृत करता।
दिनभर चलकर सर्व जीव को, उत्साहित शक्ति भरता।।9।।
जिनवर के दर्शन कर प्रातः, अन्तर आतम चमकेगा।
पाप बहिर्मुख हर क्षण होकर, धर्म भाव सब पनपेगा।।10।।
मंगल कारी जिनवर दर्शन, धर्म मार्ग का प्रथम चरण।
संस्तुति भक्ति करलो मन से, मिट जाएगा जन्म मरण।।11।।
चौबीसों तीर्थंकर मनहर, परम पूज्य हैं मंगलधाम।
श्रद्धा लोक के देव यही हैं, वीतरागी जिनवर भगवान।।12।।
ऋषभ नाथ हे आदि जिनेशा, अन्तस् कल्मषता धो दो।
अजित नाथ हे कर्म विजेता, दिव्य ध्यान शक्ति दे दो।।13।।
संभव जिनवर भवभय हर्ता, समता क्षमता पा जाऊँ।
अभिनन्दन का वन्दन करके, निज गुण वैभव प्रगटाऊँ।।14।।
सुमतिनाथ शुभ ज्ञान प्रदाता, सद् बुद्धि जागृत कर दो।
पद्मप्रभु गुण सरवर भीतर, आत्म कमल विकसित कर दो।।15।।
दया क्षमा से युक्त जिनेश्वर, नाम सुपारस पाया है।
चन्द्रप्रभु की शीतल रश्मि, रोम रोम चमकाया है।।16।।
अन्तश्चेतना के संवाहक, पुष्पदन्त प्रभु कहलाते।
रागादिक सब दोष हरो प्रभु, शीतल गुण गौरव गाते।।17।।
उलझन मन की हर लेना प्रभु, तीर्थंकर श्री नाथ श्रेयांस।
वासुपूज्य है बाल ब्रह्म जिन, संयम के मेरु दिव्यांश।।18।।
मन सुख दायक विमलनाथ जी, अन्तर्मन को विमल करो।
दोष अनन्तानन्त हृदय में, अनन्तनाथ जी रिक्त करो।।19।।

धर्म ध्यान की शक्ति पाकर, धर्मनाथ नित ध्यान करूँ।
शान्तिनाथ चंचलता मेटो, भव भ्रमण को शान्त करूँ॥20॥
कुन्थुनाथ जी ध्यान धुरन्धर, शुद्धातम में लीन रहे।
अरहनाथ अरिकुल के नाशक, परम योग परवीन रहे॥21॥
बाल ब्रह्मचारी जिनवर हैं, मल्लिनाथ निष्काम महान।
मुनिसुव्रत मन मौन करा दो, कर्मास्रव का होवे हान्॥22॥
नमिनाथ निज गुण प्रगटा दो, आत्म रूप में खो जावे।
नेमिनाथ के तेज पुँज से, ज्योतिर्मय जीवन होवे॥23॥
आकुलता में रस निज खोया, पारस रस पा परम बनूँ।
महावीर का सत्पथ पाकर, निज आतम कल्याण करूँ॥24॥

दोहा

विनती 'सौरभसागर' की, सुन लेना जिनराज।
जीवन हितकर हो सदा, देना आशीर्वाद॥

ॐ ह्रीं चतुर्विंशति-तीर्थंकरेभ्यो जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

इत्याशीर्वाद

त्रिकाल चौबीसी प्रत्येक अर्घ

त्रिकालिक प्रथम तीर्थंकर

धर्म प्रवर्तक आदिनाथ जी, चिन्मय मूरत प्रथम जिनेश।
तीर्थंकर निर्वाण भूत के, प्रारंभिक ज्ञायक अखिलेश।।
आने वाले महापद्म जी, धर्म ध्वजा फहरायेगें।
भूत भविष्यत वर्तमान के, प्रथम तीर्थंकर ध्यायेंगे।।

ॐ ह्रीं श्री आदिनाथ निर्वाण महापद्म त्रिकालिक तीर्थंकराय नमः अर्घम् निर्वपामीति स्वाहा।

त्रिकालिक द्वितीय तीर्थंकर

कर्म विजेता अजितनाथ जी, गज चिन्हाकिंत द्वितीय जिनेश।
सागर से गंभीर भूत के, तीर्थंकर है अपर महेश।।
नर सुर सेवित भावी जिनवर, श्री सुरदेव सदा सुखकार।
भूत भविष्यत वर्तमान के, त्रय तीर्थंकर जय जयकार।।

ॐ ह्रीं श्री अजितनाथ, श्री सागर, श्री सुरदेव त्रिकालिक तीर्थंकराय नमः अर्घम् निर्वपामीति स्वाहा।

त्रिकालिक तृतीय तीर्थंकर

जग में संभव सब कुछ है जब, संभवनाथ कृपा बरसे।
महासाधु सा जीवन जीकर, ध्यान मग्न जीवन हरसे।।
आने वाले तीर्थंकर श्री, सुपार्श्वनाथ[1] कल्याण करें।
भूत भविष्यत वर्तमान के, त्रय तीर्थंकर ध्यान धरें।।

ॐ ह्रीं श्री सम्भवनाथ, महासाधु, सुपार्श्वनाथ त्रिकालिक तीर्थंकराय नमः अर्घम् निर्वपामीति स्वाहा।

---

1. **भविष्य कालीन तीर्थंकरः**–तृतीय तीर्थंकर का सुरिप्रभ नाम का भी उल्लेख है।

त्रिकालिक चतुर्थ तीर्थंकर

मन मर्कट सा मचल रहा हो, अभिनंदन का जाप करें।
विमलप्रभ सा निर्मल मन कर, जीवन के संताप हरें।।
तीर्थंकर श्री स्वयंप्रभ सम, स्वयं प्रभा प्रगटाऊंगा।
भूत भविष्यत वर्तमान के, तीर्थंकर गुण गाऊंगा।।

ॐ ह्रीं श्री अभिनंदन, विमलप्रभ, श्री स्वयं प्रभ तीर्थंकराय नमः अर्घम् निर्वपामीति स्वाहा।

त्रिकालिक पंचम तीर्थंकर

सुमतिनाथ मति पाने को मन, सुमन सुमन ले नमन किया।
श्री श्रीधर[1] सम शुद्ध आत्म कर, सिद्धालय में गमन किया।।
सर्वात्मभूत जिन देव पांचवे, होने वाले तीर्थंकर।
भूत भविष्यत वर्तमान के, पूजूँ तीनों तीर्थंकर।।

ॐ ह्रीं श्री सुमतिनाथ, श्रीधर, सर्वात्मभूत तीर्थंकराय नमः अर्घम् निर्वपामीति स्वाहा।

त्रिकालिक षष्टम तीर्थंकर

खिला कमल सा चिन्ह आपका, पद्मप्रभु पावन भगवान।
सुदत्तनाथ के समवशरण में, दिव्य ध्वनि खिरती अविराम।।
तीर्थंकर श्री देवपुत्र[2] जी, होवेंगें पुण्यार्थ नमूं।
भूत भविष्यत वर्तमान के, तीर्थ प्रवर्तक सदा नमूं।।

ॐ ह्रीं श्री पद्मप्रभु, सुदत्तनाथ, देवपुत्र तीर्थंकराय नमः अर्घम् निर्वपामीति स्वाहा।

---

1. **भविष्य कालीन तीर्थंकरः**–पंचम तीर्थंकर सर्वदुध नाम का भी उल्लेख है।
2. **भविष्य कालीन तीर्थंकरः**–षष्टम तीर्थंकर जयदेव जी नाम का भी उल्लेख है।

त्रिकालिक सप्तम तीर्थंकर

स्वयं बोध स्वास्तिक से होता, नाथ सुपार्श्व का लांक्षन है।
कर्म रहित श्री अमलप्रभ[1] जी, सिद्धालय सुख हर क्षण हैं।।
कुल कीर्ति को बर्धित करने, वाले हैं कुलपुत्र[2] मुनि।
भूत भविष्यत वर्तमान के, तीर्थ प्रवर्तक त्रयों मुनि।।

ॐ ह्रीं श्री सुपार्श्वनाथ, अमलप्रभ, कुलपुत्र नाथ तीर्थंकराय नमः अर्घम् निर्वपामीति स्वाहा।

त्रिकालिक अष्टम तीर्थंकर

चंद्रमणि सम चंद्रकांति मय, चंद्रप्रभु जिनराज महान।
उद्धर जिन उद्धार कराते, सिद्धालय में ज्योतिर्मान।।
उदंकनाथ भावी तीर्थंकर, चरण वंदना नित्य करूं।
भूत भविष्यत वर्तमान के, तीर्थंकर का ध्यान करूं।।

ॐ ह्रीं श्री चंद्रप्रभु, उद्धर जिन, उदंक देव तीर्थंकराय नमः अर्घम् निर्वपामीति स्वाहा।

त्रिकालिक नवम् तीर्थंकर

भव भय भंजक पुष्पदंत प्रभु, भवोदधि के तारणहार।
भूतकाल के अंगिर जिनवर, पूजूं कर्मन नाशन हार।।
प्रोष्ठिल[3] है भावी तीर्थंकर, पायेंगे आगे निर्वाण।
भूत भविष्यत वर्तमान के, तीर्थंकर पूजूँ धर ध्यान।।

ॐ ह्रीं श्री पुष्पदन्त, अंगिर, प्रोष्ठिल तीर्थंकराय नमः अर्घम् निर्वपामीति स्वाहा।

---

1. **भूतकालीन तीर्थंकरः**–सप्तम तीर्थंकर का सदल नाम का भी उल्लेख है।
2. **भविष्य कालीन तीर्थंकरः**–सप्तम तीर्थंकर का उदयदेव जी का भी उल्लेख है।
   भूतकालीन तीर्थंकरः–नवम तीर्थंकर का आडिट नाम का भी उल्लेख है।
3. **भविष्य कालीन तीर्थंकरः**–नवम तीर्थंकर का प्रश्नकीर्ति जी का भी उल्लेख है।

त्रिकालिक दशम तीर्थंकर

सुखदायक कल्याणक पाया, शीतल स्वामी तप करके।
भूतकाल के सन्मति देवा[1], सद्गति देवे भव हरके।।
जयकीर्ति जिनधर्म बढ़ाने, होंगे दशवें तीर्थंकर।
भूत भविष्यत वर्तमान के, पूजूं कर्म रहित जिनवर।।

ॐ ह्रीं श्री शीतलनाथ, सन्मति देव, जयकीर्ति तीर्थंकराय नमः अर्घम् निर्वपामीति स्वाहा।

त्रिकालिक ग्यारहवें तीर्थंकर

घाति कर्म विनाशक जिनवर, नाम श्रेयांश है मंगलकार।
सिंधु[2] जिनवर बंदू अघहर, भव ध्वंसि गुण अपरंपार।।
पूर्ण बुद्ध हो मुनिसुव्रत[3] जी, नामधारी भावी जिनराज।
भूत भविष्यत वर्तमान जिन, पूजू निजानंद ध्रुवराज।।

ॐ ह्रीं श्री श्रेयांश नाथ, सिंधुनाथ, मुनिसुव्रत नाथ तीर्थंकराय नमः अर्घम् निर्वपामीति स्वाहा।

त्रिकालिक बारहवें तीर्थंकर

वासुपूज्य ब्रह्मचारी जिनवर, सिद्धालय में रहे विराज।
कुसुमांजलि तीर्थंकर पूजूँ, भूतकाल के हे जिनराज।।
निष्कामी अर[4] अमल जिनेश्वर, नित्य सुखाश्रित बसते है।
भूत भविष्यत वर्तमान के, तीर्थ प्रवर्तक कहते हैं।।

ॐ ह्रीं श्री वासुपूज्य, कुसुमंजलि, अरनाथ तीर्थंकराय नमः अर्घम् निर्वपामीति स्वाहा।

---

1. **भूतकालीन तीर्थंकरः**–दशम तीर्थंकर का अग्निनाथ नाम का भी उल्लेख है।
2. **भूतकालीन तीर्थंकरः**–ग्यारहवें तीर्थंकर का सयंम नाम का भी उल्लेख है।
3. **भविष्य कालीन तीर्थंकरः**–ग्यारहवें तीर्थंकर का पूर्णबुद्ध नाम का भी उल्लेख है।
4. **भविष्य कालीन तीर्थंकरः**–बारहवें तीर्थंकर का अरअहम नाम का भी उल्लेख है।

त्रिकालिक तेरहवें तीर्थंकर

विमल भाव ले विमलनाथ के, विमल गुणों का गान करें।
शिवगण नायक आतम ज्ञायक, जिनवर का सम्मान करें।।
कर्म रहित निष्पाप नाम के, भावी तीर्थंकर जय कार।
भूत भविष्यत वर्तमान के, धर्म शिरोमणि जग हितकार।।

ॐ ह्रीं श्री विमलनाथ, शिवगणनाथ, निष्पाप नाथ तीर्थंकराय नमः अर्घम् निर्वपामीति स्वाहा।

त्रिकालिक चौदहवें तीर्थंकर

जय भगवंतं नाथ अनंतम, पार किये चौदह गुणथान।
राग द्वेष मद मोह विनाशी, तीर्थंकर उत्साह[1] महान।।
निष्कषाय[2] भावी तीर्थंकर, स्वयं स्वयंभू कहलाए।
भूत भविष्यत वर्तमान के, त्रैकालिक तीर्थंकर ध्याय।।

ॐ ह्रीं श्री अनंतनाथ, उत्साह नाथ, निष्कषाय नाथ तीर्थंकराय नमः अर्घम् निर्वपामीति स्वाहा।

त्रिकालिक पंद्रहवे तीर्थंकर

वस्तु का स्वभाव धर्म है, धर्मनाथ की वाणी है।
ज्ञानेश्वर[3] तीर्थंकर का शुभ, नाम आत्म कल्याणी है।।
विपुल[4] तपस्या विमल भाव से, भावी तीर्थंकर करते।
भूत भविष्यत वर्तमान के, हितकारी जिनवर भजते।।

ॐ ह्रीं श्री धर्मनाथ, ज्ञानेश्वर नाथ, विपुलनाथ तीर्थंकराय नमः अर्घम् निर्वपामीति स्वाहा।

---

1. **भूतकालीन तीर्थंकरः**–चौदहवें तीर्थंकर का उत्सव नाम का भी उल्लेख है।
2. **भविष्य कालीन तीर्थंकरः**–चौदहवें तीर्थंकर का स्वयंभू नाम का भी उल्लेख है।
3. **भूतकालीन तीर्थंकरः**–पन्द्रहवें तीर्थंकर का यशोधरा नाम का भी उल्लेख है।
4. **भविष्य कालीन तीर्थंकरः**–पन्द्रहवें तीर्थंकर का विमलप्रभ नाम का भी उल्लेख है।

त्रिकालिक सोलहवें तीर्थंकर

समरस भावों से समता रख, शान्तिनाथ जिनवर ध्याते।
परमेश्वर[1] के परम पदों में, प्रतिदिन नमनान्जलि लाते।।
निर्मल नाथ है भावी भगवन, निर्मलता दे जायेंगे।
भूत भविष्यत वर्तमान के, जिनवर अर्घ चढ़ायेंगे।।

ॐ ह्रीं श्री शान्तिनाथ, परमेश्वर नाथ, निर्मलनाथ तीर्थंकराय नमः अर्घम् निर्वपामीति स्वाहा।

त्रिकालिक सत्रहवें तीर्थंकर

जग की क्षण भंगुरता जाना, कुंथुनाथ जग छोड़ गए।
विमलेश्वर[2] वैराग्य धारकर, जगती से मुख मोड़ गये।।
चित्रगुप्त न जीवन लिखते, ये भावी तीर्थंकर है।
भूत भविष्यत वर्तमान के, जिनवर अर्घ समर्पण है।।

ॐ ह्रीं श्री कुंथुनाथ, विमलेश्वर, चित्रगुप्त नाथ तीर्थंकराय नमः अर्घम् निर्वपामीति स्वाहा।

त्रिकालिक अठारहवें तीर्थंकर

मछली सा चंचल यौवन है, अरहनाथ जी जान गए।
नाथ यशोधर तीर्थंकर है, जीवन को पहचान गए।।
समाधि गुप्त भावी तीर्थंकर, सन्यासी महिमा गाए।
भूत भविष्यत वर्तमान के, धर्म प्रवर्तक गुण गाये।।

ॐ ह्रीं श्री अरनाथ, वर्धमान नाथ, समाधीगुप्त तीर्थंकराय नमः अर्घम् निर्वपामीति स्वाहा।

---

1. **भविष्य कालीन तीर्थंकरः**–सोलहवें तीर्थंकर का बदल नाम का भी उल्लेख है।
2. **भूतकालीन तीर्थंकरः**–सत्रहवें तीर्थंकर का विनयेश्वर नाम का भी उल्लेख है।

त्रिकालिक उन्नीसवे तीर्थंकर

कलश चिन्हधारी प्रभुवर जी, मल्लिनाथ सब क्लेश हरें।
कृष्णमती के समवशरण में, भव्य जीव प्रवेश करें।।
स्वयं स्वयंभू नाथ हितैषी, भावी श्री भगवान बने।
भूत भविष्यत वर्तमान के, तीर्थंकर को सदा नमै।।

ॐ ह्रीं श्री मल्लिनाथ, कृष्णमती, स्वयंभूनाथ तीर्थंकराय नमः अर्घम् निर्वपामीति स्वाहा।

त्रिकालिक बीसवे तीर्थंकर

मुनियों का व्रत मुनीसुव्रत ले, मुनियो के मुनि नाथ बने।
ज्ञानमती केवल ज्ञानी जिन, समवशरण सुरनाथ नमें।।
अनिवर्तक शुभ धर्म प्रवर्तक, भावी तीर्थंकर ध्याये।
भूत भविष्यत वर्तमान के, समवशरण धारी ध्याये।।

ॐ ह्रीं श्री मुनिसुव्रत नाथ, ज्ञानमती, अनिवर्तक नाथ तीर्थंकराय नमः अर्घम् निर्वपामीति स्वाहा।

त्रिकालिक इक्कीसवे तीर्थंकर

विश्व विलोकी अरिकुल नाशक, नमिनाथ जय भगवंता।
शुद्धमति तीर्थंकर हितकर, नमूं नमूं जय अरिहंता।।
वीतराग सर्वज्ञ हितंकर, गुण धारी जयनाथ बने।
भूत भविष्यत वर्तमान के, धर्म धुरंधर चरण नमैं।।

ॐ ह्रीं श्री नमिनाथ, शुद्धमती, जयनाथ तीर्थंकराय नमः अर्घम् निर्वपामीति स्वाहा।

त्रिकालिक बाईसवें तीर्थंकर

बाल ब्रह्मचारी तीर्थंकर, नेमिनाथ गिरनार चढ़े।
भूतकाल के भद्रनाथ जी, शुद्ध भाव धर मोक्ष चढ़े।।
विमलनाथ भावी तीर्थंकर, विमल भाव से पूजेंगे।
भूत भविष्यत वर्तमान के, तीर्थंकर को पूजेंगे।।

ॐ ह्रीं श्री नेमीनाथ, भद्रनाथ, विमलनाथ तीर्थंकराय नमः अर्घम् निर्वपामीति स्वाहा।

त्रिकालिक तेईसवे तीर्थंकर

पारस ने उपसर्ग सहा था, केवल ज्ञान मिला उपहार।
अतिक्रांत[1] जी है अतीत के, दीन दयालु धर्माधार।।
देवपाल देवाधिदेव जी, तीर्थंकर है दीनदयाल।
भूत भविष्यत वर्तमान को, अर्घ चढ़ाऊं भर भर थाल।।

ॐ ह्रीं श्री पार्श्वनाथ, अतिक्रांत नाथ, देवपाल तीर्थंकराय नमः अर्घम् निर्वपामीति स्वाहा।

त्रिकालिक चौबीसवें तीर्थंकर

वर्तमान के वर्धमान जिन, शासन नायक तारणहार।
शांतिनाथ[2] जी देव हमारे, भूतकाल के करुणा धार।।
अनंतवीर्य जी तीर्थंकर पर, भावी काल में होवेंगे।
भूत भविष्यत वर्तमान के, तीर्थंकर को पूजेंगे।।

ॐ ह्रीं श्री वर्धमान, शान्तियुक्त नाथ, अनंतवीर्य तीर्थंकराय नमः अर्घम् निर्वपामीति स्वाहा।

---

1. **भविष्य कालीन तीर्थंकरः**–तेईसवें तीर्थंकर का अनंतवीर नाम का भी उल्लेख है।
2. **भूतकालीन तीर्थंकरः**–चौबीसवें तीर्थंकर का शांतास् नाम का भी उल्लेख है।

श्री सम्मेद शिखर पूजन

स्थापना

कर्म नाश की उज्ज्वल भूमि, तीर्थराज सम्मेद शिखर।
श्रद्धालु के पाप हरे जो, करे वंदना गिरी ऊपर।।
हरे भरे वृक्षों से शोभित, पर्वत का कण कण पावन।
आह्वानन स्थापन करता, सिद्ध प्रभु हिय धर धारण।।
संत अनंतानंत यहाँ से, निराकार पद को पाए।
भाव सहित मैं करूँ अर्चना, अष्ट द्रव्य कर में लाये ।।
तीर्थंकर श्री बीस जिनेश्वर, सारे कर्म नशाये हैं।
हृदय कमल में आप विराजो, भाव संजोकर लाये है।।

ॐ ह्रीं श्री सम्मेद-शिखर-सिद्ध-क्षेत्रे सर्व-सिद्ध-परमेष्ठिभ्यो नमः अत्र अवतर अवतर संवोषट् आह्वाननम्।

ॐ ह्रीं श्री सम्मेद-शिखर-सिद्ध-क्षेत्रे सर्व सिद्ध परमेष्ठिभ्यो नमः अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनम्।

ॐ ह्रीं श्री सम्मेद-शिखर-सिद्ध-क्षेत्रे सर्व सिद्ध परमेष्ठिभ्यो नमः अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधिकरणम्।

जल

तीर्थराज का पावन जल ले, त्रय धारा देने आया ।
जन्म जरा मृत नाश करो प्रभु, धर्म ध्यान की दे छाया ।।
चतुर्गति का भ्रमण मिटाऊँ, सिद्ध क्षेत्र पर आकर के ।
शुद्ध निराकुल परमातम पद, पाऊँ कर्म नशाकर के।।

ॐ ह्रीं विंशति-तीर्थंकराय संख्यात-मुनि-सिद्ध-पद-प्राप्तेभ्यो श्री सम्मेद-शिखर सिद्धक्षेत्रेभ्यो नमः जन्म-जरा-मृत्यु-विनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

चन्दन

तीर्थराज पर धर्म भाव की, चन्दन गंध बरसती है ।
मन की दुविधा दूर हटाकर, वंदन को ही तरसती है ।।
चतुर्गति का भ्रमण मिटाऊँ, सिद्ध क्षेत्र पर आकर के ।
शुद्ध निराकुल परमातम पद, पाऊँ कर्म नशाकर के ।।

ॐ ह्रीं विंशति-तीर्थंकराय संख्यात-मुनि-सिद्ध-पद-प्राप्तेभ्यो श्री-सम्मेद-शिखर-सिद्धक्षेत्रेभ्यो नमः संसार-ताप-विनाशनाय चन्दनं निर्व. स्वाहा।

अक्षत

धवल सुवासित उज्ज्वल तंदुल, अक्षय भूमि पर लाऊँ।
मन वच तन को अक्षत करके, चरणों में शुभ पुँज चढ़ाऊँ॥
चतुर्गति का भ्रमण मिटाऊँ, सिद्ध क्षेत्र पर आकर के।
शुद्ध निराकुल परमातम पद, पाऊँ कर्म नशाकर के॥

ॐ ह्रीं विंशति-तीर्थंकराय संख्यात-मुनि-सिद्ध-पद-प्राप्तेभ्यो श्री सम्मेद शिखर सिद्धक्षेत्रेभ्यो नमः अक्षय-पद-प्राप्तये अक्षतं निर्वपामीति स्वाहा।

पुष्प

तीर्थराज सम्मेद शिखर पर, भाव पुष्प नूतन खिलता।
लौकिक पुष्प चढ़ाऊँ स्वामी, काम भाव नित मम मिटता॥
चतुर्गति का भ्रमण मिटाऊँ, सिद्ध क्षेत्र पर आकर के।
शुद्ध निराकुल परमातम पद, पाऊँ कर्म नशाकर के॥

ॐ ह्रीं विंशति-तीर्थंकराय संख्यात-मुनि-सिद्ध-पद-प्राप्तेभ्यो श्री-सम्मेद-शिखर-सिद्धक्षेत्रेभ्यो नमः कामबाण-विध्वंसनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

नैवेद्य

पर्वत पर कोटि संतों ने, अन्न पान का त्याग किया।
त्याग भाव से वंदन करके, मोक्ष महल को साध लिया ॥
चतुर्गति का भ्रमण मिटाऊँ, सिद्ध क्षेत्र पर आकर के।
शुद्ध निराकुल परमातम पद, पाऊँ कर्म नशाकर के॥

ॐ ह्रीं विंशति-तीर्थंकराय संख्यात-मुनि-सिद्ध-पद-प्राप्तेभ्यो श्री-सम्मेद-शिखर-सिद्धक्षेत्रेभ्यो नमः क्षुधा-रोग-विनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दीप

सूरज चंदा तारों की नित, दीप मालिका जला करे।
सिद्ध क्षेत्र की आरती करके, निज जीवन का भला करे ॥
चतुर्गति का भ्रमण मिटाऊँ, सिद्ध क्षेत्र पर आकर के।
शुद्ध निराकुल परमातम पद, पाऊँ कर्म नशाकर के॥

ॐ ह्रीं विंशति-तीर्थंकराय संख्यात-मुनि-सिद्ध-पद-प्राप्तेभ्यो श्री-सम्मेद-शिखर-सिद्धक्षेत्रेभ्यो नमः मोहान्धकार-विनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

धूप

तीर्थराज सम्मेद शिखर पर, भक्त सदा चढ़ता जाये ।
ज्यों अग्नि में धूप जले से, धूम गगन उड़ता जाये॥

चतुर्गति का भ्रमण मिटाऊँ, सिद्ध क्षेत्र पर आकर के।
शुद्ध निराकुल परमातम पद, पाऊँ कर्म नशाकर के॥

ॐ ह्रीं विंशतिं-तीर्थंकराय संख्यात-मुनि-सिद्ध-पद-प्राप्तेभ्यो श्री-सम्मेद-शिखर-सिद्धक्षेत्रेभ्यो नमः अष्ट-कर्म-दहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

फल

श्रीफल लौंग सुपारी काजू, केला आम अनार हैं।
बाहर का फल बीज रूप है, मोक्ष महाफल सार है॥
चतुर्गति का भ्रमण मिटाऊँ, सिद्ध क्षेत्र पर आकर के।
शुद्ध निराकुल परमातम पद, पाऊँ कर्म नशाकर के॥

ॐ ह्रीं विंशति-तीर्थंकराय संख्यात-मुनि-सिद्ध-पद-प्राप्तेभ्यो श्री-सम्मेद-शिखर-सिद्धक्षेत्रेभ्यो नमः मोक्ष-फल-प्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा।

अर्घ्य

अष्ट कर्म के कष्ट मिटाने, तीर्थंकर तप तपते हैं।
अष्ट गुणों की प्राप्ति हेतु, अर्घ चढ़ा जप जपते हैं॥
चतुर्गति का भ्रमण मिटाऊँ, सिद्ध क्षेत्र पर आकर के।
शुद्ध निराकुल परमातम पद, पाऊँ कर्म नशाकर के॥

ॐ ह्रीं विंशति-तीर्थंकराय संख्यात-मुनि-सिद्ध-पद-प्राप्तेभ्यो श्री-सम्मेद-शिखर-सिद्धक्षेत्रेभ्यो नमः अनर्घ-पद-प्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जयमाला

तीर्थराज सम्मेद शिखर की, जय जय कर वंदन करता।
तीरथ की पावन रज मस्तक, लगते ही क्रंदन हरता॥1॥
टोंक टोंक पर तीर्थंकर के, चरण नमें सुखकारी है।
पग पग ऊपर चढ़ता जाऊँ, जिनवर सब दुखहारी हैं॥2॥
हरियाली की टोप लगाए, पर्वत मनहर सुन्दर है।
प्रथम कूट का नाम "सिद्धवर", अजितनाथ तीर्थंकर है॥3॥
"धवल कूट" से संभवनाथा, अभिनंदन आनंदम है।
सुमतिनाथ "अविचल" सुखकारी बुद्धि सुवासित चन्दन है॥4॥
"मोहन कूट" से पद्म प्रभु जी, आतम पद्म खिलाये है।
नाथ सुपारस कूट "प्रभास" से, सिद्धालय पद पाये है॥5॥

चंद्र प्रभु चंदा सम सोहे, "ललित कूट'' है गिरी विशाल।
पुष्पदंत के चरण नमे जो, "सुप्रभ कूट'' में करे निहाल॥6॥
मंद सुगंध वयारि के संघ, अर्घ चढ़ा बढ़ता जाऊँ।
"विद्युत् कूट" में शीतल प्रभु की, वंदन कर मैं हर्षाऊँ॥7॥
जैन धर्म के कुलाचार का, "संकुल कूट" में नीयम हो।
श्री श्रेयांश का दर्शन प्यारा, त्याग धर्म मय जीवन हो॥8॥
वीर बलि "सुवीर कूट" तक, विमल नाथ को नमता चल।
कूट "स्वयंभू'' नाथ अनन्ता, कर्म नशाने भजता चल॥9॥
धर्मनाथ का कूट "सुदत्ता'', कूट "कुंदप्रभ'' शान्ति जिनेश।
कुन्थुनाथ का कूट "ज्ञानधर", वंदन कर तज राग द्वेष॥10॥
अरहनाथ अरिदमन करावे, "नाटक कूट'' में दर्शन हो।
"सम्बल कूट" का आलम्बन हो, मल्लि चरण स्पर्शन हो॥11॥
कर्म निर्जरा वंदन से कुछ, हम भक्तो का हो जावे।
"निर्जरकूट" में मुनिसुब्रत के, व्रत से कर्म विनश जावे॥12॥
तीनलोक में शत्रु ना हो, कूट "मित्रधर" आ जाऊँ।
नमिनाथ की करूँ वन्दना, तीर्थंकर पद को पाऊँ॥13॥
पार्श्वनाथ पर्वत के मालिक, "स्वर्णभद्र" विराज रहे।
चतुर्गति के बंधन काटो, जगती का ना काज रहे॥14॥
बीसों तीर्थंकर हितकर हैं, नर देवों से वन्दित हैं।
देव देवियाँ हरपल भ्रमते, रक्षित पर्वत शोभित है॥15॥
आदिनाथ और वासुपूज्य का, टोंक बना मनहारी है।
नेमिनाथ महावीर प्रभु को, वंदन यहाँ हमारी है॥16॥
पर्वत पर पावन संतो के, शुभ परमाणु फैले हैं।
रोग-शोक व्याधि बाधा के, दूर रहे सब रेलें हैं॥17॥
नियम लेकर भाव सहित जो, वंदन पूजन करता है।
नरक पशुगति का बंधन तो, इस भव में ही छँटता है॥18॥
घर से जब यात्रा को निकलें, रात्रि भोजन व्यसन तजे।
प्रासुक जल मर्यादित भोजन, सुबह शाम ही ग्रहण करें॥19॥

णमोकार या सिद्ध प्रभु की, सोते उठते जाप करें।
शुद्ध वसन तन मन निर्मल कर, यात्रा से सब पाप हरें॥20॥
अंतिम टोंक की वंदना करके, क्षमायाचना नित्य करें।
फिर से जब तक दर ना आऊँ, एक नियम को ग्रहण करें॥21॥
ऐसे भावों की शुभ यात्रा, नरक पशु गति मुक्त करे।
तन मन घर परिवार मित्र की, सुख शांति अभिव्यक्त करे॥22॥
तीर्थराज सम्मेद शिखर तो, जैनों की रजधानी है।
भारत भर के जैनो का यह, तीर्थ महा कल्याणी है॥23॥
जिन मंदिर से भरा क्षेत्र यह, ऊपर नीचे सोह रहा।
पूजा भक्ति स्वाध्याय व्रत, मुनि दर्शन मन मोह रहा॥24॥
चारों ओर से जैनी बंधु, यात्रा करने आते हैं।
ध्वजा चढ़ाते छत्र चढ़ाते, अर्घ चढ़ा हर्षाते हैं॥25॥
मंत्र जाप पूजा से गुंजित, पर्वत मंगलकारी है।
मनोकामना पूरण होती, श्रद्धाफल अति भारी है॥26॥
एक अरब बारह कोटि फल, उपवासों का मिलता है।
चार कोटि प्रोषध का फल भी, सर्व कष्ट को हरता है॥27॥
सिद्ध क्षेत्र निर्वाण भूमि या, शाश्वत धाम कहाता है।
तीर्थराज सम्मेद शिखर से, जैनों का ही नाता है॥28॥
इसकी महिमा गरिमा को हम, निज भक्ति से बढ़ायेंगे।
पावनता नैतिकता मन धर, तीरथ स्वच्छ बनायेंगे॥29॥
बाहर निर्मल भीतर निर्मल, निर्मल शाश्वत धाम है।
तीर्थराज सम्मेद शिखर को, बारम्बार प्रणाम है॥30॥

ॐ ह्रीं श्री विंशति-तीर्थंकराय संख्यात-मुनि-सिद्ध-पद-प्राप्तेभ्यो श्री सम्मेद-शिखर-सिद्ध-क्षेत्रेभ्यो नमः जयमाला पूर्णार्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा

तीर्थंकर श्री बीस जिन, सिद्ध अनंतानंत।
'सौरभ सागर' तीर्थ नमे, पाने परमानन्द॥

इत्याशीर्वाद-पुष्पांजलिं क्षिपेत्

माँ जिनवाणी पूजन

स्थापना

समवशरण में तीर्थंकर की, दिव्य ध्वनि तन से खिरती।
द्वादशांग-मय गणधर द्वारा, शब्द अर्थ हो नित कहती॥
परम ब्रह्म और शब्द ब्रह्म का, मेल जिनागम कहलाता।
संशय-विभ्रम नाशन हेतु, अध्ययन आराधन भाता॥

दोहा

द्वादशांग-मय शब्द का, आगम में अनुवाद।
अष्ट द्रव्य से पूजता, श्री जिनवाणी मात॥

ॐ ह्रीं श्री जिनसर्वांगोद्भव-गणधर-ग्रहीत-द्वादशांग-मय-श्रुतदेवता अत्र अवतर अवतर संवौषट् इत्याह्वानम्।

ॐ ह्रीं श्री जिनसर्वांगोद्भव-गणधर-ग्रहीत-द्वादशांग-मय-श्रुतदेवता अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः इति स्थापनम्।

ॐ ह्रीं श्री जिनसर्वांगोद्भव-गणधर-ग्रहीत-द्वादशांग-मय-श्रुतदेवता अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधिकरणम्।

जल

जैसे पात्रों में जल जाता, वैसा ले लेता आकार।
ज्ञान नीर भी मिथ्या-सम्यक्, होता निज भावानुसार॥
तीर्थंकर की दिव्य ध्वनि शुभ, गणधर द्वारा गुम्फित है।
मुनियों द्वारा लिखा गया जो, भक्त जनों से वन्दित है॥

ॐ ह्रीं श्री जिनसर्वांगोद्भव-गणधर-ग्रहीत-द्वादशांग-मय-श्रुत-देवतायैः जन्म-जरा-मृत्यु-विनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

चन्दन

पादप सुरभित चन्दन का शुभ, गंध सुवासित देता है।
शत्रु मित्र का भेद मिटाकर, जिन आगम सम होता है॥
तीर्थंकर की दिव्य ध्वनि शुभ, गणधर द्वारा गुम्फित है।
मुनियों द्वारा लिखा गया जो, भक्त जनों से वन्दित है॥

ॐ ह्रीं श्री जिनसर्वांगोद्भव-गणधर-ग्रहीत-द्वादशांग-मय-श्रुत-देवतायैः संसार-ताप-विनाशनाय चन्दनं निर्वपामीति स्वाहा।

अक्षत

द्वादशांग मय अक्षर अक्षत, तंदुल मुट्ठी भर लाया।
भाव द्रव्य श्रुत आगम पाकर, तत्व बोध कर हर्षाया।।
तीर्थंकर की दिव्य ध्वनि शुभ, गणधर द्वारा गुम्फित है।
मुनियों द्वारा लिखा गया जो, भक्त जनों से वन्दित है।।

ॐ ह्रीं श्री जिनसर्वांगोद्भव-गणधर-ग्रहीत-द्वादशांग-मय-श्रुत-देवतायै: अक्षय-पद-प्राप्ताय अक्षतं निर्वपामीति स्वाहा।

पुष्प

सूरज की ज्यों किरणें पाकर, कमल पुष्प खिल जाता है।
अरिहंतों की वाणी सुनकर, मन उपवन खिल जाता है।।
तीर्थंकर की दिव्य ध्वनि शुभ, गणधर द्वारा गुम्फित है।
मुनियों द्वारा लिखा गया जो, भक्त जनों से वन्दित है।।

ॐ ह्रीं श्री जिनसर्वांगोद्भव-गणधर-ग्रहीत-द्वादशांग-मय-श्रुत-देवतायै: कामबाण-विध्वंसनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

नैवेद्य

भूमिपर जो नाज उगा है, भोजन बन तन तृप्त करे।
आगम से जो ज्ञान मिला है, धर्मभाव परिपुष्ट करे।।
तीर्थंकर की दिव्य ध्वनि शुभ, गणधर द्वारा गुम्फित है।
मुनियों द्वारा लिखा गया जो, भक्त जनों से वन्दित है।।

ॐ ह्रीं श्री जिनसर्वांगोद्भव-गणधर-ग्रहीत-द्वादशांग-मय-श्रुत-देवतायै: क्षुधा-रोग-विनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दीप

जगमग दीपक बाहर का तम, हरता वस्तु दिखलाता।
ज्ञानदीप आगम का जलता, निज आतम को बतलाता।।
तीर्थंकर की दिव्य ध्वनि शुभ, गणधर द्वारा गुम्फित है।
मुनियों द्वारा लिखा गया जो, भक्त जनों से वन्दित है।।

ॐ ह्रीं श्री जिनसर्वांगोद्भव-गणधर-ग्रहीत-द्वादशांग-मय-श्रुत-देवतायै: मोहान्धकार-विनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

धूप

अष्टगंध की धूप मनोहर, जलकर सुरभित करता है।
अष्ट मातृका ज्ञान मात्र ही, क्रिया करें भव तरता है।।
तीर्थंकर की दिव्य ध्वनि शुभ, गणधर द्वारा गुम्फित है।
मुनियों द्वारा लिखा गया जो, भक्त जनों से वन्दित है।।

ॐ ह्रीं श्री जिनसर्वांगोद्भव-गणधर-ग्रहीत-द्वादशांग-मय-श्रुत-देवतायै: अष्टकर्म-दहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

फल

तरुवर का फल पुनः बीज बन, अपना वंश बढ़ाता है।
जिनवाणी का ज्ञान विमल कर, केवल ज्ञान जगाता है।।
तीर्थंकर की दिव्य ध्वनि शुभ, गणधर द्वारा गुम्फित है।
मुनियों द्वारा लिखा गया जो, भक्त जनों से वन्दित है।।

ॐ ह्रीं श्री जिनसर्वांगोद्भव-गणधर-ग्रहीत-द्वादशांग-मय-श्रुत-देवतायै: मोक्ष महाफल प्राप्ताय फलं निर्वपामीति स्वाहा।

अर्घ्य

दिव्य ध्वनि का निर्मल जल ले, तत्वों का चन्दन लाया।
अंग पूर्व का अक्षत लेकर, धर्म पुष्प मन खिलवाया।।
नय निक्षेप का नेवज लेकर, गुणस्थान का दीप जला।
अष्ट कर्म का धूम उड़ाया, निराकार फल मोक्ष मिला।।
चारों अनुयोगों से पूरित, जिन आगम को जान रहे।
अष्ट द्रव्य मय अर्ध्य चढ़ाकर, जिनवाणी सम्मान करें।।

ॐ ह्रीं श्री जिनसर्वांगोद्भव-गणधर-ग्रहीत-द्वादशांग-मय-श्रुत-देवतायै: अनर्घ पद प्राप्ताय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जिनवाणी वेष्टन समर्पण

जय जिनवाणी माँ गुण गरिमा गा, वेष्टन लाऊँ दान करूँ।
जय शास्त्र लिखाऊँ और छपाऊँ, जिनवाणी विस्तार करूँ।।

ॐ ह्रीं श्रीजिनमुखोद्भव-सरस्वत्ये नमः वेष्टन समर्पयामि ।

जयमाला

महावीर की दिव्य ध्वनि तो, ग्यारह गणधर ने झेली।
बासठ वर्षों तक क्रम केवली, अनुबद्ध हो कर फैली।।
पंच केवली श्रुत में आकर, द्वादशांग विस्तार करें।
दशम पूर्व के ग्यारह मुनिवर, सर्व पाप निस्तार करें।।1।।

एक शतक तेईस वर्षों तक, ग्यारह अंग धरे मुनिराज।
अठ नव दश अंगों के धारी, तपसी थे सारे ऋषिराज।।
छः सौ तिरासी वर्षों तक, निर्ग्रन्थ महासंघ बना रहा।
असंख्यात निर्ग्रन्थ श्रमण से, जैन धर्म भी जमा रहा।।2।।

सिद्धान्तों की शुद्ध शृंखला, मुनियों से चलती आई।
ऋषभ देव से महावीर तक, तत्व द्रव्य कहती आई।।
द्वादशांगमय माँ जिनवाणी, ज्ञान सदा सुख दायी है।
"आचारांग" या "सूत्र कृतांगम्", धर्म भाव विकसायी है।।3।।

जीव राशि किस-किस योनि में, "स्थानांग" बताता है।
"समवायांग" या "व्याख्या प्रज्ञप्ति", समाधान कर जाता है।।
मुनिराजों की "ज्ञातृ कथा" जो, श्रद्धाभाव जगाते हैं।
"उपासकाध्यनांग" सदा ही, त्याग भाव बढ़ाते हैं।।4।।

"अंतकृत" दश "अनुत्तरं" अरुँ, "प्रश्न व्याकरण" का सुज्ञान।
"सूत्र विपाक" भी श्री जिनवाणी, "दृष्टि वाद" है पूर्ण विज्ञान।।
एक सौ बारह कोटि से भी, लाख तिरासी ज्यादा है।
अट्ठावन हज्जार पदों से, पाँच अधिक पद गाथा है।।5।।

एक अंग के धारी मुनिवर अर्हत्बली शुभ नाम कहो।
महाज्ञान धारी "धरसेना", मंत्र ज्ञान से युक्त अहो।।
दो शिष्यों को पास बुलाकर, मंत्र सिद्ध था करा दिया।
"महाकम्म पयडि पाहुड" का, दिव्य पाठ भी पढ़ा दिया।।6।।

महामनस्वी पुष्पदंत ने, "महामंत्र णमोकार" लिखा।
एक सौ सत्तहतर सूत्र ज्ञान में, जीव द्रव्य संसार दिखा।।
"पुष्पदन्त" अरुँ "भूतबली" ने, आगम का रस पिला दिया।
षट्खण्डागम् ग्रन्थ प्रगट कर, जैन धर्म को खिला दिया।।7।।

"षट्खण्डागम्" जैन धर्म का, मूल ग्रन्थ और मंत्र कहा।
जैनागम का सूर्योदय था, "श्रुत पंचमी" पर्व महा।।
उसी ज्ञान की अविरल धारा, ग्रन्थों में चलती आई।
णमोकार का आश्रय लेकर, शास्त्रों में ढलती आई।।8।।

अर्हन्तों की ॐ ध्वनि का, द्वादशांग में सार है।
तीर्थंकर परमेष्ठी वाणी, करती जग उद्धार है।।
जिनवाणी का अक्षर अक्षर, मंत्र रूप हो जाता है।
पत्रों पर अंकित होकर के, द्रव्य ग्रन्थ कहलाता है।।9।।

आगम के त्रय अक्षर हमको, "आप्त" ध्वनि बतलाते हैं।
"गणधर" द्वारा भाव ग्रन्थ रच, द्वादशांग कह जाते हैं।।
म अक्षर "मुनियों" का वाचक, द्रव्य ग्रन्थ प्रस्तुत कर्ता।
षट्खण्डागम् जय हो तेरी, पूजा कर सब दुख हर्ता।।10।।

सरस्वती जिनवाणी माता, हंस वाहिनी नाम तेरा।
तिमिर हारिणी ब्रह्मचारिणी, वाग्वादिनी नमन मेरा।।
जिनवाणी के जिनवचनों की, निज वचनों से गुण गाऊँ।
द्वादशांग मय 'सौरभ सागर', ज्ञानानन्द में खो जाऊँ।।11।।

ॐ ह्रीं श्री जिनसर्वांगोद्भव-गणधर-ग्रहीत-द्वादशांग-मय-श्रुत-देवतायै: जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा

जिनवाणी जिनदेव की, दिव्यध्वनि सुखकार।
पुष्पांजलिं क्षेपण करूँ, देकर शान्तिधार।।

शान्तये शान्तिधारा पुष्पांजलिं क्षिपेत्

तीन कम नौ करोड़ महामुनिराज पूजन

स्थापना

जिनवर के लघुनन्दन मुनिवर, परिषह जयते अविकारी।
महाव्रतों की करें साधना, परमेष्ठी पद के धारी।।
ज्ञान ध्यान तप आराधन में, लीन रहे मुनि करुणाधार।
आह्वानन स्थापन करता, हृदयांगन में करो विहार।।

ॐ ह्रीं त्रिकालवर्ति-ऋद्धि-सिद्धि-धारक-सर्व-मुनिवरेभ्य: अत्र अवतर अवतर संवोषट् आह्वाननम्।

ॐ ह्रीं त्रिकालवर्ति-ऋद्धि-सिद्धि-धारक-सर्व-मुनिवरेभ्य: अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठ: ठ: स्थापनम्।

ॐ ह्रीं त्रिकालवर्ति-ऋद्धि-सिद्धि-धारक-सर्व-मुनिवरेभ्य: अत्र मम् सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधिकरणम्।

जल

श्वेत शिखर से बहता पावन, निर्मल जल जीवन धारा।
चरण कमल में त्रय धारा दे, पाऊँ सुख अक्षय सारा।।
चरण कमल मुनिराज आपका, सदाचरण सिखलाता है।
जन्म जरा मृत्यु रोगों से, सबको पार लगाता है।।

ॐ ह्रीं भूत-भविष्य-वर्तमानकाल-संबंधी-सर्व-मुनिवरेभ्य: जन्म-जरा-मृत्यु-विनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

चन्दन

चन्दन वृक्ष-सा जीवन मुनि का, जो काटे सुरभित करते।
लेप लगा शीतलता पाते, अनुकम्पा अद्भुत करते।।
ऋद्धि सिद्धि धारक मुनिवर, धरती पर विहार करें।
गन्ध समर्पित चरण कमल में, मम आतम उद्धार करें।।

ॐ ह्रीं भूत-भविष्य-वर्तमानकाल-संबंधी-सर्व-मुनिवरेभ्य: संसार ताप विनाशनाय चन्दनं निर्वपामीति स्वाहा।

अक्षत

लंबे छोटे चावल सुन्दर, अक्षत बन मन को भाए।
धरती पर दो बार उगे वे, द्विजन्मा गुण बतलाए।।
काम भाव से जन्मा जीवन, सांसारिक कहलाता है।
धर्म ध्यान से सुलझा जीवन, अक्षय पद दर्शाता है।।

ॐ ह्रीं भूत-भविष्य-वर्तमानकाल-संबंधी-सर्व-मुनिवरेभ्य: अक्षय पद प्राप्ताय अक्षतं निर्वपामीति स्वाहा।

पुष्प

मोरपँख-सा कोमल मन कर, फूलों-सा खिलता रहता।
कांटों में प्रमुदित हो करके, धैर्यवान जीवन बनता।।
मुनिराज कण्टक में रहकर, निष्कण्टक जीवन जीते।
काम कामना की कालिमा तजकर, मन सुरभित करते।।

ॐ ह्रीं भूत-भविष्य-वर्तमानकाल-संबंधी-सर्व-मुनिवरेभ्य: कामबाण-विध्वंसनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

नैवेद्य

तन मन की सब भूख मिटाकर, छोड़ा धन भोजन संसार।
निरसता में रस खोजा पर, पाया ना उसमें कुछ सार।।
मुनिराज तन संचालन को, एक बार आहार करें।
पूजा में नैवेद्य चढ़ाकर, रोग क्षुधा निस्तार करें।।

ॐ ह्रीं भूत-भविष्य-वर्तमानकाल-संबंधी-सर्व-मुनिवरेभ्य: क्षुधारोग-विनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दीप

बाहर जलता दीपक जगमग, बाहर का तम हरता है।
स्याद्वाद अनेकान्त दीप जल, अन्तर तम क्षय करता है।।
मुनिराज की विनय वन्दना, मिथ्या दीप बुझाती है।
दीप समर्पित गुरु चरणों में, निज उद्योत कराती है।।

ॐ ह्रीं भूत-भविष्य-वर्तमानकाल-संबंधी-सर्व-मुनिवरेभ्य: मोहान्धकार-विनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

धूप

धूप जले पर धूम उड़े जो, प्रांगण को सुरभित करता।
कर्म जले तब धर्म फले वह, निज आतम प्रमुदित करता।
मुनिराज जी तप अग्नि में, कर्मन् धूप जलाते हैं।
पूजा में शुभ धूप समर्पित, अष्ट कर्म विनशाते हैं॥

ॐ ह्रीं भूत-भविष्य-वर्तमानकाल-संबंधी-सर्व-मुनिवरेभ्यः अष्ट कर्म-दहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

फल

तप की आभा मुखमण्डल पर, मुनिराज के सहज खिले।
सफल साधना फलीभूत हो, मोक्ष महाफल सहज मिले॥
निष्फल मेरी भक्ति ना हो, भाव समर्पित मैं करता।
निजगुण फल मन प्रगटित होवें, तरुवर फल अर्पित करता॥

ॐ ह्रीं भूत-भविष्य-वर्तमानकाल-संबंधी-सर्व-मुनिवरेभ्यः मोक्षमहाफल-प्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा।

अर्घ्य

भावों की शुभ थाल सजाकर, निर्मल मन का जल लाया।
प्रशम भाव का चन्दन लेकर, अनुकम्पा अक्षत भाया॥
आराधन का पुष्प संजोकर, नैवेद्यम् तपधार लिया।
धर्म दीप वसु कर्म धूप ले, मोक्ष महाफल साध लिया॥
अष्ट द्रव्य का मिश्रण करके, मुनिवर चरण चढ़ाऊँगा।
ऋद्धि सिद्धि समृद्धि पा, महाव्रतों को ध्याऊँगा॥

ॐ ह्रीं भूत-भविष्य-वर्तमानकाल-संबंधी-सर्व-मुनिवरेभ्यः अनर्घपद प्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जयमाला

हे महाऋषि! हे महायति!, हे महाव्रती! मुनिवर सारे।
हे महामना! हे धर्मधुरी!, हे पुण्यवान! जग हित कारे॥
हे वीतराग मुद्राधारी, हे पिच्छी कमण्डल के धारी।
हे शान्त छवि निर्ग्रन्थ मुनि, हे इन्द्रिय जेता अविकारी॥

भाव भावना बारह भाकर, सृष्टि का गुण जान लिया।
तज आडम्बर हुए दिगम्बर, मोक्ष मार्ग पहचान लिया॥
जीवन की क्षण भंगुरता लख, जीवन को जीवन्त किया।
जल से भिन्न कमलवत रहकर, निज जीवन को धन्य किया॥
आत्म तत्व की स्वर्णिम आभा, विषय भोग में क्षीण हुई।
गुप्ति समिति व्रत संयम से, कर्म कलिमा जीर्ण हुई॥
रत्नत्रय का मुख मण्डल पर, अद्भुत आभा चमक रही।
भेद ज्ञान की अद्भुत कान्ति-केशलोंच से दमक रही॥
ऋद्धि सिद्धि, धारक मुनिवर, जग उपकारी दिव्य महान।
भटके हम संसारी प्राणी, मार्ग बता कर दो कल्याण॥
जब तक जगति में जीवन है, तब तक जग में सन्त रहें।
यथाजात जिन रूप स्वरूपी, जैन सन्त जयवन्त रहें॥

दोहा

नौ करोड़ में तीन कम, जगति में मुनिराज।
सौरभसागर मिल नमे, तारण तरण जहाज॥

ॐ ह्रीं भूत-भविष्यत-वर्तमानकाल-संबंधी-सर्व-मुनिवरेभ्यः नमः जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

यह णमोकार मंत्र संसार में सार भूत है, तीनों जगत् में अनुपम है, समस्त पापों का शत्रु है, संसार का उच्छेद करने वाला मन्त्र है, विषय विष को हरने वाला है, कर्मों को निर्मूल करने वाला मन्त्र है, सिद्धि को देने वाला मंत्र है, मोक्ष का सुख उत्पन्न करने वाला है, केवलज्ञान को उत्पन्न करने वाला है, केवलज्ञान मंत्र का बार-बार जाप करो क्योंकि जपा हुआ यह मंत्र संसार से निर्वाण प्राप्त कराने वाला है।

"इस मंत्र से 84 लाख मंत्रों की उत्पत्ति हुई हैं इस मंत्र में तीन कम नौ करोड़ मुनिराजों को एवं अनन्तानन्त सिद्ध परमेष्ठियों को नमन किया गया है।"

श्री सिद्ध परमेष्ठी पूजन

स्थापना

कर्म जाल में उलझा चेतन, सिद्ध स्वरूपी विसराया।
इन्द्रिय जेता आत्म रसिक जिन, निराकार मन से ध्याया।।
अष्टम भूमि वासी जिनवर, श्रद्धा से आह्वान करूँ।
सिद्ध स्वरूपी बनने को मै, सिद्ध प्रभु भगवान भजूं।।

ॐ ह्रीं सर्व-कर्म-मुक्त-श्री-सिद्ध-परमेष्ठी-समुह! अत्र-अवतर-अवतर संवोषट् आह्वाननम्।

ॐ ह्रीं सर्व-कर्म-मुक्त-श्री-सिद्ध-परमेष्ठी-समुह! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनम्।

ॐ ह्रीं सर्व-कर्म-मुक्त-श्री-सिद्ध-परमेष्ठी-समुह! अत्र मम सन्निहितो भव-भव वषट् सन्निधिकरणम्।

जल

काली घटाएँ कर्मों की नित, मन अन्तस् में उमड़ रहीं।
पाप नीर से भरी हुई ये, भयकारी बन कड़क रहीं।।
भक्तिभाव की वर्षा कर मैं, कर्मों का अवसान करूँ।
सिद्ध स्वरूपी बनने को मैं, सिद्ध प्रभु भगवान भजूं।।

ॐ ह्रीं सर्व-कर्म-रहित-श्री-सिद्ध-परमेष्ठीभ्यः नमः जन्म-जरा-मृत्यु-विनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

चन्दन

जीवन और जगत का मेला, मोह डोर से बँधा हुआ।
राजाओं-सा आज दिखे जो, रंक बना कल रूँधा हुआ।।
राग द्वेष मद कर्म शृंखला, बन्धोदय अविराम हरूँ।
सिद्ध स्वरूपी बनने को मै, सिद्ध प्रभु भगवान भजूं।।

ॐ ह्रीं सर्व-कर्म-रहित-श्री-सिद्ध-परमेष्ठीभ्यः नमः संसार-ताप-विनाशनाय चन्दनं निर्वपामीति स्वाहा।

अक्षत

श्रद्धा की वेदी में जिनवर, आन विराजो करुणाधार।
भव वर्धक सब कर्म विनाशूँ, भक्ति ध्यान का पा आधार।।

कर्म विनाशी शिवपुर वासी, अक्षय पद सम्मान करूँ।
सिद्ध स्वरूपी बनने को मैं, सिद्ध प्रभु भगवान भजूं।।

ॐ ह्रीं सर्व-कर्म-रहित-श्री-सिद्ध-परमेष्ठीभ्यः नमः अक्षय-पद-प्राप्तये अक्षतं निर्वपामीति स्वाहा।

पुष्प

मन उपवन की क्यारी में कुछ, काम भाव के फूल खिले।
आकर्षित पर को करके ये, क्षण भर में ही घुले मिले।।
काम वासना के कीचड़ में, कमल पुष्प वरदान वरूँ।
सिद्ध स्वरूपी बनने को मैं, सिद्ध प्रभु भगवान भजूं।।

ॐ ह्रीं सर्व-कर्म-रहित-अनन्तानन्त-श्री-सिद्ध-परमेष्ठिभ्यः नमः काम-बाण-विध्वंसनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

नैवेद्य

तन-मन की नित भूख मिटाने, रोज गुनाहें करता हूँ।
मन की कमजोरी नासमझी, प्रतिदिन आहें भरता हूँ।।
नाशवान तन से तप करके, क्षुधा रोग अवसान करूँ।
सिद्ध स्वरूपी बनने को मैं, सिद्ध प्रभु भगवान भजूं।।

ॐ ह्रीं सर्व-कर्म-रहित-अनन्तानन्त-सिद्ध-परमेष्ठिभ्यः नमः क्षुधारोग विनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दीप

ईर्ष्या से भरकर मन मेरा, निज ईश्वर को भूल गया।
पद वैभव सम्मान ज्ञान पा, अहंकार में फूल गया।।
ध्यान दीप ले तिमिर मिटाऊँ, प्रगटित केवलज्ञान करूँ।
सिद्ध स्वरूपी बनने को मैं, सिद्ध प्रभु भगवान भजूं।।

ॐ ह्रीं सर्व कर्म रहित अनन्तानन्त सिद्ध परमेष्ठिभ्यः नमः मोहान्धकार विनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

धूप

देह रहित होने को निशदिन, देह सहित तप तपते हैं।
धर्म ध्यान और शुक्ल ध्यानकर, अष्ट कर्म को दहते हैं।।

निज में निज का अवलोकन कर, तीन लोक का ज्ञान करूँ।
सिद्ध स्वरूपी बनने को मैं, सिद्ध प्रभु भगवान भजूं।।

ॐ ह्रीं सर्व-कर्म-रहित-अनन्तानन्त-सिद्ध-परमेष्ठिभ्य: नम: अष्ट-कर्म-दहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

फल

पुण्योदय का फल अरिहन्ता, शुद्धभाव प्रगटाता है।
चरणों में फल अर्पित करता, पाप भाव विनशाता है।।
आत्म ध्यान का धनुष बाण ले, कर्मों पर संधान करूँ।
सिद्ध स्वरूपी बनने को मैं, सिद्ध प्रभु भगवान भजूं।।

ॐ ह्रीं सर्व-कर्म-रहित-अनन्तानन्त-सिद्ध-परमेष्ठिभ्य: नम: मोक्ष-महाफल-प्राप्ताय फलं निर्वपामीति स्वाहा।

अर्घ्य

कर्म वृक्ष की आठ डालियाँ, डेढ़ शतक दो कम पत्ते।
शूल चुभाते फूल बिछाते, जन्ममरण रोते हँसते।।
अष्ट द्रव्य मय अर्घ चढ़ाकर, अरिध्वंसी गुणगान करूँ।
सिद्ध स्वरूपी बनने को मैं, सिद्ध प्रभु भगवान भजूं।।

ॐ ह्रीं सर्व-कर्म-रहित-अनन्तानन्त-सिद्ध-परमेष्ठिभ्य: नम: अनर्घ-पद-प्राप्ताय-अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जयमाला

जय सिद्ध निरंजन निष्कामी, जय कर्म विजेता ध्रुव धामी।
जय ज्ञान दरश सुख शक्तिवान, जय शुद्ध निरामय कर्महान।।1।।

तेरे पावन पग पूज रहा, जिसके कारण महफूज़ रहा।
संसार सिंधु से पार करो, प्रभु मम जीवन उद्धार करो।।2।।

जीवन कितना है दुखित व्यथित, जब कर्म सताते हो उदित।
प्रभु! नरक निगोद में पड़ा रहा, निज आत्म बोध बिन गड़ा रहा।।3।।

कर्मों के बंधन थे अनन्त, स्वाभाविक क्षण में हुए शान्त।
झट गोद निगोद से निकल गया, पंचेन्द्रिय बनकर सँभल गया।।4।।

प्रभु! आप दरस का हो प्रभाव, मिथ्या दर्शन का हो अभाव।
प्रभु! चार कषाय विनश जावें, क्षायिक सम्यक् दर्शन पावे॥5॥

प्रभु! पंचम गुण स्थान चढ़ूँ, प्रभु! षष्ठम सप्तम ध्यान धरूँ।
प्रभु! त्याग भाव बढ़ता जाये, प्रभु! राग द्वेष घटता जाये॥6॥

मद मोह नहीं वैराग बढ़े, शत पाप प्रकृति का नाश करें।
कर्मों के खेल निराले हैं, सुख दुख के पूरे जाले हैं॥7॥

कर्मों से उन्नति अवनति है, कर्मों से मिलती सब गति है।
कर्मो से पाना खोना हैं, कर्मों का जीव खिलौना है॥8॥

वसु कर्म हमें भटकाते हैं, प्रभु पुजा से विनशाते हैं।
प्रभु ज्ञानावरण नशाया है, सर्वज्ञ-पने को पाया है॥9॥

प्रभु दर्शनावरण समाप्त किया, युगपत दोनों को प्राप्त किया।
जब कर्मवेदनी छटता है, अव्याबाधत्व प्रगटता है॥10॥

सम्यक्त्व शिखर सुख पाते हैं, जो मोह कर्म विनशाते हैं।
जो आयु कर्म खपाते हैं, अवगाहन गुण पा जाते हैं॥11॥

सुक्ष्मत्व महागुण प्रगट हुआ, जब नाम कर्म सब नष्ट हुआ।
जब ऊँच नीच के गोत्र हने, तब अगुरुलघुत्व के स्रोत बने॥12॥

महाशक्ति गुण पाया है, जब अन्तराय विनशाया हैं।
प्रभु आठ करम से मुक्त हुए, प्रभु आठ गुणों से युक्त हुए॥13॥

आतम में आनन्द बरस रहा, प्रभु दर्शन से मन सरस रहा।
शब्दों से भक्ति करी तेरी, मेटो भव भव की मम फेरी॥14॥

योजन पैंतालिस लक्ष कहा, कर्म भूमि अरूँ सिद्ध महा।
जो सिद्ध प्रभु को ध्याता है, वह स्वयंसिद्ध हो जाता है॥15॥

दोहा- स्वयं सिद्ध आलोक है, सिद्ध प्रभु गुणखान।
'सौरभ सागर' नित नमें, कर्म रहित भगवान।

ॐ ह्रीं सम्यक्त्व-ज्ञान-दर्शन-वीर्यत्व-सुक्ष्मत्व-अवगाहनत्व-अगुरुलघुत्व-अव्याबाधत्व-अष्टगुण-समन्वित-श्रीसिद्ध- -परमेष्ठियो नमः जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पुष्पगिरी तीर्थ पूजन

स्थापना

पुष्पगिरी का पावन तीरथ, पार्श्वनाथ भगवान हैं।
पदम प्रभु की प्रतिमा मनहर, अतिशय क्षेत्र महान है।।
बाल यति नेमी वीरा सह, मुनीसुव्रत जिन वंदन है।
आह्वानन स्थापन करता शांति नाथ अभिनंदन है।।

ॐ ह्रीं श्री पुष्पगिरी जिनालयस्थ श्री पार्श्वनाथ सह सर्व जिनदेवाय नमः अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्वाननं।

ॐ ह्रीं श्री पुष्पगिरी जिनालयस्थ श्री पार्श्वनाथ सह सर्व जिनदेवाय नमः अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनं।

ॐ ह्रीं श्री पुष्पगिरी जिनालयस्थ श्री पार्श्वनाथ सह सर्व जिनदेवाय नमः अत्र मम सन्निहितो भव-भव वषट् सन्निधिकरणं।

(जल)

भाव समर्पण का जल लेकर, चरणों में अर्पित करता।
जन्म जरा मृत नाश करो प्रभु, विनयवन्त चरणों झुकता।।
पुष्पगिरी का पावन तीरथ, पारसनाथ भगवान है।
भू प्रगटित जिन पावन प्रतिमा अतिशय क्षेत्र महान है।।

ॐ ह्रीं श्री पुष्पगिरी जिनालयस्थ श्री पार्श्वनाथ सह सर्व जिनदेवाय नमः जन्म जरा मृत्यु विनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

(चन्दन)

शीतल चंदन गंध वान हो, सबको देता दिव्य सुवास।
मसले कुचले काटे जलाए, सुरभित करता हर संताप।।
पुष्पगिरी का पावन तीरथ, पारसनाथ भगवान है।
भू प्रगटित जिन पावन प्रतिमा अतिशय क्षेत्र महान है।।

ॐ ह्रीं श्री पुष्पगिरी जिनालयस्थ श्री पार्श्वनाथ सह सर्व जिनदेवाय नमः संसारताप विनाशनाय चन्दनं निर्वपामीति स्वाहा।

(अक्षत)

मन वच तन को पावन करके, सुंदर तंदुल लाया हूं।
अक्षय पद की करूं कामना, अक्षत चरण चढ़ाया हूं।।
पुष्पगिरी का पावन तीरथ, पारसनाथ भगवान है।
भू प्रगटित जिन पावन प्रतिमा अतिशय क्षेत्र महान है।।

ॐ ह्रीं श्री पुष्पगिरी जिनालयस्थ श्री पार्श्वनाथ सह सर्व जिनदेवाय नमः अक्षय पद प्राप्तये अक्षतं निर्वपामीति स्वाहा।

(पुष्प)

कोमल कलियां डाली खिलती, सुबह शाम का जीवन है।
पुष्प चढ़ाकर काम नशाऊँ, समकित जीवन पावन है।।
पुष्पगिरी का पावन तीरथ, पारसनाथ भगवान है।
भू प्रगटित जिन पावन प्रतिमा अतिशय क्षेत्र महान है।।

ॐ ह्रीं श्री पुष्पगिरी जिनालयस्थ श्री पार्श्वनाथ सह सर्व जिनदेवाय नमः कामबाण विध्वंसनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

(नैवेद्य)

क्षुधा वेदना बेचैनी दे, भक्ति मन की हरती है।
चरणों में नैवेद्य समर्पित, खुशियां शांति भरती है।।
पुष्पगिरी का पावन तीरथ, पारसनाथ भगवान है।
भू प्रगटित जिन पावन प्रतिमा अतिशय क्षेत्र महान है।।

ॐ ह्रीं श्री पुष्पगिरी जिनालयस्थ श्री पार्श्वनाथ सह सर्व जिनदेवाय नमः क्षुधारोग विनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(दीप)

जगमग जगमग दीपक जलता, बाहर का जग दिखलाता।
ध्यान दीप अंतस में जलकर, केवल ज्ञान को प्रगटाता।।

पुष्पगिरी का पावन तीरथ, पारसनाथ भगवान है।
भू प्रगटित जिन पावन प्रतिमा अतिशय क्षेत्र महान है।।

ॐ ह्रीं श्री पुष्पगिरी जिनालयस्थ श्री पार्श्वनाथ सह सर्व जिनदेवाय नमः मोहांधकार विनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

(धूप)

अष्ट कर्म के नाशन हेतु, अष्टगंध मय धूप लिया।
अष्ट अंग चरणों में अर्पित, भक्ति में मन झूम लिया।।
पुष्पगिरी का पावन तीरथ, पारसनाथ भगवान है।
भू प्रगटित जिन पावन प्रतिमा अतिशय क्षेत्र महान है।।

ॐ ह्रीं श्री पुष्पगिरी जिनालयस्थ श्री पार्श्वनाथ सह सर्व जिनदेवाय नमः अष्टकर्म दहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

(फल)

लौकिक फल कि नहीं तमन्ना, मोक्ष महाफल चाहूंगा।
पादप फल चरणों में अर्पित, त्याग भाव प्रगटाऊंगा।।
पुष्पगिरी का पावन तीरथ, पारसनाथ भगवान है।
भू प्रगटित जिन पावन प्रतिमा अतिशय क्षेत्र महान है।।

ॐ ह्रीं श्री पुष्पगिरी जिनालयस्थ श्री पार्श्वनाथ सह सर्व जिनदेवाय नमः मोक्षफल प्राप्ताय फलं निर्वपामीति स्वाहा।

(अर्घ्य)

ईषत प्राग्भार भूमि पर, आप विराजे श्री भगवान।
अष्टद्रव्य मय अर्घ चढ़ाऊँ, जीवन होवे आप समान।।
पुष्पगिरी का पावन तीरथ, पारसनाथ भगवान है।
भू प्रगटित जिन पावन प्रतिमा अतिशय क्षेत्र महान है।।

ॐ ह्रीं श्री पुष्पगिरी जिनालयस्थ श्री पार्श्वनाथ सह सर्व जिनदेवाय नमः अनर्घ्यपद प्राप्ताय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जयमाला

दोहा

पार्श्वनाथ वंदन करूं, हृदय पद्म खिल जाए।
शांतिनाथ जयघोष कर, नेमिनाथ सिरनाय।।

शांत निराकुल पार्श्वनाथ की, प्रतिमा अतिशयकारी है।
पंद्रह शतक पुरानी प्रतिमा, कष्ट क्लेश दुख हारी है।।
माता वामा अश्वसेन घर, नगर बनारस जन्म लिया।
खुशियों की सौगात लुटाकर, नर देवों को धन्य किया।।
जलते नाग नागिनी लखकर, णमोकार उच्चार लिया।
बाल ब्रह्मचारी दीक्षा ले, निज आतम उद्धार किया।।
अहिक्षेत्र की धरा धाम में, घाती कर्म नशाया है।
कमठासुर का मान भस्म कर, केवल दीप जलाया है।।
शत वर्षों की आयु पाकर, तीर्थराज सम्मेद गए।
शेष अघाती कर्म विनाशे, सिद्धालय जा बैठ गए।।
तीर्थ काल सबसे छोटा पर, यशो काल है बृहद विशाल।
जहां-जहां प्रतिमाएं होती, भक्तजनों को करे निहाल।।
पुष्पगिरी के तीरर्थ नायक, पार्श्वनाथ महिमा न्यारी।
परिक्रमा में चौबीस जिनवर, दर्शन वंदन सुखकारी।।
गुरु पुष्प को स्वप्न दिखाकर, पुष्पगिरी में आई है।
सर्प बिच्छू का जहर चढ़े ना, अतिशय खूब दिखाई है।।
जब से पारस पर्वत पर आ, पुष्पगिरी में विराजित हैं।
पुष्पगिरी नित विकसित होता, भारत भर में शोभित हैं।।
पुष्पदंत गुरुदेव भावना, स्वप्न सभी साकार हुआ।
सेवा शिक्षा संस्कृति का, तीर्थ बड़ा विस्तार हुआ।।
पदम प्रभु का मंदिर सुंदर, पुष्प गुरु के इष्ट जिनेश।
मनमोहक जिन प्रतिमा भीतर, शांत विराजे कष्ट हरेश।।
अष्टधातु की खडगासन श्री, मुनिसुव्रत की प्रतिमा है।
द्वादशांग अरु ऋषिमंडल के, रजत यंत्र की महिमा है।।
सहस वर्ष प्राचीन मूर्ति जो, नेमीनाथ की शोभ रही।
रत्नमयी त्रिकाल चौबीसी, भक्तों का मन मोह रही।।
वासुपूज्य और पदम प्रभु की, मंगल प्रतिमा का वंदन।
पार्श्व मल्ली जिन हरित बिम्ब है, चरणों का नित अभिनंदन।।

नवग्रह जिनदेवों की प्रतिमा, नवग्रह के सब कष्ट हरे।
संत भवन का रत्न जिनालय, हर मन में संतोष भरे।।
जिनवाणी आकार लिए इक, बृहद शास्त्र का मंदिर है।
गिरनारी अरु ग्रंथ लिपि की, प्रति कृति भी अंदर है।।
णमोकार मय षट्खण्डागम, पुष्पदंत की रचना है।
सुंदर जिन आगम का संग्रह, इस मंदिर की गरिमा है।।
भक्त सदा श्रुत मंदिर आकर, अपना ज्ञान बढ़ाते हैं।
देव शास्त्र गुरु दर्शन पाकर, फूले नहीं समाते हैं।।
बाहर बाहुबली विराजे, ध्यान मग्न खड़गासन है।
चतुर्मुखी जिनबिम्ब अनुपम, नमन करें मन पावन है।।
मध्य भाग में तीर्थंकर श्री, पुष्पदंत जी रहे विराज।
सीपी में मोती सम चमके, त्रिभुवन नायक श्री जिनराज।।
पार्श्वनाथ को वंदन करके, त्रय मंजिल चढ़ते जाये।
दिव्य पद्म पर पद्मासन में, पदम प्रभु दर्शन पाए।।
हाथ जोड़कर नयन खोलकर, जिन मूरत को देख रहे।
संत समाधि छत्री भवना, वृद्धाश्रम उल्लेख करें।।
गौशाला स्कुल दिखे दो, कलशा त्रय शुभ द्वार दिखे।
तीनों मानस्तंभ नमे हम, गौतम सा उद्धार मिले।।
मल्ली नेमी पारस वीरा, वासुपूज्य है बालयति।
भू प्रगटित खड्गासन प्रतिमा, नमन करूँ मैं शुद्ध मती।।
पदम प्रभु के कमल चिन्ह सा, खिलता तीरथ प्यारा है।
सेवा शिक्षा धर्मध्यान का, भाव जगे यह नारा है।।
अल्प समय में वृहद कार्य ले, दिन प्रतिदिन बढ़ता जाए।
प्राणी मात्र को सम्यक पथ दे, तीर्थ सूर्य चढ़ता जाए।।
भक्तों की भक्ति का साधन, सभी जगह में चमक रहा।
सोलह कारण के साधन से, पुष्पगिरी भी पनप रहा।।
पुष्प गिरी के जिन मंदिर में, जितनी प्रतिमा शोभित हैं।
चरण वंदना अर्घ समर्पित, जयमाला मनमोदित है।।

दोहा- पुष्पगिरी की अर्चना, सर्व पाप विनशाय।
"सौरभ सागर" भक्ति कर, आत्मिक सुख भी पाए।।

ॐ ह्रीं श्री पुष्पगिरी तीर्थ स्थित समस्त जिनालयस्थ सर्व जिनबिम्बेभ्यो नमः अनर्घ्यपद प्राप्ताय जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

गणाचार्य पुष्पदंत सागर जी पूजन

स्थापना

मंगल मूरत दिव्य स्वरूपी, भव्यों के मनहारी हैं।
राग तजें वैराग भजें, गुरु पुष्पदंत उपकारी हैं।।
जीवन को जीवन्त बनाने, मोक्ष मार्ग स्वीकार किया।
महातपस्वी ज्ञान मनीषी, मम जीवन उद्धार किया।।

ॐ ह्रूं गणाचार्य पुष्पदंत सागर गुरुवर! अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्वाननम्। ॐ ह्रूं गणाचार्य पुष्पदंत सागर गुरुवर! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनम्। ॐ ह्रूं गणाचार्य पुष्पदंत सागर गुरुवर! अत्र मम सन्निहितो भव-भव वषट् सन्निधिकरणम्।

जल

जल स्वभाव से निर्मल नीचे, बहता प्यास बुझाता है।
पुष्पदंत गुरु विनय शील बन, सबका भाग्य जगाता है।।
मम श्रद्धा के देव आप हो, पुष्पदंत गुरु अविकारी।
भक्ति भाव से चरण वन्दना, करता मम मन हितकारी।।

ॐ ह्रूं गणाचार्य-पुष्पदंत-सागर-चरण-कमलेभ्यो: जन्म-जरा-मृत्यु-विनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

चन्दन

तप से सुरभित तन पावन है, चन्दन सम वाणी तेरी।
मन संताप मिटाने वाली, अपनापन जय हो तेरी।।
मम श्रद्धा के देव आप हो, पुष्पदंत गुरु अविकारी।
भक्ति भाव से चरण वन्दना, करता मम मन हितकारी।।

ॐ ह्रूं गणाचार्य-पुष्पदंत-सागर-चरण-कमलेभ्यो: संसार-ताप-विनाशनाय चन्दनं निर्वपामीति स्वाहा।

अक्षत

द्वादशांग का ज्ञान भरा जो, अक्षय रूप से बाँट रहे।
मन वच तन को अक्षत करके, कर्म कालिमा छाँट रहे।।
मम श्रद्धा के देव आप हो, पुष्पदंत गुरु अविकारी।
भक्ति भाव से चरण वन्दना, करता मम मन हितकारी।।

ॐ ह्रूं गणाचार्य-पुष्पदंत-सागर-चरण-कमलेभ्यो: अक्षय-पद-प्राप्ताय अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा।

पुष्प

मुख-मण्डल पुष्पों-सा कोमल, खिला खिला-सा रहता है।
भक्तों का मन रूप निरखकर, आनन्दित हो कहता है।।
मम श्रद्धा के देव आप हो, पुष्पदंत गुरु अविकारी।
भक्ति भाव से चरण वन्दना, करता मम मन हितकारी।।

ॐ ह्रूं गणाचार्य-पुष्पदंत-सागर-चरण-कमलेभ्यो: कामबाण-विध्वंसनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

नैवेद्य

तन वाहन भोजन से चलता, अल्प रूप में ग्रहण करें।
श्रावक श्रद्धा से चर्या कर, अपने भव का भ्रमण हरे।।
मम श्रद्धा के देव आप हो, पुष्पदंत गुरु अविकारी।
भक्ति भाव से चरण वन्दना, करता मम मन हितकारी।।

ॐ ह्रूं गणाचार्य-पुष्पदंत-सागर-चरण-कमलेभ्यो: क्षुधा-रोग-विनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दीप

ज्ञानामृत की दिव्य ज्योत से, मन का दीपक जला रहे।
मन अंधियारा दूर हटाकर, मोक्ष मार्ग पर चला रहे।।
मम श्रद्धा के देव आप हो, पुष्पदंत गुरु अविकारी।
भक्ति भाव से चरण वन्दना, करता मम मन हितकारी।।

ॐ ह्रूं गणाचार्य-पुष्पदंत-सागर-चरण-कमलेभ्यो: मोहांधकार-विनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

धूप

अग्नि मे जलकर धूपं तो, महक बिखेरा करता है।
गुरुवर तेरा वात्सल्य तो, चहक उकेरा करता है।।
मन श्रद्धा के देव आप हो, पुष्पदन्त गुरु अविकारी।
भक्ति भाव से चरण वंदना करता मम मन हितकारी।।

ॐ ह्रूं गणाचार्य-पुष्पदंत-सागर-चरण-कमलेभ्यो: अष्टकर्म-दहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

फल

डाली से संबंधित फल ज्यों, बढ़ता पकता फलता है।
गुरुवर तेरे चरण वंद्य से, मोक्ष मार्ग मम चलता है।।
मम श्रद्धा के देव आप हो, पुष्पदंत गुरु अविकारी।
भक्ति भाव से चरण वन्दना, करता मम मन हितकारी।।

ॐ ह्रूं गणाचार्य-पुष्पदंत-सागर-चरण-कमलेभ्यो: मोक्षफल-प्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा।

अर्घ्य

जल चन्दन अक्षत पुष्पों की, शुभ सामग्री पावन है।
दीप धूप नैवेद्य फलों से, अर्घ बना मन भावन है।।
मम श्रद्धा के देव आप हो, पुष्पदंत गुरु अविकारी।
भक्ति भाव से चरण वन्दना, करता मम मन हितकारी।।

ॐ ह्रूं गणाचार्य-पुष्पदंत-सागर-चरण-कमलेभ्यो: अनर्घ पद-प्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा

पुष्पदंत जयवन्त हो, धारें पद अरहन्त।
गाऊँ जयमाला गुरु, पाने पद निर्ग्रन्थ।।

जयमाला

जय पुष्पदंत गुरु सन्त आप, जय धर्म मार्ग के सूर्य आप।
जय पर उपकारी दिव्य रूप, जय करुणाधारी गुण अनूप।।1।।
जय श्रमण संस्कृति के नेता, जय त्याग रूप इन्द्रिय जेता।
जय रत्नत्रय धारी महान, जय धर्म धुरंधर ज्ञानवान।।2।।
जय जय जय जय गुरु पुष्पदंत, जय हो जय हो जय जैन सन्त।
जय जय जय जय गुरु पुष्पदंत, जय हो जय हो जय जैन सन्त।3।।
है कोमल पितु मथुरा माता, पर उनसे ना तेरा नाता।
जब उमर हुई छब्बीस साल, मुनि दीक्षा ले निज को सँभाल।।4।।
गुरु विमल सिन्धु ने दी दीक्षा, अपनी क्षमता से ली शिक्षा।।
फिर नगर नगर विहार किया, जैनागम को विस्तार दिया।5।।
गुरु जय हो जय हो जय तेरी, गुरु मेटो भव भव की फेरी।।

गुरु जय हो जय हो जय तेरी, गुरु मेटो भव भव की फेरी॥6॥
गुरु भारत भर में भ्रमण किया, सबने धर्मामृत श्रवण किया।
गुरु भवोदधि के तारक हो, गुरु भक्तों के उद्धारक हो॥7॥
गुरु दीर्घ तपस्वी तीरथ हो, तप त्याग की अद्भुत मूरत हो।
गुरु भ्रम के जाल हटाते हो, गुरु मोक्ष मार्ग प्रगटाते हो॥8॥
गुरु पुष्पदंत की जय बोलो, जय बोलो हिय के पट खोलो।
गुरु पुष्पदंत की जय बोलो, जय बोलो हिय के पट खोलो॥9॥
तुम पंच महाव्रत धारी हो, तुम क्षमा शील अवतारी हो॥
तुम संघर्षों में हँसते हो, तुम उपसर्गों को सहते हो॥10॥
तुम निस्पृह योगी ज्ञाता हो, तुम अपने भाग्य विधाता हो॥
तुम अद्भुत हो तुम अनुपम हो, तुम मम जीवन के दर्पण हो॥11॥
जय हो जय हो जय गुणवन्त, जय हो जय हो जय निर्ग्रन्थ॥
जय हो जय हो जय गुणवन्त, जय हो जय हो जय निर्ग्रन्थ॥12॥
जो भव्य निकट आ भक्ति करे, वह दिव्य ज्योति से शक्ति वरे।
मैं हूँ तेरा छोटा बालक, गुरु आप कृपा सिन्धु पालक॥13॥
गुरु तेरी पूजा करता हूँ, अपने दुर्गुण को तजता हूँ।
गुरु वरद हस्त सिरपर रख दो, मुझको निज संयम से भर दो॥14॥
जय संयमधारी ज्ञानवन्त, जय वर्तमान के श्रेष्ठ सन्त।
जय संयमधारी ज्ञानवन्त, जय वर्तमान के श्रेष्ठ सन्त॥15॥
मैं अर्घ चढ़ा विनती करता, तेरे पथ चलकर ही तरता।
मैं शक्ति हीन अनुरागी हूँ, तुम शक्तिवान वैरागी हो॥16॥
मम अन्तर मन प्रक्षाल करो, मम जीवन को खुशहाल करो।
गुरु जयकारा तेरी करता, 'सौरभ' सुरभित हो भव तरता॥17॥
जय कृपा निधान दिव्य संत, जय जय गुरुवर श्री पुष्पदंत॥
जय कृपा निधान दिव्य संत, जय जय गुरुवर श्री पुष्पदंत॥18॥

दोहा

महाश्रमण महावीर के, प्रतिनिधी हो आप।
'सौरभ सागर' नित नमें, हरने जग संताप॥

ॐ ह्रूं श्रीपुष्पदंत-सागराचार्य-परमेष्ठिने नमः जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

गुरु पुष्पदंत चालीसा

दोहा

चरण कमल मस्तक नवा, गुरु को करता याद।
चालीसा आंरभ करूँ, सुनो गुरु फरियाद॥
भटक चुका संसार में, आया तेरे पास।
तड़पन इस संसार की, कर दो गुरुवर नाश॥

चौपाई

जय श्री पुष्पदंत गुरुदेवा, तुमरे इष्ट पद्मप्रभु देवा।
हम सब भक्त तुम्हें हैं ध्याते, तुम भक्तों के कष्ट मिटाते॥
जन्म लिया है जिला भण्डारा, ग्राम गोंदिया उसमें प्यारा।
माँ मथुरा के राज दुलारे, कोमल पितु के हो सुकुमारे॥
एक जनवरी जन्मतिथि है, तेईस वर्ष में प्रज्ञा जगी है।
ब्रह्मचर्य व्रत धार लिया है निज आतम उद्धार किया है॥
क्षुल्लक एलक की ली दीक्षा, माह अठारह पाई शिक्षा।
गर जग से छुटकारा चाहो, भेष दिगम्बर को अपनाओ॥
वाक्य सुना जब तुमने इतना, सोचा जल्दी दीक्षा लेना।
भाव उमड़कर बाहर आये, विमल सागर के दर्शन पायें॥
विमल सिन्धु ने जैसे देखा, दीक्षा का संदेशा भेजा।
झट बोले गुरु दीक्षा दे दो, मेरी नैया तुम ही खेदो॥
निमित्त ज्ञान से इनको लखकर, बना दिया तुमको दीगम्बर।
जैसे ही मुनि दीक्षा पाई, स्वानुभूति की अलख जगाई॥
अनुभूति के होते गुरुवर, पहुँचे ज्ञान के उच्च शिखर पर।
तुमने ज्ञान प्रचार किया है, शुद्ध शास्त्र आधार लिया है॥
अंजुलि भर गुरुवर तुम लेते, दरिया भर कर हमको देते।
रसना का तुमने स्वाद है छोड़ा, ज्ञान ध्यान से नाता जोड़ा॥
प्रवचन वाचस्पति कहलाए, विमल सिन्धु से मान है पाए।
अन्तस चेतना के संवाहक, श्रमण संस्कृति के उत्थापक॥

युवा वर्ग गुरु तुमको चाहे, तुम्हरे पीछे हरदम भागे।
जय जय नाद से गगन गुँजावे, तेरे गुण गौरव को गावे॥
प्रज्ञश्री को जन्म दिया है, जपने मंत्रित जाप्य दिया है।
पद्म प्रभु का नाम जपाते, भूत-प्रेत को दूर भगाते॥
ऋषिमण्डल का जाप लिया है, कई मंत्रों को सिद्ध किया है।
मंत्रों के ज्ञाता ज्योतिषी, समाधान के ज्ञान मनीषी॥
बाल संघ के हो तुम नायक, जिन आगम के हो तुम ज्ञायक।
पुष्प गिरी का तीर्थ बनाये-सबमें सेवा भाव जगायें॥
हो गुरुवर तुम अतिशयकारी, तुम दु:ख के भंजन अधिकारी।
एक दिवस की बात बताता, पुष्पदंत महिमा मैं गाता॥
छत्तीसगढ़ में किया प्रवेश, हुई प्रभावना जहाँ विशेष।
सुन्दरग्राम है जसपुर नगरी, पहुँचे तुम ले ज्ञान की गगरी॥
बड़े-बड़े अधिकारी आकर, प्रवचन सुनते ध्यान लगाकर।
बौद्ध भिक्षु को लाये एस.पी., लकवा का था भारी रोगी॥
किसी तरह दर्शन को आया, तन में इक झटका-सा पाया।
गुरु आज्ञा से झूला झुलाया, रोग हाथ का दूर भगाया॥
कण्ठ रोग भी दूर किया है, जब तुमने आशीष दिया है।
शान्तिनाथ विधान कराया, लकवा हाथ का शीघ्र पलाया॥
यह अतिशय गुरु तेरा ही था, तव चरणन झुकता मम माथा।
चालीसे को हम सब गायें, पुष्प गुरु को शीश झुकायें॥

दोहा

नित इकतीसहि बार, पाठ करें इकतीस दिन।
खेय सुगन्ध अपार, ध्यान हृदय में लाय के॥
रोग शोक सब दूर हों, पास पाप आवें नहीं।
जीवन में घुल जाय, 'सौरभ' की सुरभि गुरु॥

जाप्य मंत्र : ॐ ह्रूं पुष्पदंत गुरुवे नमः

गणाचार्य श्री पुष्पदंत सागर जी की आरती

ओम जय पुष्पदंत स्वामी, स्वामी जय पुष्पदंत स्वामी
तुम हो पाप निवारक-2, पुण्य वृद्धि दानी,
ओम जय पुष्पदंत स्वामी।।1।।
गोंदिया नगर में जन्म लिए थे, हो करुणाधारी,
स्वामी हो करुणाधारी,
हमको पार करो तुम-2, तव गुण है भारी,
ओम जय पुष्पदंत स्वामी।।2।।
विमल सागर से दीक्षा पाई, विद्या ज्ञान दिया,
स्वामी विद्या ज्ञान दिया,
गुरु द्वय चरण में रहकर-2, सेवा खूब किया,
ओम जय पुष्पदंत स्वामी।।3।।
गुरु तुम दीपक हम हैं बाती, धरम की ज्योति जले,
स्वामी धरम की ज्योति जले,
श्रद्धा घृत को लेकर-2, आरती तेरी करें,
ओम जय पुष्पदंत स्वामी।।4।।
पंच महाव्रत धार के तुमने, जग से मुख फेरा
स्वामी जग से मुख फेरा,
राजा हो या भिखारी-2 सब पर प्रेम, तेरा
ओम जय पुष्पदंत स्वामी।।5।।
आरती करते तेरी, दूर करो तम को,
स्वामी दूर करो तम को दूर,
'सौरभ' सेवक तेरा-2, पार करो उसको
ओम जय पुष्पदंत स्वामी।।6।।

आचार्य श्री 108 सौरभ सागर जी पूजन

स्थापना

सौरभ सागर गुरु को, नमन हो बारम्बार।
श्रद्धा पुष्प चढ़ा रहे, करना तुम उद्धार।।
हृदय कमल पर आ तिष्ठो, सौरभ सागर महाराज।
जिह्वा गुण गाती रहे, हो मुनिवर सरताज।।

ॐ ह्रूं आचार्य श्री 108 सौरभ सागर जी महाराज अत्र अवतर-अवतर संवौष्ट आह्वाननम्। अत्र तिष्ठ ठः ठः स्थापनम्। अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधिकरणम्।

जल

रगड़ रगड़ कर ये तन धोया, मन का मैल ना धो पाए।
इसीलिए तो गुरुवर क्षीरोदधि, से जल लेकर आए।।
निर्मल जल अर्पित करते हैं, जन्म जरामृत नष्ट करो।
मेरे सौरभ सागर गुरुवर, मम कष्टों को दूर करो।।

ॐ ह्रूं आचार्य श्री 108 सौरभ सागर जी महाराज के चरणों में जन्म जरा मृत्यु विनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

चन्दन

तरह तरह के लेप किए पर, तन संताप ना दूर हुआ।
जितना इसका शमन किया यह, उतना ही फिर और बढ़ा।।
मलयागिर चन्दन अर्पित तुमको, भव संताप को नष्ट करो।
मेरे सौरभ सागर गुरुवर, मम कष्टों को दूर करो।।

ॐ ह्रूं आचार्य श्री 108 सौरभ सागर जी महाराज के चरणों में भवताप विनाशनाय चन्दनं निर्वपामीति स्वाहा।

अक्षत

संसार दुःखों से भरा हुआ, नहीं मिलता मुझे किनारा है।
मोह माया से जकड़ा जीवन, पर ना कोई सहारा है।।
उज्जवल अक्षत अर्पित तुमको, इनको तुम स्वीकार करो।
मेरे सौरभ सागर गुरुवर, मम कष्टों को दूर करो।।

ॐ ह्रूं आचार्य श्री 108 सौरभ सागर जी महाराज के चरणों में अक्षय पद प्राप्ताये अक्षतं निर्वपामीति स्वाहा।

पुष्प

काम वेग से घिरे हुए हैं, कैसे बन्धन तोड़े हम।
तरह तरह के इत्र लगाए, इन्द्रीय दास बने हैं हम॥
कोमल पुष्प समर्पित तुमको, काम बाण को नष्ट करो।
मेरे सौरभ सागर गुरुवर, मम कष्टों को दूर करो॥

ॐ ह्रूं आचार्य श्री 108 सौरभ सागर जी महाराज के चरणों में कामबाण विध्वंसनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

नैवेद्य

नाना मिष्ट पकवान डकारे, फिर भी क्षुधा ना शान्त हुई।
जिव्हा के वश होकर मैंने, भक्ष अभक्ष की सुधि खोई॥
सरस नैवेद्य अर्पित तुमको, क्षुधा रोग को ध्वस्त करो।
मेरे सौरभ सागर गुरुवर, मम कष्टों को दूर करो॥

ॐ ह्रूं आचार्य श्री 108 सौरभ सागर जी महाराज के चरणों में क्षुधा रोग विनाशनाय-नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दीप

अज्ञान तिमिर ने हमको घेरा, कैसे मंजिल पाएंगे।
तेरे ज्ञान की ज्योति पाकर, सहज पार हो जाएंगे॥
ज्ञान से ज्ञान की ज्योति जलती, दीपक तुम स्वीकार करो।
मेरे सौरभ सागर गुरुवर, मम कष्टों को दूर करो॥

ॐ ह्रूं आचार्य श्री 108 सौरभ सागर जी महाराज के चरणों में मोहांधकार विनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

धूप

अष्ट कर्म की दलदल में हम, हरदम फंसते जाते हैं।
पाप कर्म हम करते रहते, फल से नहीं घबराते हैं॥
धूप समर्पित तव चरणों में, अष्टकर्म का दहन करो।
मेरे सौरभ सागर गुरुवर, मम कष्टों को दूर करो॥

ॐ ह्रूं आचार्य श्री 108 सौरभ सागर जी महाराज के चरणों में अष्टकर्म दहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

फल

लौंग बादाम और किशमिश लेकर, तेरे द्वारे आए हैं।
मोक्ष के फल का स्वाद बता दो, इच्छा मन में लाए हैं।।
फल अर्पित है चरण तुम्हारे, मुक्ति रमा का वरण करूँ।
मेरे सौरभ सागर गुरुवर, मम कष्टों को दूर करो।।

ॐ ह्रूं आचार्य श्री 108 सौरभ सागर जी महाराज के चरणों में मोक्ष फल प्राप्ताये फलं निर्वपामीति स्वाहा।

अर्घ्य

जल चन्दन अक्षत पुष्प नैवेद्य, दीप धूप फल ले आए।
तब चरणों में अर्घ चढ़ा के, अष्टम वसुधा पा जाए।।
हम अर्घ समर्पित करते हैं, गुरुवर तुम स्वीकार करो।
मेरे सौरभ सागर गुरुवर, मम कष्टों को दूर करो।।

ॐ ह्रूं आचार्य श्री 108 सौरभ सागर जी महाराज के चरणों में अनर्घ-पद-प्राप्ताये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा- **भव भव से भटके फिरे, कोई ना तारनहार।**
सौरभ सागर गुरु मेरे, तुम ही करो उद्धार।।

जयमाला

लय (दे दी हमें आजादी....)

सौरभ सागर जी देव, गुरुदेव हमारे।
करते हैं भव से पार, गुरुदेव हमारे।।
माँ चन्द्रप्रभा कोख में, जब आप थे आए।
शुभ स्वप्न देख माता भी, फूली ना समाए।।
गज, सर्प, आग, सूर्य भी, देख लिया था।
अद्वितीय पुत्र जन्मेगा, ये जान लिया था।।1।।
जसपुर में गुरुदेव, तुमने, जन्म लिया था।
जसपुर की माटी को भी, तूने धन्य किया था।।
गुरू पुष्पदंत संघ, जसपुर में पधारे।
बालक सुरेन्द्र पुष्प संग, चल दिया प्यारे।।2।।
तपअग्नि में बारह वर्ष, गुरूदेव तपाया।
मैं भी बनूँ तब सम, गुरु ये मन में है भाया।।

आचार्य गुरुदेव ने, सौरभ बना दिया।
मुनिबाने से गुरुदेव ने, तुमको सजा दिया।।3।।
बाली उमर से सौरभ जी, अमृत पिला रहे।
आहत भी राहत पाके, आशीष पा रहे।।
संस्कार अलख देव, जन जन में जगाए।
संस्कार प्रणेता तभी, गुरुदेव कहलाए।।4।।
सृजन किया गुरुदेव ने, रचना कई लिखी।
सिद्धान्त शतक एक है, नायाब नव कृति।।
जिसने भी गुरुदेव का, साहित्य पढ़ा है।
जैनत्व बोध करके, उसका पाप कटा है।।5।।
बच्चों व शिक्षकों को, चमड़ा मुक्त किया है।
सौरभाँचल तीर्थ का, उपहार दिया है।।
हिसार की नसिया का, भी उद्धार है किया।
मनहर पारस क्षेत्र नाम, उसको दे दिया।।6।।
भू गर्भ में दबे थे, आदि पार्श्व अर वीरा।
अपने ज्ञान योग से, तुम जान लिया था।।
ज्ञान योगी देव गुरूदेव कहाए।
गुरूदेव के जयकार से गगन गुंजाए।।7।।
झज्जर के ग्राम झाडली में वीर थे प्रकटे।
ना देगे वीर मूर्त, ग्रामवासी अड़ गए।।
भक्ति की शक्ति से, महावीर बुलाए।
मंशा पूर्ण वीर, महावीर कहलाए।।8।।
पुष्पगिरी तीर्थ अप्रैल दश महा।
मेला लगा दृश्य अनुपम रहा महा।।
चारों दिशाएं गुंज उठी नमस्कार से।
आचार्य पद प्रतिष्ठा हुई जयजयकार से।।9।।
हम भी तो तेरे दर पे, अरदास लाए हैं।
दर्शन तिहारे मिलते रहे, प्यास लाए हैं।।
जीवन में मेरे 'आशा' की, तुम ज्योत जगा दो।
सुना है तेरा नाम, मेरी बिगड़ी बना दो।।10।।

ॐ ह्रूं आचार्य श्री 108 सौरभ सागर जी महाराज के चरणों में अनर्घ पद प्राप्ताये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा- **सौरभ सागर गुरु का, करूँ हमेशा ध्यान।**
भक्त की हर श्वास में, सौरभ सागर नाम।।

पुष्पांजलिं क्षिपेत्

अर्घ-आचार्य श्री सौरभ सागर जी

जल से घुलते कर्म हमारे, चन्दन से मिलती शीतलता।
पुंज चढ़े जब गुरु चरणों, में पुष्प सुगन्धित है देता।।
नैवेद्य चढ़ाकर क्षुधा नशाऊँ, निज ज्ञान का दीप जलाऊँ मैं।
धूप चढ़ाकर कर्म जलाऊँ, फल से मोक्ष फल पाऊँ मैं।।
आठों द्रव्यों को एक मिलाकर, गुरुवर के गुण गाऊँ मैं।
भव भव के सब पाप नशे, अरिहंत अवस्था पाऊँ मैं।।

ॐ ह्रूं संस्कार प्रणेता ज्ञानयोगी आचार्यश्री सौरभ सागर जी गुरुदेव चरणेभ्यो अनर्घ पद प्राप्ताय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

आरती आचार्य श्री 108 सौरभ सागर जी की

(लय - तन डोले, मन डोले ...)

सौरभ सागर की, गुण आगर की
शुभ कंचन दीप सजाय के, आज उतारूँ आरतिया
माता चन्द्रप्रभा जी के जाये, श्रीपाल जी के सुत कहलाये
पुष्पदंत जी की बगिया से, ये कोमल पुष्प है आये
सुगन्धित कोमल पुष्प है आये
गुरु की सुरभि से सुरभित होकर कंचन दीप सजाय के ...
गुरु की छवि है इतनी निराली मन को बहुत लुभाती
महिमा गुरुवर के वचनों की जन-जन को हर्षाती
जय गुरुवर जन-जन को हर्षाती
इनके चरणन शत् शत् वन्दन शुभ कंचन दीप सजाय के...
जो भी इनकी शरण में आए, सब संकट कट जाये
हम भी भटके हैं जन्मों से हमको भी पार लगाये
हो जय गुरूवर, हमें भी पार लगाये
यह विनती करें तोसें अरज करें शुभ कंचन दीप ...

संस्कार प्रणेता ज्ञानयोगी
आचार्य श्री 108 सौरभ सागर चालीसा

मनमंदिर में आन बसे, सौरभ सागर महाराज।
धर्म की राह दिखा दई, और सँवारे काज॥
ऐसे गुरु का यदि रहे, भक्त के सिर पर हाथ।
रोग शोक सब दूर रहे, सुख की हो बरसात॥

सौरभ सागर गुरु हमारे, भक्तों के सब कष्ट निवारे।
ये गुरुवर है अन्तर्यामी, मन की सारी बाते जानी॥

मनमोहक मुस्कान तुम्हारी, छवि तुम्हारी है मनहारी।
चन्द्रप्रभा जी की कोख में आए, शुभ लक्षण उनको दर्शाए॥

उगता हुआ इक सूरज देखा, सर्पो का एक जोड़ा देखा।
इक जंगल में आग भी देखी, हाथी की इक जोड़ी देखी॥

श्री पाल जी को स्वप्न बताए, फल जाना तो बहु हरषाए।
पुत्र रत्न इक घर आएगा, दावानल सा यश पाएगा॥

मस्त हस्ती सम भ्रमण करेगा, सूरज सम जग में चमकेगा।
बाबा की आँखों का तारा, सुरेन्द्र नाम लगता था प्यारा॥

गुरु पुष्प संघ जसपुर आया, इस बालक का भाग जगाया।
अद्भुत प्रतिभा देखी तुझमें, ज्ञानयोगी इक छिपा था तुझमें॥

पिता से तुमको मांग लिया था, मात पिता ने सहर्ष दिया था।
तप अग्नि में तुम्हें तपाया, बारह बरस का समय बिताया॥

क्षमावाणी का शुभ दिन आया, दीक्षा धारुँ ये था भाया।
21 सितम्बर दिन पुण्यशाली, होती गुरु की दीक्षा दिवाली॥

चहुँ दिशि अम्बर बने तुम्हारे, वीतरागी मुद्रा जब धारे।
वाणी तेरी शीतल चन्दन, शीघ्र मिटाती मन का क्रन्दन॥

जिस नगरी भी कदम बढ़ाए, अतिशय अपने खूब दिखाए।
धर्म की ऐसी अलख जगाई, 'संस्कार प्रणेता' उपमा पाई॥

जेल में जो उपदेश सुनाए, मद्य माँस से लोग छुड़ाए।
जब बच्चे उपदेश हैं सुनते, शहद ब्रैड व चमड़ा तजते।।

जिस नगरी भी किया चौमासा, भक्तों के मन भर दी आशा।
निर्बल तुझसे बल पा जाए, वीराने हरियाली पाए।।

जंगल में मंगल करते हो, संकट सारे तुम हरते हो।
जिस पर होती कृपा तुम्हारी, उसकी तो किस्मत है सँवारी।।

एक प्रेरणा तुमसे पाई सौरभाँचल की नींव धराई।
सौरभाँचल एक तीरथ प्यारा, नव जिनग्रह का देख नजारा।।

वृहद आदि पद्मासन प्रतिमा, नीलाम्बर का लगा चँदोवा।
श्रुत स्कन्ध मंदिर बनवाया, द्वादशांग का मान बढ़ाया।।

रत्न चौबीसी मन को भाए, देख देख के हिय हरषाए।
सूनी थी हिसार की नशिया, पर भू भीतर दबी थी निधिया।।

अपने ज्ञान ध्यान से जाना, त्रय जिनदेवा भीतर जाना।
हाथों से मिट्टी खुदवाई 'पार्श्व' 'आदि' 'वीरा' छवि पाई।।

जयकारों से गगन गुँजाए, ज्ञानयोगी गुरुदेव कहाए।
'मनहर पारस क्षेत्र' कहाया, सहस्त्र कलश से न्हवन कराया।।

मंशापूर्ण श्री महावीरा, सेवा भाव जगावे धीरा।
जीवन आशा नाम पुकारा, विकलांगों का बने सहारा।।

ज्ञानी मन चिंतन करता है, हर पल काव्य ग्रन्थ लिखता है।
धर्म गगन में करे विहारा, "सिद्धांत शतक" आगम है प्यारा।।

सब शूलों की सेज उठाते, जैनत्वो का बोध कराते।
पापों के दहकते अंगारे, प्रेरक प्रवचन बुझाते सारे।।

फैशन एक अभिशाप बताया, गर्भपात से सबको बचाया।
जैन विधान सदा करवाते, भक्तों के शुभ भाव जगाते।।

ख्याति लाभ की नहीं कामना, पूजा की भी नहीं चाहना।
विज्ञापन से दूर ही रहते, चर्या सावचेत हो करते।।

आगम के रत्नाकर गुरुवर, शान्त सौम्य छवि सुन्दर गुरुवर।
आशीर्वाद गुरु का फलता, जीवन सहज सरल हो चलता।।

तीर्थराज सम्मेद शिखर है, श्री सौरभांचल का परिसर है।
सहस्र वर्ष प्राचीन है प्रतिमा, अतिशयकारी पारस महिमा।।

10 अप्रैल का शुभ दिन आया, पुष्पगिरी में उत्सव छाया।
रवि पुष्य नक्षत्र कहाया, पुष्पदन्त ने सूरी बनाया।।

देश विदेश से यात्री आये, दृश्य देखकर अति हर्षाये।
सौरभ गुरु को शीश नवाया, धन्य धन्य सौभाग्य जगाया।।

जिस धरती पर कदम बढ़ाए, वो माटी चन्दन बन जाए।
घर घर ज्ञान के दीप जलाए, अज्ञान तिमिर मन का हट जाए।।

दर्शन पा मन पुष्प खिला है, वर्द्धमान का दर्श मिला है।
जब से तेरा साथ मिला है, 'हम-सब' को भगवान मिला है।।

दोहा– सौरभ सागर चालीसा, मन से जो भी ध्याय।
त्याग धर्म बढ़ता रहे, गुरु अनुकंपा पाए।।
गुरुवर तेरे चरण में, नमन हो बारम्बार
पापों का क्षय हो मेरा, भव से हो जाऊँ पार

(9 बार णमोकार मंत्र पढ़ें)

जाप्य मंत्र- ॐ ह्रूं सौरभ सागर गुरुवे नमः।

गुरु ही विधाता है, गुरु ही दाता है, गुरु ही स्वकीय बन्धु है, गुरु ही गुणरुपी रत्नों के सागर हैं, गुरु ही शिक्षक हैं, गुरु ही पिता हैं और कर्म समूह को नष्ट करने वाले गुरु ही मोक्ष हैं। निर्ग्रन्थ गुरुदेव को नमस्कार हो।

अर्घ्यावली

समुच्चय अर्घ

अष्ट द्रव्य का अर्घ थाल लें, श्रद्धा से अर्पित करता।
है अनर्घ पद पावन तेरा, पाने मन उलसित होता।।
परमेष्ठी अरुँ माँ जिनवाणी, विद्यमान बीसों मुनिराज।
तीस चौबीसी सिद्ध भूमि नम, पूजूँ अकृत्रिम जिनराज।।

ॐ ह्रीं श्री पंचपरमेष्ठी समूह द्वादशांगमय जिनवाणी समूह-विद्यमान बीस तीर्थंकर समूह-तीर्थंकर मुनिराज की अढ़ाई द्वीप सम्बन्धी मोक्ष भूमि समूह तीस चौबीसी तीर्थंकर अकृत्रिम जिनबिम्ब समूह अनर्घ्य पद प्राप्ताय **अर्घम्** निर्वपामीति स्वाहा।

चौबीसी अर्घ्य

ऋजु भावों का शुभ जल लेकर, समता का चन्दन लाया।
ध्यान अवस्था के अक्षत ले, भक्ति पुष्प मन खिलवाया।।
चाहत की नैवेद्य चढ़ाकर, श्रद्धा दीप जलाऊँगा।
अष्ट मदों की धूप समर्पित, निराकार फल पाऊँगा।।
अष्ट द्रव्य का अर्घ बनाकर, चरणों में अर्पित करता।
चौबीसी की पूजा करके, अन्तर मन हर्षित होता।।

ॐ ह्रीं ऋषभादि-महावीरपर्यन्त-चतुर्विंशति-तीर्थंकरेभ्यो अनर्घ पद प्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

चौबीस तीर्थंकर की अर्घावली[1]

त्रिकाल चौबीसी अर्घावली[2]

चौबीस निर्वाण भूमि अर्घ्य

तीरथ है सम्मेद शिखर जी, बीस पधारे श्री निर्वाण।
आदिनाथ कैलाशगिरी से, वासुपूज्य चम्पापुर धाम।।
नेमिनाथ गिरनार शिखर से, निराकार पद पाया है।
पावापुर महावीर प्रभु ने, आठों कर्म नशाया है।।
तीर्थंकर चौबीसो जिनवर, परम धाम को पाये हैं।
अष्ट द्रव्य मय अर्घ्य चढ़ाकर श्रद्धा शीश झुकाये हैं।।

ॐ ह्रीं चतुर्विंशति-तीर्थंकर-निर्वाणस्थली श्रीसम्मेदशिखर-गिरनार-कैलाशगिरि चम्पापुर-पावापुर-निर्वाणक्षेत्रेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

---

1. चौबीस तीर्थंकर की अर्घावली पृष्ठ 57 पर पढ़ें।
2. त्रिकाल चौबीसी अर्घावली पृष्ठ 64 पर पढ़ें।

माँ जिनवाणी अर्घ

दिव्य ध्वनि का निर्मल जल ले, तत्वों का चन्दन लाया।
अंग पूर्व का अक्षत लेकर, धर्म पुष्प मन खिलवाया।।
नय निक्षेप का नेवज लेकर, गुणस्थान का दीप जला।
अष्ट कर्म का धूम उड़ाया, निराकार फल मोक्ष मिला।।
चारों अनुयोगों से पूरित, जिन आगम को जान रहे।
अष्ट द्रव्य मय अर्ध्य चढ़ाकर, जिनवाणी सम्मान करें।।

ॐ ह्रीं श्री जिनसर्वांगोद्भव-गणधर-ग्रहीत-द्वादशांग-मय-श्रुत-देवतायै: अनर्घ पद प्राप्ताय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

तीन कम नौ करोड़ मुनिराजों का अर्घ्य

तीन घटाकर नौ करोड़ की, संख्या मुनिवर की जानो।
धरती पर जीवन्त जिनेश्वर, उन पर श्रद्धा हित मानो।।
तपसी जल से भिन्न कमल वत्, जीवन अपना जीते हैं।
ढाई द्वीप के मुनिराज को, अर्घ समर्पित करते हैं।।3।।

ॐ ह्रीं अढाईद्वीप-मध्ये-तीन-कम-नौ-करोड़-मुनिवरेभ्यो नम: अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

गणाचार्य श्री पुष्पदंत सागर जी का अर्घ्य

अरमानों की थाली जोयी, नयनों में जल भर लाया।
सुनहिल भावों की केशर ले, शब्द पुष्प तन्दुल लाया।।
तन नैवेद्य बना मन दीपक, मद यौवन की धूप बना।
तव पद में अर्पित सिर फल, पूजन का यह अर्घ बना।

दोहा - **तन मन धन अर्पण किया, रहा न कुछ भी शेष।**
अष्ट द्रव्य से पूज कर, पाऊँ जिनका भेष।।

ॐ ह्रूं श्री 108 गणाचार्य-पुष्पदंत-सागर-जी-महाराज-अनर्घ-पद-प्राप्ताय अर्घ्यं निर्वपमीति स्वाहा।

आचार्य श्री सौरभ सागर जी का अर्घ्य

पिच्छी लेकर नग्न रहे, और केश लोंच जो करते हैं।
तन शृंगार रहित वह होकर, बाईस परिषह सहते हैं।।
स्व आत्म कल्याण करे, और पर को मार्ग बताते हैं।
सुलझाते हैं जो मन की ग्रंथियाँ सौरभ सागर जी कहलाते हैं।।

ॐ ह्रूं संस्कार-प्रणेता-आचार्यश्री 108 सौरभ-सागर-जी गुरुदेव-चरण कमलेभ्यो अनर्घ-पद-प्राप्ताय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

समुच्चय महार्घ्य

(गीता छंद)

मैं देव श्री अर्हन्त पूजूँ सिद्ध पूजूँ चावसों।
आचार्य श्री उवझाय पूजूँ साधु पूजूँ भावसों।।1।।
अर्हन्त भाषित बैन पूजूँ द्वादशांग रचे गणी।
पूजूँ दिगम्बर-गुरुचरण शिव हेतु सब आशा हनी।।2।।
सर्वज्ञ भाषित धर्म-दशविधि दया-मय पूजूँ सदा।
जजुँ भावना षोडश-रत्नत्रय जा बिना शिव नहिं कदा।।3।।
त्रैलोक्य के कृत्रिम-अकृत्रिम चैत्य-चैत्यालय जजूँ।
पन मेरु नंदीश्वर, जिनालय खचर, सुर, पूजित भजूँ।।4।।
कैलाश श्री सम्मेद श्री गिरनार गिरि पूजूँ सदा।
चम्पापुरी पावापुरी पुनि और तीरथ सर्वदा।।5।।
चौबीस श्री जिनराज पूजूँ बीस क्षेत्र विदेह के।
नामावली इक सहस वसु जपि होय पति शिवगेह के।।6।।

दोहा

जल गंधाक्षत पुष्प चरु, दीप धूप फल लाय।
सर्व पूज्य पद पूजहूँ, बहुविधि भक्ति बढ़ाय।।7।।

ॐ ह्रीं भावपूजा भाववंदना त्रिकालपूजा त्रिकालवंदना करे करावे भावना भावे श्री अरहंतजी सिद्धजी आचार्यजी उपाध्यायजी सर्वसाधुजी पंच परमेष्ठिभ्यो नमः, प्रथमानुयोग करणानुयोग चरणानुयोग द्रव्यनुयोगेभ्यो नमः, दर्शनविशुद्धयादि षोडशकारणेभ्यो नमः, उत्तमक्षमादि दशलाक्षणिकधर्मेभ्यो नमः, सम्यग्दर्शन सम्यग्ज्ञान सम्यक्चारित्रेभ्यो नमः, जल के विषैं थल के विषैं आकाश के विषैं गुफा के विषैं पहाड़ के विषैं नगर नगरी विषैं ऊर्ध्वलोक मध्यलोक पाताललोक विषैं विराजमान कृत्रिम अकृत्रिम जिन चैत्यालय जिनबिम्बेभ्यो नमः। विदेहक्षेत्रे विद्यमान बीस तीर्थंकरेभ्यो नमः, पाँच भरत पाँच ऐरावत दशक्षेत्र संबंधी तीस चौबीसी के सातसौ बीस जिनराजेभ्यो नमः, नन्दीश्वरद्वीप संबंधी बावन जिनचैत्यालयस्थ जिनबिम्बेभ्यो नमः, पंचमेरुसंबंधी अस्सी जिनचैत्यालयस्थ-जिनबिम्बेभ्यो नमः, सम्मेदशिखर कैलाश चंपापुर पावापुर गिरनार सोनागिर मथुरा तारंगा आदि सिद्धक्षेत्रेभ्यो नमः, जैनबद्री मूडबिद्री देवगढ़ चन्देरी पपौरा हस्तिनापुर अयोध्या राजगृही चमत्कार जी श्रीमहावीरजी

पद्मपुरी तिजारा बड़ागाँव पुष्पगिरी, सौरभांचल, मंशापूर्ण महावीर आदि अतिशयक्षेत्रेभ्यो नमः, श्री चारणऋद्धिधारी सप्तपरमर्षिभ्यो नमः, ॐ ह्रीं श्रीमंतं भगवन्तं कृपावन्तं श्रीवृषभादि महावीरपर्यन्तं चतुर्विंशति तीर्थंकर परमदेवं आद्यानां आद्ये जम्बूद्वीपे भरतक्षत्रे आर्यखंडे.....नाम्नि नगरे मासानामुत्तमे..... मासे.....शुभे.....पक्षे शुभ.....तिथौ..... .....वासरे मुनि आर्यिकानां श्रावक श्राविकाणां सकलकर्मक्षयार्थं (जलधारा) अनर्घ्यपद प्राप्तये महार्घ्यं सम्पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शांति पाठ (हिन्दी)

शांतिनाथ! मुख शशि उनहारी, शील गुण व्रत, संयमधारी।
लखन एक सौ आठ विराजैं, निरखत नयन कमल दल लाजें।।1।।

पंचम चक्रवर्ती पदधारी, सोलम तीर्थंकर सुखकारी।
इन्द्र नरेन्द्र पूज्य जिननायक, नमौं शांतिहित शांतिविधायक।।2।।

दिव्य विटप पहुपन की वरषा, दुंदुभि आसन वाणी सरसा।
छत्र चमर भामंडल भारी, ये तुव प्रातिहार्य मनहारी।।3।।

शांति जिनेश शांति सुखदाई, जगत् पूज्य पूजौं सिरनाई।
परम शांति दीजे हम सबको, पढ़ें तिन्हें पुनि चार संघ को।।4।।

पूजें जिन्हें मुकुट हार किरीट लाके, इंद्रादिदेव अरुँ पूज्य पदाब्ज जाके।
सो शांतिनाथ वर वंश जगत् प्रदीप, मेरे लिए करहु शांति सदा अनूप।।5।।

संपूजकों को प्रतिपालकों को, यतीन को औ यतिनायकों को।
राजा प्रजा राष्ट्र सुदेश को ले, कीजे सुखी हे जिन! शांति को दे।।6।।

होवे सारी प्रजा को सुख, बलयुत हो धर्मधारी नरेशा।
होवे वर्षा समय पै, तिलभर न रहे व्याधियों का अंदेशा।

होवे चोरी न जारी, सुसमय वरषे हो न दुष्काल मारी।
सारे ही देश धारें, जिनवर वृष को जो सदा सौख्यकारी।।7।।

घाति कर्म जिन नाश करि, पायो केवलराज।
शांति करें सब जगत् में, वृषभादिक जिनराज।।8।।

शास्त्रों का हो, पठन सुखदा, लाभ सत्संगती का।
सद्वृत्तौं का, सुजस कहके, दोष ढाँकू सभी का।।9।।

बोलूँ प्यारे, वचन हित के, आपका रूप ध्याऊँ।
तौ लौ सेऊँ, चरण जिन के मोक्ष जौ लौ न पाऊँ॥10॥

तव पद मेरे हिय में, मम हिय तेरे पुनीत चरणों में।
तबलौं लीन रहे प्रभु, जबलौं पाया न मुक्ति पद मैंने॥11॥

अक्षर पद मात्रा से, दूषित जो कुछ कहा गया मुझसे।
क्षमा करो प्रभु सो सब, करुणा करि पुनि छुड़ाहु भवदुःख से॥12॥

हे जगबंधु जिनेश्वर! पाऊँ तव चरण शरण बलिहारी।
मरण समाधि सुदुर्लभ, कर्मों का क्षय सुबोध सुखकारी॥13॥

विसर्जन पाठ (हिन्दी)

बिन जाने या जान के, रही टूट जो कोय।
तुम प्रसाद तैं परम गुरु, सो सब पूरन होय॥
पूजन विधि जानूँ नहीं, नहिं जानूँ आह्वान।
और विसर्जन भी नहीं, क्षमा करो भगवान्॥
मंत्र हीन धन हीन हूँ, क्रिया हीन जिनदेव।
क्षमा करहु राखहु मुझे, देहु चरण की सेव॥
श्रद्धा से आराध्य पद, पूजे भक्ति प्रमाण।
पूजा विसर्जन मैं करूँ, सदा करो कल्याण॥
आए जो जो देवगण, पूजे भक्ति प्रमाण।
ते अब जावहु कृपा कर, अपने अपने थान॥

इत्याशीर्वादः पुष्पांजलि

(इसके पश्चात् खड़े होकर आरती करें)

आसिका लेने का पद

श्री जिनवर जी की आसिका, लीजे शीश चढ़ाए।
भव-भव के पातक कटें, दुःख दूर हो जाए॥

(स्तुति या भजन आदि बोलते हुए वेदी सहित प्रतिमाजी की तीन प्रदक्षिणा देकर धोक देनी चाहिए)

॥इत्याशीर्वादः पुष्पांजलिं क्षिपेत्॥

श्री ऋषिमण्डल स्तोत्र

हृदय कमल में अर्हत पद का स्थापन जो है करना,
कार्मन काठ जलावन कारण अग्नि ज्वाला है बनना।
निर्मल है वह निर्मल करता अर्हत पद का दाता,
बारम्बार नमूँ मैं उनको, पाऊँ अक्षय साता।
हृदय कमल की आठ पँखुड़ी उनमें क्रम से रखना,
अर्हत, सिद्ध आचार्य उपाध्याय, साधु सर्व विचरना।
सम्यग्दर्शन सम्यग्ज्ञान, सम्यक्चारित्र उचरना,
ऐसे आठों पूज्यनीय को, चित में फिर फिर धरना।
ऊँ बीजाक्षर प्रथम उचारै, नमः पल्लव करिये,
ध्यान धरै इन आठों पद का, आनन्द उर में भरिये।
अरहंत पद का ध्यान किये से, सिर की रक्षा होवे,
सिद्ध समूह जपन करने से, मस्तक रक्षित होवे।
सूरि सुगुण मन में ध्याने से, नेत्र सुरक्षित होवे,
चौथे पद के गुण चिंतन से, घ्राण सुरक्षित होवे।
मुख की रक्षा करे साधुगण, दर्शन गर्दन रक्षै,
नाभि रक्षे सप्तम पद, जो सम्यग्ज्ञान सुदक्षै।
सम्यक्चारित्र सर्व अंग को, पाद पर्यन्त सुरक्षे,
ऐसे सकलीकरण करन से, होवे पूजक अक्षै।
ऋषि मण्डल यह पूजन भारी, इसको विधि से करिये,
विघ्नविनाश करें सुखदाता, श्री ब्रह्मचारी उचरियें।

सब द्वीपों के मध्य जम्बूद्वीप बसे,
उसकी है आठ दिशा पूरब आदि लसे।
अर्हंतादि पद आठ उनमें राजत हैं,
करिये उनका ध्यान पाप पलावत है।
मध्य सुदर्शन मेरु कंचनमय सोहे,
उपरि सिंहासन माहि अक्षर ह्रीं मोहे।

उनमें चौबीस जिनेश उनके गुण भारी,
अक्षय निर्मल शांत ताप जाड्य हारी।
निरहंकार निरीह सार, सार गुण सोहे,
सौम्य शुद्ध शुभ रूप तीन लोक मोहे।
तीन लोक के स्वामी यातें राजस है,
कर्म घातिया चूरे यातैं तामस है।
सदगुण से भरपूर सात्विक सोहत है,
ज्ञान तेज से सूर्य भ्रमतम खोवत है।
रूपगंध रस वर्ण इनसे दूर रहे,
तो भी है साकार समरस पूर रहे।
पर को दिया त्याग निज रस में पागे,
परमौदायिक देह आतम गुण जागे।
चूरे है सब कर्म तन को है छोड़ा,
निज रस पी संतुष्ट पर से मुँह मोड़ा।
करी कालिमा दूर आकांक्षा पूरी,
संशय रहा न लेश सब आशा पूरी।
ईश्वर ब्रह्मा बुद्ध ज्योति रूप खड़े,
शाश्वत सिद्ध स्वरूप सब में देव बड़े।
लोकालोक प्रकाश करते नाहि थके,
ऐसे श्री ह्रीं देव मेरे मन में धरे।
एक वर्ण दो वर्ण तीन वर्ण धारी,
चार पाँच हैं वर्ण सब के अधिकारी।
ऋषभादिक चौबीस तीर्थंकर सब ही,
ध्याओ उनको नित्य जैसे निम्न कही।
अर्ध चंद्र आकार ह्रीं का नाद कहा,
उसका वर्ण है श्वेत जैसे चन्द्र महा।
उसमें ध्याओ देव श्वेत वर्ण वाले,
चन्द्रप्रमु पुष्पदंत सब के रखवाले।
श्याम वर्ण की देह बिंदी की कीजै,
उसमें लिखिये नेमि मुनिसुव्रत कीजै।

मस्तक ऊपर भाग लाल वर्ण सोहे,
पद्मप्रभु वासुपूज्य अरुँण वर्ण मोहे।
शिर संलीन ईकार नीलम वर्ण कहा,
सुपार्श्व पार्श्व महाराज थापूँ पूज्य महा।
सोलह श्रीजिन देव कंचनमय देहा,
वे-ह-र मध्य लिखेय होवे सुखगेहा।
रागद्वेष मद मोह जीते इन सबने,
मायालीन में ये राजत हैं सब रे।
इनका सदा ध्यान किये जो ज्वाला निकले,
उनमें वेष्ठित देह मेरी जो उजले
तब नाही विषधर जाति मेरा निष्ट करे,
सेवक होकर वेग मेरे पाँव परे।
श्री ऋषिमण्डल मध्य ह्रीं का परिकर है,
उसमें रक्षित देह मेरी सुखकर है।
तब नाहिं नागिन जाति मेरा निष्ट करे,
सेवक होकर वेग मेरे पाँव परे।
सर्वऋद्धि के ईश अर्हत गणधर हैं,
उनके तेज से लोग वेग सब ही व्याप्त है।
उनका ध्यान किये परम सौख्य होगा,
विलय जायेंगे दु:ख मेरे अति वेगा।
पाताल, लौकिक देव, मध्य लोकवासी,
निर्जर ऊरघ लोक सब विमानवासी।
तुम सब ही जिन भक्त साधर्मी भाई,
करना मेरी सहाय सुनिये मनलाई।
मुनिवर है जगमाहिं अवधि श्रुतधारी,
विक्रिया चारण आदि सब ही ऋद्धिधारी।
मुझ पर कीजै कृपा तुम रक्षक सबके,
अतएव पूजूँ पायें विघ्न हरो जनके।

श्री मंशापूर्ण महावीर स्तुति

हे वीर प्रभो महावीर प्रभो, तेरे चरणों में आया हूँ।
सब पाप ताप संताप हरो, मैं अर्चन कर हर्षाया हूँ।।
आओ आओ प्रभु एक बार, मेरे मन का प्रक्षाल करों।
हे महाश्रमण हे वर्धमान, तुम सन्मति दे जंजाल हरों।।
प्रभु मंशापूरण करते हो, प्रभु संशय तिमिर भी हरते हों।
मैं मन से पूजा तेरी करूँ, सुख सिन्धु से भी भरते हों।।1।।
श्रद्धा का जल कर में लेकर, भक्ति का चन्दन लाया।
अक्षत कुसुम चरूवर पावन, दीप धूप वन्दन भाया।।
सिद्ध शिला फल चाह लिये प्रभु, आठों द्रव्य चढ़ाऊँगा।
श्री मंशापूरण महावीर की, पूजा कर सुख पाऊँगा।।2।।
महामना हे महामुनि हे, महायोगी महाज्ञानी हो।
महाशक्ति हे महाज्योति हे, महाप्रभु महादानी हो।।
महाव्रतों को महाभाव से, महावीर ने धार लिया।
मंशापूरण महावीर बन, मानव का उद्धार किया।।3।।
भावों की शुभ निर्मलता ही, भव बन्धन को नित काटें।
निज स्वभाव में रम जा चेतन, खोल राग की सब गाठें।।
भाव-साधना-भाव-समाधी, भाव स्वभाव मे लीन रहें।
द्रव्य भाव द्वय अर्घ्य समर्पित, श्रद्धालय में लीन रहें।।4।।
अन्तिम गर्भ हो चरमोत्तम तन, महावीर-सा बन जाऊँ।
महाअर्घ चरणाम्बुज देकर, वज्र कर्म सब विनशाऊँ।।
तीर्थंकर का गर्भाराधन, गर्भ दोष का नाश करे।
त्रय ज्ञानी समकित तीर्थंकर, धर्मात्मक उल्लास भरे।।5।।
जन्म काल का अतिशय सुखकर, तीर्थंकर ही पाते हैं।
कल्याणक शुभ जन्म मनाकर, नर देवा हर्षाते हैं।।
जन्म मरण की भ्रमण शृंखला, तब पूजा से घट जाये।
अर्घ समर्पित तव चरणों में, मोह तिमिर सब छट जाये।।6।।
वर्धमान अतिवीर वीर जिन, महावीर शुभ नाम कहो।
सद्बुद्धि सन्मार्ग प्रदाता, सन्मति का गुणगान अहो।।
राग-द्वेष मद लोभ मोह सब, नामोच्चारण दूर करें।
अर्घ समर्पित मंशापूरण, धर्मभाव भरपूर भरे।।7।।

दीर्घ साधना कर्म निर्जरा, धर्म ध्यान से नित साधें।
तन मन की इच्छा ज्वाला को, शुक्ल ध्यान जल से नाशें॥
महावीर की वीतरागता, निर्मल-निच्छल-मनहारी।
पूर्णअर्घ चरणों मे अर्पित, वर्धमान दीक्षाधारी॥8॥
केवलज्ञानी अतिशय धारी, चार घातियाँ नाश किया।
प्रातिहार्य आठों सज्जित है, समवशरण प्रवास किया॥
विपुलाचल वैभार गिरी या, पुण्यवान जग जीव जहाँ।
दर्शन पूजन व्रत उपदेशा, पाकर तिरते जीव यहाँ॥9॥

दोहा- अल्पज्ञान लब्ध्यक्षरा, पूरण केवल ज्ञान।
महावीर की देशना, करें आत्म कल्याण॥10॥

भू भीतर देवों द्वारा ही, पूजा सेवा नित होती।
वर्षों तक ना पुण्योदय था, दर्शन फिर कैसे होती॥
सात नवम्बर भू से प्रगटे, मंशापूरण श्री भगवान।
अर्घ चढ़ाऊँ भक्ति गाऊँ, वर्धमान महावीर महान॥11॥
भक्ति में तन्मय हो करके, चिन्मय मुरत पाया है।
सिद्ध निरामय निर्मल निश्चल, अविनाशी सुख पाया है॥
हो विरक्त जग उलझन से प्रभु, तेरे दर पर आऊँगा।
आत्म ओज का उद्भव होवे, महावीर गुण गाऊँगा॥12॥
सुख राशि गुणदाता जिनवर, दया सिन्धू महावीर प्रभो।
विघ्न हरण हे मंशापूरण, वर्धमान अतिवीर विभो॥
परमेश्वर हो, प्रतिपालक हो, जिन शासन के नायक हो।
महा-अर्घ्य चरणों मे अर्पित, सौरभ सागर ज्ञायक हो॥13॥

दोहा- महावीर जिनराज का, अद्भुत है दरबार।
भक्ति से पूजा करूँ, नमन करूँ शतबार॥

जय जय महावीरा भवदधि तीरा, गुण गंभीरा अतिवीरा।
मम धर्म बढ़ावे जिनपद पावें, सौरभ सागर नत धीरा॥॥14॥

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं अर्हं श्रीमंशापूर्णमहावीरजिनेन्द्र पंचकल्याणक संयुक्त शिवपद-कर्त्ता-भव-जल-निधी सर्वविघ्नव्याधिहर्ता तव भक्ति प्रसादात् सर्व जीव कल्याणमस्तु दीर्घायुरस्तु शुभमस्तु सुकीर्तिरस्तु धन-धान्य समृद्धिरस्तु आरोग्यमस्तु सर्व जीव रोग शोक पीड़ा विनाशनं भवतु सम्यग्दर्शन ज्ञान-चारित्र-वृद्धिरस्तु सर्व-ऋद्धि-सिद्धि-भवतु रक्ष रक्ष हूँ फट् स्वाहा।

श्री भक्तामर स्तोत्र (हिन्दी)

पद्यानुवादक : आचार्य श्री 108 सौरभ सागर जी महाराज

मणि मुक्ता रत्नों से शोभित, देव झुकाते माथा हैं।
पाप तिमिर में ज्योतित करता, आदि युग के विधाता हैं॥
भव सिन्धु में पतित जनों की, रक्षा करते जिन भगवान।
चरण कमल में सू रीति से, भाव सहित करते परणाम॥1॥
द्वादशांग के ज्ञान से जन्मी, तेरी स्तुति हुई प्यारी।
शत इन्द्रों की स्तुति ही तो, जग जन के हैं चितहारी॥
भाव भक्ति से विस्मयकारी, स्तुति आदि स्वामी की।
करता हूँ मैं प्रमुदित होकर, तद्भव मुक्तिगामी की॥2॥
बिना विचारे बालक जल में, छाया चन्द्र को ग्रहण करे।
वैसे जड़ धी बिन लज्जा के, हम तेरा स्तवन करें॥
जिनके पाद पीठ का पूजन, हर्षित होकर देव करें।
उन जिन भगवन के स्तवन को, तत्पर हो स्वयमेव करें॥3॥
प्रलय काल की तीव्र पवन से, क्रोधित मगरों से भरपूर।
अम्बूनिधि को बाहुबल से, पार करे ना कोई शूर॥
हे गुण सागर! चन्द्रकान्तमय, तेरा रूप है आभावान।
बृहस्पति सम बुद्धिमान भी, कर न सके महिमा का बखान॥4॥
स्तुति करने को आया हूँ, हे मुनि! श्रेष्ठ भक्ति से मैं।
हीन बुद्धि पर ध्यान न देना, भक्ति करूँ निज शक्ति से मैं॥
सिंह के सम्मुख शिशु रक्षा हितु, बिना विचारे मृगी जाती।
शक्ति रहित वश प्रेम के होकर, आत्म बली न भय खाती॥5॥
अल्प ज्ञानी मैं विद्वानों के, परिहासों का धाम बना।
तेरी भक्ति बरबस मुझको, करवाती वाचाल पना॥
आम्र मंजरी प्राप्ति हेतु, मधुर-मधुर गुँजन करती।
कोकिल काली कलरव करके, जन मन है रंजन करती॥6॥
तेरी अनुपम स्तुति से ही, खुलते भव बन्धन के पाश।
पलक झपकते ही हो जाता, प्राणी के कर्मों का नाश॥
तीन लोक का गहन तिमिर जब, भ्रमर सरीखा काला हो।
सूर्य किरण के आते ही ज्यों, हो जाता उजियाला हो॥7॥
ऐसा लखकर नाथ आपकी, भक्ति में विश्वास करूँ।
स्तुति को प्रारंभ करूँ और, सज्जन मन आनन्द भरुँ।

मतिहीन की तुम प्रभाव से, भक्ति जन की मन हरती।
कमल पत्र पर ओस बूँद ज्यों, मोती जैसी द्युति करती॥8॥
पावन स्तुति के प्रभाव से, दूर रहे कल्मश राशि।
पुण्य कथा ही पाप नाश में, सक्षम है जो जगवासी॥
नभ में रहता है किरणाकर, स्वयं प्रभा पेंका करता।
परस मात्र से कमल पुष्प ज्यों, प्रमुदित होकर है खिलता॥9॥
हे जगभूषण भूतनाथ ना, विस्मय की यह बात रही।
सद्‌गुण द्वारा तेरी महिमा, भूपर तव सम बना रही।
निज सम मालिक भृत्य को करता, यदि हुआ सेवक गुणवान।
ना करता निज सम सेवक को, नहीं कहा जाता धनवान॥10॥
अनिमिष दृग कर तुम्हें देखकर, नयनों को बहुतोष हुआ।
मानव को फिर अन्य देव लख, जरा नहीं संतोष हुआ।
दुग्ध सिन्धु का चन्द्र किरण सम, निर्मल जल जो करता पान।
खारा पानी को पीने की, चाह करेगा कौन पुमान॥11॥
निर्मल राग रहित अणुओं से, निर्मापित तव देह महान।
त्रिभुवन की सारी सुन्दरता, समा गई है तव तन आन॥
संख्या निश्चित परमाणु की, तव रचनाकर हुई खतम्‌।
पृथ्वी पर तेरे सम सुन्दर, दिखता ना है कोई रतन॥12॥
नर देवों और नागेन्द्रों के, नयनों को हरने वाले।
जीत चुके हो सर्व रूप को, कमल चन्द्र उपमा वाले॥
कहाँ कलंकी श्यामाकर और, कहाँ आपका मुखमनहर।
द्युति हीन दिन में हो जाता, ढाक पत्र सम दोषाकर॥13॥
पूर्ण चन्द्र मण्डल सम उज्ज्वल, लंघन करती तीनों लोक।
गुण नायक के आश्रित जो भी, उसको न सकता कोई रोक॥
जगह जगह पर फैल रही है, निर्मल गुण राशि भगवान।
तेरे गुण की स्तुति करता, परगुण ना इतना बलवान॥14॥
स्वर्ग वधु हर सकी न मन को, किंचित भी विकार नहीं।
इसमें विस्मय का कुछ भी तो, दिखता है आधार नहीं॥
प्रलयकाल की तीव्र पवन से, गिरि शिखर हिल जाता है।
किन्तु तनिक क्या मेरु पर्वत, वायु से हिल पाता है॥15॥
धूम नहीं न बाती तेल है, फिर भी त्रिभुवन आलोकित।
बुझा सके न तव दीपक को, वायु गिरि जो करे कंपित॥
अपर दीप न तव दीपक सम, रात दिवस जलता रहता।
तेरे दीपक की तुलना ना, अन्य दीप है कर सकता॥16॥

हे मुनिन्द्र! तव महिमा का ना, सूरज हो सकता है अस्त।
तीन लोक आलोकित करता, कर सकता ना राहू ग्रस्त।।
गगन मध्य का सूरज जग में, छिपता उगता दिन प्रतिदिन।
दिव्य दिवाकर आप सूर्य हो, कर न सके कोई छवि हीन।।17।।
नित्य उदयतम मोह के नाशक, राहू के न ग्रास बने।
मेघों से न ढकने वाले, कान्तिमान हो आप्त बने।।
चन्द्र बिम्ब सम शोभित होता, नीलकमल मुख ज्योतिर्मय।
प्रशमाकर योगीश्वर अघहर, अविनश्वर हो तुम अव्यय।।18।।
हे प्रभु तव मुख के सम्मुख तो, अंधकार नश जाता है।
दिन में दिनकर रात कलामुख, जरा काम न आता है।।
धान्य खेत में परिपक्व हो, वायु में लहराता है।
सघन मेघ जल भार से नम्री, काम नहीं कुछ आताहै ।।19।।
स्वपर प्रकाशक ज्ञान आपका, जैसा शोभित होता है।
अन्य देव हरिहर आदिक में, ज्ञान श्रेष्ठ ना होता है।।
जैसी महिमा महारतन की, जग में शोभा पाती है।
वैसी महिमा काँचखण्ड की, कभी नहीं हो पाती है।।20।।
नाथ मानता हूँ इस जग में, हरिहरादिक देव भले।
जिन्हें देख मन तुझमें रमता, आप विषय संतोष मिले।।
नहीं प्रयोजन अन्य देव से, तुष्ट हुआ मन दर्शनकर।
कोटि जन्म भी आप सिवा ना, मम-मन को सकता है हर।।21।।
निखिल विश्व की सारी माता, जनती रहती शत संतान।
किन्तु आप सम जनने वाली, दिखती ना है मात महान।।
सर्व दिशाएँ धारण करती, तारागण का उजियाला।
पूर्व दिशा ही जनती रहती, सूर्य सहस्र किरणों वाला।।22।।
तुम्हें मानते मुनिजन हे प्रभु! परम पुरुष और तमनाशी।
सूर्य समा तेजस्वी निर्मल, पाते पद हो अविनाशी।।
तेरे चरण युगल को पाकर, मृत्यु पर जय पाते हैं।
उत्तम यही मोक्ष का मारग, अन्य मार्ग भटकाते हैं।।23।।
संत पुकारें कई नामों से, अविनाशी अव्यय ऋषिराज।
सर्वव्यापी जगदीश्वर ब्रह्मा, संख्यातीत या योगीराज।।
ज्ञान स्वरूपी आदि पुरुष प्रभु, मकरध्वज या गिरामपति।
विदित योग या अमल आत्मा, सत्य परायण सदागति।।24।।

देवों द्वारा ज्ञान पूज्य है, अतः बुद्ध कहलाए हो।
त्रिभुवन में सुख शान्ति कर्ता, शंकर नाम को पाए हो।।
मोक्ष मार्ग के निर्देशक हो, जग प्रतिपालक निर्माता।
व्यक्त रूप से पुरुषोत्तम हो, न तेरा जग से नाता।।25।।
तीन लोक के दुःखहर्ता प्रभु, नमन् करूँ मैं बारम्बार।
पृथ्वी तल के अमल हो भूषण, नमन् करो मेरा स्वीकार।।
तीन जगत के परमेश्वर हो, स्वीकारो मेरा वन्दन।
भवोदधि के शोषण कर्ता, कोटि कोटि तुमको वन्दन।।26।।
इसमें विस्मय क्या हो सकता, अच्छे गुण तब बने आधार।
अन्य जगह न जगह मिली तो, हे मुनीष! आए तब द्वार।।
मद से हुए उत्पन्न दोष जो, अन्य जगह आश्रय पाए।
स्वप्नों में भी तेरे अन्दर, दुर्गुण ना ही कभी आए।।27।।
उन्नत वृक्ष अशोक खड़ा है, शोक नष्ट करने वाला।
शुचि तन होकर आप विराजे, जो जन मन हरने वाला।।
रवि रश्मि की भाँति ऊपर, रूप छटा सुन्दर लगती।
व्यक्त किरण तम नाशक जैसे, मेघ निकट शोभित होती।।28।।
नाना रत्नों से शोभित है, सुन्दर तेरा सिंहासन।
स्वर्ण कान्तिमय चमचम करता, जिस पर तेरा निर्मल तन।।
उदयाचल पर्वत के ऊपर, किरण केतु शोभित होता।
अपनी किरणों को फैलाकर, सारे जग का तम हरता।।29।।
कुन्द पुष्प की भाँति उज्ज्वल, ढुरते चँवर अति सुन्दर।
स्वर्ण कलेवर सम तव तन तो, शोभा पाता अति मनहर।।
उदित चन्द्र सम निर्मल निर्झर, झर झर झर झर बहती है।
स्वर्ण रचित ऊँचे समान तट, यह अति शोभित होती है।।30।।
चन्द्र बिम्ब सम अति मनहर है, मणि मुक्ता से जड़ा हुआ।
सूर्य किरण संताप को रोके, तीन छत्र है लगा हुआ।।
त्रय छत्रों से मस्तक शोभित, त्रिभुवन स्वामी प्रकटाता।
तीन लोक का राज मिले जब, तीन छत्र है लग जाता।।31।।
दशों दिशा गंभीर स्वरों में, गुँजित है करने वाली।
तीन लोक के प्राणी मात्र को, शुभ संगत देने वाली।।
जैन धर्म के तीर्थंकर का, करने वाली जय जयकार।
मध्य गगन में दुन्दुभि तेरे, यश का करता शब्द अपार।।32।।

पारिजात संतानक आदि, देव गिराते पुष्प अपार।
मन्दानिल सह गन्धोदक की, मन्द वृष्टि होती सुखकार॥
कल्पवृक्ष पूलों की वर्षा, मानों ऐसे लगती है।
दिव्य वचन प्रभु तेरे जैसे, पँक्तिबद्ध हो गिरती है॥33॥
जग की सारी वस्तु से भी, अधिक कान्तिमय हो प्रभु आप।
प्रखर सूर्य से भी प्रकाशमय, भामण्डल का जग में ताप॥
फिर भी त्रिभुवन के प्राणी को, संतापित ना करती है।
निशिकर सम सुन्दर होकर भी, द्युति से रैन को जयती है॥34॥
स्वर्ग मोक्ष का मार्ग बताती, दिव्य ध्वनि तेरी भगवान।
तीन लोक के प्राणी मात्र को, सत्य धर्म का देती ज्ञान॥
जग की सारी भाषाओं में, परिवर्तित हो जाती है।
स्वाभाविक गुण दिव्य ध्वनि की, समझ सभी को आती है॥35॥
नाथ आपका चरण जो विकसित, स्वर्ण कमल सम सुन्दर है।
अग्र भाग में सूर्य प्रभा सम, शोभित नख अति मनहर है॥
चरण कमल अनुपम प्रभुवर जी, जहाँ-जहाँ भी रखते हैं।
सुरगण अति सुन्दर कमलों को, वहाँ-वहाँ ही रचते हैं॥36॥
धर्म देशना समय में जैसा, था प्रभुवर तेरा वैभव।
अन्य देव हरिहर आदिक में, ना होता वैसा वैभव॥
एक सूर्य के किरण पड़त ही, अंधकार का होता नाश।
नक्षत्रों की काँति से, क्या हो सकता वैसा ही प्रकाश॥37॥
युगल गाल के मूल भाग से, झरती है मद जल की धार।
मत्त भ्रमर गुँजन करके तो, गज को करती कुपित अपार॥
ऐरावत क्रोधित होकर के, रूप बनाता अति विकराल।
जो भी तेरे आश्रित रहता, भय भग जाता है तत्काल॥38॥
ऐरावत के गण्डस्थल को, चीरा है जिसने कई बार।
रक्तांजित गज मुक्ताओं से, वसुन्धरा का किया शृंगार॥
ऐसा पंचानन भी उसका, कुछ भी ना कर सकता है।
चरण कमल गिरि का जो मानव, आश्रय लेकर रहता है॥39॥
प्रलय काल की तीव्र पवन से, प्रेरित अग्नि जलती हो।
निखिल विश्व का भक्षण करने, चिनगारी भी निकलती हो॥
शांत पूर्ण हो जाता तत्क्षण, सम्मुख आता दावानल।
नाम आपका सुमिरन करके, डाले जब निर्मल शुभ जल॥40॥

लाल-लाल दो नेत्र निकाले, कोकिल कण्ठ तुल्य काला।
क्रोधित होकर फण फैलाकर, हो गर वह डसने वाला।।
ऐसे सर्प को निर्भय होकर, पैरों से लंघ जाते हैं।
नाम आपका जो नर हिय में, नाग दमनी रख पाते हैं।।41।।
युद्ध क्षेत्र में गज घोड़ों का, भीषण होता कोलाहल।
राजाओं की सेनाओं का, कितना भी हो जाए बल।।
सब सेनाओं का हो जाता, यशोगान से सत्यानाश।
अंधकार नस जाता जैसे, पा सूरज का दिव्य प्रकाश।।42।।
भालों से काटे गज तन को, रक्त नीर झर-झर बहता।
फिर भी योद्धा इसे पार कर, युद्ध भयानक है करता।।
रण के ऐसे भीषण क्षण में, शत्रु पर जय पाता है।
तेरे चरण कमल वन का जो, जग में आश्रय पाता है।।43।।
नीर निधि में क्षोभित प्राणी, नक्र चक्र है अति विकराल।
बड़वानल जब उठे भयंकर, डगमग करती नौका चाल।।
चपल तंरगों के शिखरों या, भंवर बीच हो जिसका यान।
भय तज कर यात्रा वे करते, जो नर करते तेरा ध्यान।।44।।
महा भयंकर रोग जलोदर, शोचनीय प्राणी की दशा।
अति दयामय हुई अवस्था, छोड़ चुका जीवन आशा।।
ऐसा नर तेरे चरणों की, धूलामृत को लगाता है।
रोग रहित हो कामदेव सा, सुन्दर तन हो जाता है।।45।।
लोहे की बेड़ी से जिसके, सकल अंग हैं बँधे हुए।
बड़ी-बड़ी सांकल से जिसकी, जघाएँ है छिले हुए।।
ऐसा मानव भी प्रभु तेरे, नाम जाप को जपता है।
बन्धन भय से मुक्त हुआ वह, प्रमुदित होकर भ्रमता है।।46।।
गज दावानल सर्प जलोदर, सिंह युद्ध या कारागार।
भग जाता क्षण में भय नर का, चाहे वह हो पारावार।।
भीषण से भीषण भय तजकर, सुखपूर्वक वह रहता है।
बुद्धिमान जो निशदिन तेरे, भक्तामर को पढ़ता है।।47।।
हे जिनेन्द्र! तव गुण निकुँज से, गुँथी हुई सुन्दर माला।
अक्षर रूपी कुसुम हैं जिसमें, सुन्दर-सुन्दर रंग वाला।।
जो नर इस स्तुति को अपना, कण्ठा-भरण बनाते हैं।
वे नर मानतुंग सम सुन्दर, मोक्ष लक्ष्मी पाते हैं।।48।।
दोहा- आदिनाथ भगवान की, महिमा अपरम्पार।
'सौरभ सागर' नत हुआ, गा गा मंगलाचार।।

श्री कल्याण मंदिर स्तोत्र (हिन्दी)

पद्यानुवादक : आचार्य श्री 108 सौरभ सागर जी महाराज

कल्याण धाम हो हो उदार तुम, पाप नाश में कारण हो।
भयाक्रान्त जो प्राणी जग में, भय का करते निवारण हो।।
पारावार में डूब रहे जो, जीव मात्र को पोत समान।
श्री जिन पारस नाथ चरण में, बारम्बार विनम्र प्रणाम।।1।।
सागर-सा गुण गौरव तेरा, शब्दों में क्या व्यक्त करें।
बृहस्पति भी हार गया जो, सदा काल तव भक्त रहे।।
कमठासुर के मान भस्म में, अग्नि शिखा सम हो प्रभु आप।
तीर्थ पति की स्तुति करता, विस्मय-पूर्वक हरने पाप।।2।।
हे प्रभु तेरा रूप अनोखा, कैसे करूँ स्वरूप बखान।
मन्द बुद्धि मैं ना कर सकता, तेरी महिमा का गुणगान।।
प्रखर सूर्य की दिव्य प्रभा में, स्वयं रूप न लख पाता।
ऐसा कौशिक शिशु दिनकर का, वर्णन कैसे कर पाता।।3।।
मोह कर्म के नश जाने पर, नर अनुभव सब कर सकता।
शक्ति भले कितनी हो उसकी, गुण वर्णन ना कर सकता।।
प्रलय काल में सागर का जब, पानी बाहर हो जाता।
रत्नों का फिर ढेर दिखें पर, कोई ना है गिन पाता।।4।।
हे प्रभु! मैं हूँ मतिहीन पर, तुम गुण रत्नों के आगार।
फिर भी तेरी स्तुति करने, खड़ा हुआ बुद्धि अनुसार।।
अपनी छोटी भुजा से बालक, सहज भाव दर्शाता है।
देखो कितना बड़ा है सागर, और हाथ फैलाता है।।5।।
बड़े-बड़े योगीजन प्रभुवर, गुण गाने असमर्थ रहे।
हम मूरख हैं ज्ञानहीन प्रभु, तव गुण गौरव कैसे कहें।।
ज्यों पँछी अपनी बोली में, प्रभुवर बातें करते हैं।
त्यों हम बिना विचारे प्रभुवर, भक्ति तेरी करते है।।6।।
हे जिनेन्द्र! तव स्तुति की, महिमा अचिन्त्य कहलाती है।
नाम मात्र ही जीव मात्र को, भव पीड़ा से बचाती है।।
ग्रीष्म काल की तीव्र ताप से, ज्यों नर पीड़ित हो जाते।
पदम सरस की बात कहूँ क्या, सरस पवन सुख पहुँचाते।।7।।

मन मन्दिर के उच्चासन पर, वास करे पारस भगवन।
कर्मों के दृढ़तर बन्धन भी, ढीले पड़ जाते तत्क्षण।।
विषधर जब चन्दन तरुवर पर, लिपट गया हो अति विकराल।
नीलकण्ठ के शब्द मात्र से, बन्धन ढीले हो तत्काल।।8।।
विपदायें लाखों आकर के, कई मुश्किलें खड़ी करें।
तव दर्शन की फूँक मात्र से, तिनकेसी तत्काल उड़ें।।
जैसे गौस्वामी को लखकर, तजते पशुओं को तस्कर।
भय के मारे भग जाते वे, समझे उदित मान दिनकर।।9।।
प्रभुवर जो तुमको हिय धारे, हो जाए भव सागर पार।
इसका मतलब ये ना समझो, भविजन देते तुमको तार।।
चर्म-मसक तिरने का कारण, वायु का है तीव्र संयोग।
मसक तीरे वायु के संगत, भव्य तरे पा तव संयोग।।10।।
हरि-हरादिक महापुरुषों को, किया पराजित काम ने।
उसी काम को क्षण भर में ही, नष्ट किया था आपने।।
रखता है सामर्थ्य वारि ज्यों, नाश करन को दावानल।
उसी वारि को जला डालता, क्रोधित होकर बड़वानल।।11।
जिनकी तुलना अन्य किसी से, कभी नहीं की जा सकती।
ऐसे प्रभु के गुण अनन्त को, जिह्वा कैसे गा सकती।।
हे प्रभु! तुमको जो हिय धारे, अतिशीघ्र तिर जाते हैं।
यह महिमा है विस्मय-कारी, चिन्तन में ना आते हैं।।12।।
क्रोध शत्रु को सबसे पहले, हे प्रभु तुमने नष्ट किया।
एकागारिक कर्म को कहिये, किस विधि तुमने ध्वस्त किया।।
अभ्रशिला संस्मृति में देखो, एकदम शीतल कहलाता।
फिर भी हरे भरे वृक्षों को, क्या तुषार न झुलसाता।।13।।
बड़े-बड़े योगीजन प्रभुवर, ध्यान सदैव लगाते हैं।
हृदय कमल के मध्य भाग में, अन्वेषण कर ध्याते हैं।।
है पवित्र निर्मल सुकान्तिमय, कमल बीज का जन्म स्थान।
कमल कर्णिका हृदय कमल बिन, प्रभु मिले न सकल जहान।।14।।
किस धातु से सोना बनता, पा अग्नि का तीव्र संयोग।
शुद्ध स्वर्ण हो जाता पल में, तज कर कालिमा का योग।।
ऐसे ही संसारी प्राणी, तेरा ध्यान लगाते हैं।
राग द्वेष तन तजकर क्षण में, परमातम पद पाते हैं।।15।।

तुमको बैठा अपने तन में, भविजन ध्यान लगाते हैं।
और उसी तन को क्यों प्रभुवर, आप नष्ट करवाते हैं॥
ऐसा ही स्वभाव जीव का, राग द्वेष से रहित हुआ।
महापुरुषों ने विग्रह करके, काय द्वेष को शमित किया॥16॥
हो अभिन्न तुम मुझसे प्रभुवर, ऐसे बुद्धि से ध्याते।
तज विकार तेरे प्रभाव से, तेरे सम ही बन जाते॥
यह अमृत है यूँ श्रद्धा कर, पानी पीता जो इन्सान।
क्या वह पानी विष विकार को, दूर नहीं करता विद्वान॥17॥
अज्ञान तिमिर से घिरे हुए जो, तुम्हें मानते ब्रह्म महेश।
और तुम्हारी पूजा करते, अन्य मतावलम्बी जिनेश॥
मानों निश्चित प्यारे बन्धु, रोग पीलिया हुआ जिसे।
कई रंगों में श्वेत शंख भी, दिखता है विपरीत उसे॥18॥
धर्म देशना के अवसर पर, जो आ जाता आप समीप।
मानव की तो बात अन्य है, पादप होता शोक रहित॥
दिनपति के प्रगटित होते ही, जीव मात्र जग जाते हैं।
तरुवर भी प्रमुदित हो करके, शीघ्र बोध को पाते हैं॥19।
देवों द्वारा सघन पुष्प की, वर्षा होती चारों ओर।
डंठल नीचे पँखुरी ऊपर, हो जाती है सबही ओर॥
आप निकटता सूचित करती, भव्य जीव को अहो प्रभो।
विज्ञ जनों के विधि के बन्धन, नीचे होते स्वयं विभो॥20॥
गम्भीर हृदय के सागर में प्रभु, दिव्य वचन तव मुखरित हैं।
मानव माने अमृत सम यह, जग जाहिर और प्रगटित है॥
भव्य प्राणी पी करके इसको, आनन्दित हो जाते हैं।
परम सौख्य को पाकर सहसा, अजर अमर हो जाते हैं।21॥
देवों द्वारा ऊपर नीचे, चँवर ढुराये जाते हैं।
नम्री-भूत वे शुद्ध चँवर ही, विनय पाठ सिखलाते हैं॥
प्रभु चरणों में मन वच तन से, जो झुक कर करते वन्दन।
कर्म रहित हो देह नाश कर, पा जाते है मुक्ति सदन॥22॥

उज्ज्वल कंचनमय सिंहासन, पर स्थित है श्यामल तन।
गम्भीर स्वरों में प्यारे तेरे, खिर जाते हैं दिव्य वचन॥
स्वर्ण सुमेरु पर्वत पर जब, होता मेघों का गर्जन।
भव्य मोर हर्षित हो करके, करते उसका अवलोकन॥23॥
दैदीप्यमान प्रभु भामण्डल से, लुप्त छवि सुरतरु पाता।
स्वयं अचेतन होकर भी वह, आप प्रभा को बतलाता॥
राग द्वेष से रहित आप हो, जो भी आप निकट आता।
भव्य अहो! वह वीतराग हो, मोक्ष निकेतन को पाता॥24॥
वायु पथ में देवों द्वारा, होता रहता दुन्दुभि नाद।
हे प्राणी हे प्राणी! करलो, आतम हित तजकर परमाद!
मोक्ष पुरी में जाना चाहो, पार्श्व प्रभु का ले लो नाम।
चिन्तामणि हे विघ्न विनाशी, करते भविजन का कल्याण॥25॥
सारे भू-मण्डल पर प्रभुवर, फैला तेरा दिव्य प्रकाश।
अपने अधिकारों से च्युत हो, तारागण सह आया पास॥
श्वेत छत्र तव शोभा देता, ताराओं से घिरा हुआ।
श्यामाकर त्रय तनु धारण कर, तव सेवा में लगा हुआ॥26॥
सोना चाँदी माणिक आदि से, निर्मित है त्रय कोट महान।
सर्व सम्पदा से परिपूरित, तीन लोक के पिण्ड समान॥
कान्ति कीर्ति व तेज पुँज का, वर्तुल बना अति सुन्दर।
पार्श्व प्रभु का समवशरण ही, भव्यों का लेता मनहर॥27॥
नमन समय में इन्द्रों के, मुकटों को तजते दिव्य सुमन।
सर्वश्रेष्ठ आधार मानकर, लिपटें जाते आप चरण॥
आप समागम को पा करके, ना जाते विद्वान कहीं।
पाद पदम में तेरे रहकर, करते है कल्याण यही॥28॥
जन्म मरण दुख अर्णव से, प्रभु आप विमुख कहलाते हो।
आप शरण में जो आ जाता, उसको पार लगाते हो॥
अग्नि से परिपक्व अधोमुख, घट सिन्धु तिरवाता है।
कर्म विपाक से शून्य आप ये, विस्मय सत दर्शाता है॥29॥
तीन लोक के स्वामी होकर, भी कहलाते हो निर्धन।
है अक्षर स्वभाव आपका, कर न सके तेरा लेखन॥
हे स्वामी अज्ञान-वान भी, कहलाते हो आप यहाँ।
सकल लोक की सकल वस्तुओं, के ज्ञाता हो आप यहाँ॥30॥

पूर्ण रूप से नभ मण्डल को, व्याप्त किया था धूल गिरा।
पूर्व बैर के कारण प्रभु पर, दुष्ट कमठ उपसर्ग किया॥
फिर भी पारस स्वामी तेरा, छाया तक न नष्ट किया॥
किन्तु विफल हो, हो हताश वह, कर्म पांशु से ग्रस्त हुआ॥31॥
महा भयंकर दुस्तर वारि, वर्षा कर उपसर्ग किया।
बादल गरजा विद्युत चमका, अपना पौरुष व्यर्थ किया॥
फिर भी पार्श्व प्रभुवर तेरा, कुछ भी ना वह कर पाया।
अपने ही हाथों से वह तो, अपने ऊपर खड्ग चलाया॥32॥
कमठासुर ने महाभयानक, धारी नर मुण्डन माला।
और गगन से निकल रही थी, नभ चुम्बी अग्नि ज्वाला॥
भंग तपस्या को करने वह, भूत प्रेत बहु दौड़ाया।
न बिगड़ा प्रभु पारस तेरा, स्वयं कर्म से जकड़ाया॥33॥
हे प्रभु तेरे चरण कमल में, विधिवत आते तीनों काल।
प्रमुदित होकर भक्ति करते, तजकर माया का जंजाल॥
धन्य, धन्य वे प्राणी जग में, जो करते पूजा तेरी।
आराधन कर पाद पदम की, मेटे भव भव की फेरी॥34॥
हे मुनीन्द्र! मैं कई जन्मों से, दुख उठाता आया हूँ।
फिर भी कानों से ना प्रभुवर, आप नाम सुन पाया हूँ॥
जो भी ध्यान लगाकर तेरा, मंत्रोच्चारण सुनता है।
विषधर विपदाओं का उसको, कभी नहीं डस सकता है॥35॥
हे नाथ आपके चरण युगल में, कई जन्मों से ना आया।
मन वांछित फल देने वाले, ना तेरी पूजाकर पाया॥
इसलिए जगति प्राणी मम, हिय भेदी करते अपमान।
हे मुनीश! तेरे सम्मुख रह, पा जाऊँ फिर से सम्मान॥36॥
मोह तिमिर से आच्छादित थे, ना खोले मैंने लोचन।
एक बार भी निश्चय-पूर्वक, नहीं किये तेरे दर्शन॥
इसलिए प्रभु मर्म भेदी दुःख, मुझको अति ही सता रहे।
पूर्व जन्म में दर्श किया ना, उसका फल यह बता रहे॥37॥

हे प्रभु तेरे श्री चरणों की, दर्शन पूजन को आया।
नाम आपका सुना बहुत पर, मन से ना तुमको ध्याया।।
दु:खों का मैं पात्र बना हूँ, भाव शून्य करके भक्ति।
बिना भाव के क्रिया कदापि, फल नहीं देती है उक्ति।।38।।
हे नाथ दु:खीजन वत्सल हो, तुम शरणागत के प्रतिपालक।
करुणा की हो पुण्य मूर्ति तुम, इन्द्रियजेता जग नायक।।
हे महेश! भक्तिपूर्वक मैं, आप चरण में झुकता हूँ।
मेरे दु:ख को दूर करो, मैं यही प्रार्थना करता हूँ।।39।।
हे अनन्त गुण धारक भगवन, जगति को करते पावन।
शरणागत के रक्षक हो तुम, कर्म शत्रु का किया हनन।।
तेरे पद पंकज में रहकर, ध्यान हीन फल रहित हुआ।
इसीलिए हे प्रभुवर मैं तो, कर्मों द्वारा दुखित हुआ।।40।।
अखिल विश्व के ज्ञाता दृष्टा, इन्द्रों द्वारा वन्दित हो।
भव तारक हो आप प्रभु और, तीन लोक के स्वामिन हो।।
करुणा सागर आप देव हो, आओ दु:खी को निस्तारों।
महा भयंकर दु:ख अर्णव से, पावन करके पार उतारो।।41।।
हे शरणागत के प्रतिपालक, आप शरण में हूँ आया।
तेरे चरणों की भक्ति से, किञ्चित हमने पुण्य कमाया।।
उसका फल गर देना चाहो, तो इतना-सा फल देना।
इस भव पर भव में केवल, प्रभु मम स्वामी तुम ही रहना।।42।।
हे जिनेन्द्र जो भव्य पुरुष है, सावधान मति से आते।
निर्मल तेरे मुख अम्बुज को, अपना ही वे लक्ष्य बनाते।।
सघन रूप से उठे हुए, रोमांचों से तन व्याप्त किए।
विधि-पूर्वक थुति रचते उनकी, कर्म काटकर आप्त हुए।।43।।
प्राणी मात्र के नयन कमल को, विकसाने वाले चन्द्रेश।
स्वर्ग सम्पदा को पाने वे, सहसा करते स्वर्ग प्रवेश।।
किञ्चित काल वे भोग-भोग कर, नरगति को पा जाते हैं।
अष्ट कर्म को शीघ्र नाशकर, मोक्ष निकेतन पाते हैं।।44।।

दोहा - पार्श्वनाथ भगवान के, गुण हैं अपरम्पार।
'सौरभ सागर' नत हुए, गा गा मंगलाचार।।

पुष्पांजलि क्षिपेत्।

कुछ विशेष जाप

1. ॐ ह्रीं नमो अर्हते रक्ष रक्ष ह्रूँ फट् स्वाहा।
2. ॐ ह्रीं श्रीं अर्हं असिआउसा अप्रतिहत-शक्ति भवतु ह्रीं नमः।
3. ॐ श्रीं ह्रीं अर्हं श्री नमः।
4. ॐ ह्रीं श्रीं पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय सर्वसौख्यं कुरु कुरु नमः।
5. ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं अर्हं असिआउसा अनाहत-विद्यायै णमो अरिहंताणं मम सर्व विघ्न शान्तिं कुरु कुरु स्वाहा।
6. ॐ ह्रीं श्रीं वद् वद् वाग्वादिनी ह्रीं नमः।
7. ॐ ह्रीं अर्हं णमो कोट्टबुद्धिणं।
8. ॐ ह्रीं अर्हं णमो सयं बुद्धाणं।
9. ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं श्रीं क्लीं ब्लूं क्रौं ॐ ह्रीं नमः।
10. ॐ ह्रीं ऐं क्लीं ह्रौं नमः।
11. ॐ ह्रीं अर्हं णमो सव्वो सहिपत्ताणं झ्रों झ्रों नमः।
12. ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ब्लूं ऐं अर्हं मम इष्ट कार्य सिद्धिं कुरु कुरु स्वाहा।
13. ॐ ह्रीं श्रीं मंशापूर्ण महावीराय नमः रक्ष-रक्ष ह्रूं फट् स्वाहा।
14. ॐ ह्रीं णमो भगवदो वड्ढमाणस्स रिसहस्स जस्स चक्कं जलंतं गच्छइ आयासं पायालं लोयाणं भूयाणं जूए वा विवादे वा रणंगणे वा थंभणे वा मोहणे वा सव्वजीवसत्ताणं अपराजिदो भवदु मे रक्ख रक्ख स्वाहा वर्धमान-मन्त्रेण सर्वरक्षा भवतु स्वाहा।

जीवन परिचय

आचार्य श्री 108 सौरभ सागर जी महाराज

जन्म	: कार्तिक कृष्णपक्ष अष्टमी (गुरुवार) 22 अक्टूबर, 1970 जसपुरनगर (छत्तीसगढ़)
बचपन का नाम	: सुरेन्द्र कुमार
पिता का नाम	: श्री श्रीपाल जैन
माता का नाम	: श्रीमती चन्द्रप्रभा जैन
गृहत्याग	: शुक्रवार, 08 अप्रैल, 1983
क्षुल्लक दीक्षा	: शुक्रवार, 17 जनवरी, 1986 छत्तरपुर (म.प्र.)
ऐलक दीक्षा	: सोमवार, 27 जून, 1988 अंदेश्वर पार्श्वनाथ (राज.)
मुनि दीक्षा	: 21 सितम्बर, 1994 इटावा (उत्तर प्रदेश)
दीक्षा गुरु	: पुष्पगिरि प्रणेता गणाचार्य श्री पुष्पदंतसागरजी महाराज
आचार्य पद	: 10 अप्रैल, 2022 (पुष्पगिरि)
राजकीय अतिथि	: झारखंड, छत्तीसगढ़, उत्तर प्रदेश एवं उत्तराखंड

:: विशेष कृति ::

1. सिद्धान्त शतक
2. जैनत्व का बोध
3. धर्म गगन में करें विहार
4. प्रेरक प्रवचन
5. फैशन एक अभिशाप
6. शूलों की सेज
7. दहकते अँगारे
8. आओ लौट चलें
9. पत्थर की मानवाकृति
10. प्रतिमा से प्रतिभा जगे
11. सृजन के द्वार पर
12. हे इन्सान! मत बन तू शैतान
13. जैन शिक्षा भाग-1, 2, 3, 4
14. आराध्य आराधना
15. मंगलं पुष्पदन्ताद्यो
16. जैनाचार संहिता
17. श्रावकाचार संहिता
18. श्रमणाचार संहिता
19. भक्ति-सौरभ
20. अर्हत् चरण सपर्या (जिन-देवार्चना)

विधान

21. श्री भक्तामर स्तोत्र
22. श्री कल्याण मन्दिर
23. स्वयंभू चौबीसी
24. श्री मंशापूर्ण महावीर
25. चौंसठ ऋद्धि सिद्धि
26. आचार्य पुष्पदन्तसागर
27. श्री सम्मेदशिखर
28. माँ जिनवाणी
29. कर्मदहन
30. श्री नवग्रह जिनदेव
31. श्री पुष्पगिरी तीर्थ
32. जैन विधान संग्रह

:: पुण्यार्जक ::

मनोज कुमार जैन, ललित जैन, अतिशय जैन, अर्पण जैन
मै. पारसनाथ पोली बटन, दिल्ली-110031 मो.: 9810056286

मुकेश जैन, सौरभ जैन (सौरभसागर फैब्रिक्स)
बिहारी कॉलोनी, दिल्ली

श्री शिवसेन जैन, पंकज जैन, धीरज जैन
बलबीर नगर, दिल्ली

श्रीमती रेनू जैन श्री संजय जैन
108 "सौरभांचल" पुष्पांजलि, दिल्ली

श्रीमती सुदेश जैन धर्मपत्नी स्व. श्री अनिल कुमार जैन
गौरव जैन, खुशबू जैन
अंसारी रोड़, दरियागंज, दिल्ली

विपुल जैन, पारस जैन (चिलकाना वाले)
आजाद नगर, दिल्ली

श्री सुभाष चन्द जैन, अचिन जैन, अंकित जैन (उमरपुर वाले)
बलबीर नगर, दिल्ली

प्रवीण जैन, दीपक जैन, अक्षत जैन (खेकड़ा वाले)
बलबीर नगर, दिल्ली

पवन जैन, गौरव जैन, निक्षेप जैन (शामली वाले)
महावीर ओवरसीज, दिल्ली

सतीश जैन, देवेश जैन (ककडीपुर वाले)
लक्ष्मी नगर, दिल्ली

उमेश जैन सीमा जैन
कृष्णा नगर, दिल्ली

सचिन जैन, विकास जैन, गौरव जैन
ए-37, सूरजमल विहार, दिल्ली

विकास जैन निधि जैन
कृष्णा नगर, दिल्ली

नीलू जैन, श्रीमती कल्पना जैन, श्री रवि कुमार जैन
नया बाजार, ग्वालियर

प्रदीप कुमार जैन, मंजू जैन, अक्षय जैन, आरुषि जैन, अवन्या जैन
सूर्य नगर, गाजियाबाद

मुकेश जैन, प्रीति जैन, दर्शित जैन, सुन्ह जैन
भोलानाथ नगर, दिल्ली

पवित्र जैन (जय पारस गोल्डटच सेन्टर)
कृष्णा नगर, दिल्ली

श्रीमती मीना जैन धर्मपत्नी स्व. श्री ओमप्रकाश जैन (बट्टनलाल)
श्री मनोज जैन, श्रीमती मंजू जैन, मनीष जैन
(भिण्ड वाले)

चिन्मय जैन सुपुत्र दीपक जैन (चिंकी हौजरी)
ईस्ट आजाद नगर, कृष्णा नगर, दिल्ली

धनकुमार जैन, प्रणय जैन, ध्वनि जैन, सुविज्ञ जैन
बाहुबली एन्कलेव, दिल्ली

राजीव जैन, अमन जैन, यशी एंटरप्राइज (Campio Files)
शंकर नगर, दिल्ली

श्रीमती आभा जैन, श्री नीरज जैन, प्रक्षाल जैन, सिद्धार्थ जैन
हंस वाटिका, रेलवे रोड, शान्ति नगर, मेरठ

अर्चना जैन अनिल जैन
रघुवरपुरा, दिल्ली

जिन पूजन संगठन
मेरठ

मनीष जैन मेघा जैन
शालीमार बाग, दिल्ली

पुनीत जैन अवनी जैन
पीतमपुरा, दिल्ली

रवि जैन सोनिया जैन
79, राम विहार, दिल्ली

अशोक जैन बीना जैन
सी-80, पुष्पांजलि, दिल्ली

जिनेन्द्र जैन शिखा जैन
सी-80, पुष्पांजलि, दिल्ली

ऋषभ जैन कोमल जैन
बी-164, योजना विहार, दिल्ली

राजीव कुमार जैन सुनीता जैन (जनरेटर वाले)
बिहारी कॉलोनी, शाहदरा, दिल्ली

राकेश जैन सुदेश जैन
बिहारी कॉलोनी, शाहदरा, दिल्ली

सौरभांचल प्रकाशन

साहित्य प्रकाशन में ऑन लाईन सहयोग करने के लिए

Scan & Pay

UPI ID : 8448677688@ibl

A/c No. : 45922900000921
A/c Name : SAURBHANCHAL PRAKASHAN
Bank : DCB BANK LIMITED
IFSC Code : DCBL0000459

8448677688

कृपया इस नम्बर पर (व्हाटसअप)
जमा राशि का स्क्रीन शाट भेजकर रसीद प्राप्त करें।

विधान पुस्तक प्राप्ति स्थल

सौरभांचल प्रकाशन

गणधर गारमेन्टस
IX/842, प्रेम गली नं. 3-सी,
मुलतानी मौहल्ला, सुभाष रोड,
गांधी नगर, दिल्ली-110031

मनोज कुमार जैन
E-17/9, कृष्णा नगर,
दिल्ली-110051
मो. : 9810056286

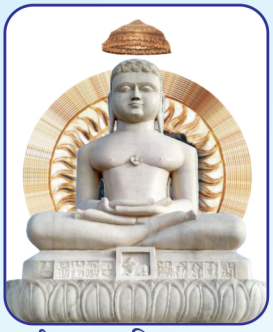

श्री 1008 आदिनाथ भगवान
सौरभांचल, गन्नौर

1200 वर्ष प्राचीन भूगर्भ से प्रगटित
1008 श्री मंशापूर्ण महावीर स्वामी जी
गंगनहर, मुरादनगर

श्री 1008 पद्मप्रभु भगवान
पुष्पगिरी, म. प्र.

श्री 1008 पार्श्वनाथ भगवान ''सौरभाँचल'' (निर्माणाधीन)
श्री सम्मेद शिखर जी मधुबन

सौरभांचल चेरिटिबल हॉस्पिटल
श्री दिगम्बर जैनतीर्थ 'सौरभांचल' गनौर
संस्कार प्रणेता ज्ञानयोगी
आचार्य श्री 108 सौरभसागर जी महाराज